हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (सूचना प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार माध्यम के विशेष संदर्भ में)

Development of Technical Terminology in Hindi : An Analytical Study (with special reference to Information Technology and Mass Media)

कालिकट विश्वविद्यालय की डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी
की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

Thesis submitted to the University of Calicut
for the Degree of 'Doctor of Philosophy' in HINDI

May 2015

निर्देशक :
डॉ. आर. सेतुनाथ
असोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय

प्रस्तुतकर्ता :
बिन्दु. सी.पी.
शोध छात्रा
हिन्दी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय

Supervising Teacher:
Dr. R. Sethunath
Associate Professor

Submitted by:
Bindu. C.P.
Research Scholar

DEPARTMENT OF HINDI
University of Calicut

CERTIFICATE

This is to certify that this Thesis entitled **"Development of Technical Terminology in Hindi : An Analytical Study (with special reference to Information Technology and Mass Media)"** is a bonafide record of research work carried out by **Smt. BINDU.C.P.,** under my guidance and supervision and that no part of this thesis has hitherto been submitted for any Degree, Diploma or other similar title in any other University.

Dr. R. Sethunath
[Research Supervisor]
Associate Professor
Department of Hindi
University of Calicut

C.U. Campus
Date :

DECLARATION

I, **Bindu. C.P.**, do hereby declare that this thesis entitled **"Development of Technical Terminology in Hindi : An Analytical Study (with special reference to Information Technology and Mass Media)"** is a record of bonafide research work carried out by me and this has not previously formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship, Fellowship or other similar Title or Recognition before in any other University or Institution.

This research work was supervised by Dr. R. Sethunath, Associate Professor of the Department of Hindi, University of Calicut.

C.U. Campus

Date:

BINDU. C.P.

Research Scholar

अनुक्रम

प्राक्कथन i - v

पहला अध्याय 16 - 48

पारिभाषिक शब्द : परिभाषा, स्वरूप एवं निर्माण

१.१ पारिभाषिक शब्दावली

१.१.१ पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता

१.१.२ सामान्य और पारिभाषिक शब्द

१.१.३ पारिभाषिक शब्दावली का मूल अर्थ

१.१.४ पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा

१.१.५ पारिभाषिक शब्दावली का स्वरुप

१.१.५.१ पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ

१.१.५.२ पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताएँ

१.१.५.३ पारिभाषिक शब्दावली के निर्धारण पद्धतियाँ

१.१.५.३.१ ग्रहण

१.१.५.३.२ अनुकूलन

१.१.५.३.३ संचयन

१.१.५.३.४ निर्माण

१.१.५.३.४.१ निर्माण की पाँच प्रक्रियाएँ

१.१.६ पारिभाषिक शब्दावली का वर्गीकरण

दूसरा अध्याय 50 - 78

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास : विभिन्न आयाम

२.१ पारिभाषिक शब्दावली का महत्व

२.२ हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास

२.३ पारिभाषिक शब्दावली के विकास के विविध आयाम

२.४ पारिभाषिक शब्दावली कोश

२.५ पारिभाषिक शब्दावली : स्वतंत्रता के पूर्व की विकास यात्रा

२.६ पारिभाषिक शब्दावली : स्वतंत्रता के बाद की विकास यात्रा

२.७ पारिभाषिक शब्दावली के विकास की गति : एक विश्लेषण

२.८ पारिभाषिक शब्दावली : डॉ. रामविलास शर्मा और श्री आर.पी. नायक का मत या घोषणा

२.९ पारिभाषिक शब्दावली के विकास में व्यक्तियों, गैर सरकारी एवं सरकारी संस्थाओं के योगदान

२.९.१ शब्दावली निर्माण के आयामों में व्यक्तियों का योगदान

२.९.१.१ डॉ. रघुवीर का योगदान

२.९.१.२ डॉ. भोलानाथ तिवारी का योगदान

२.९.१.३ श्री हरिबाबू कंसल का योगदान

२.९.२ विकास के आयामों में गैर सरकारी संस्थाएँ

२.९.२.१ काशी नागरी प्रचारिणी सभा

२.९.२.२ केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्

२.९.२.३ भारतीय अनुवाद परिषद्

२.९.३ विकास के आयामों में सरकारी संस्थाएँ

२.९.३.१ केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

२.९.३.२ वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड

२.९.३.३ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

२.९.३.३.१ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली निर्माण के सिद्धांत

तीसरा अध्याय **80 - 108**

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

३.१ हिन्दी में पारिभाषिक शब्द और अनिवार्यता

३.२ पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा : कुछ तथ्य

३.३ हिन्दी पारिभाषिक शब्द : अर्थ, रचनापरक दृष्टिकोण

३.४ पारिभाषिक शब्दावली की अभिव्यक्तियाँ

३.४.१ कामकाजी हिन्दी शब्दावली

३.४.२ बैकिंग क्षेत्र में हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली

३.४.३ विज्ञापन संबन्धी शब्दावली

३.४.४ आकाशवाणी (रेडियो) संबन्धी शब्दावली

३.४.५ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली

३.४.६ हिन्दी में परिवहन शब्दावली

३.४.७ हिन्दी में उपग्रह शब्दावली

३.४.८ हिन्दी में विधि शब्दावली

३.४.९ कंप्यूटर संबन्धी शब्दावली

३.४.१० नियुक्ति एवं स्थापना शब्दावली

३.४.११ शासकीय प्रक्रियाओं की शब्दावली

३.४.१२ हिन्दी में वाणिज्य शब्दावली

३.४.१३ हिन्दी में भौतिकी शब्दावली

३.४.१४ प्रशासनिक हिन्दी में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली

३.५ पारिभाषिक शब्दों में उपयोग की अनिवार्यता

चौथा अध्याय 110 - 146

सूचना प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली - एक विश्लेषण

४.१ सूचना प्रौद्योगिकी

४.१.१ सूचना प्रौद्योगिकी का स्वरुप

४.१.१.१ सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ

४.१.१.२ सूचना प्रौद्योगिकी की परिभाषाएँ

४.१.१.३ सूचना प्रौद्योगिकी से लाभ

४.१.२ सूचना प्रौद्योगिकी एवं हिन्दी

४.१.३ आम जनता के लिए सूचना प्रौद्योगिकी

४.१.४ सूचना प्रौद्योगिकी के विविध आयाम

४.१.५ सूचना प्रौद्योगिकी में प्रयुक्त हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली

४.२ जनसंचार माध्यम

४.२.१ जनसंचार माध्यम का स्वरुप

४.२.१.१ जनसंचार का अर्थ

४.२.१.२ परिभाषाएँ

४.२.२ जनसंचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग

४.२.३ हिन्दी पारिभाषिक शब्द और जनसंचार माध्यम

४.२.४ जनसंचार माध्यम का क्षेत्र

४.२.५ जनसंचार माध्यम और हिन्दी

४.२.६ जनसंचार एवं पारिभाषिक शब्द

४.३ सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यमों के क्षेत्रों में प्रयुक्त होनेवाले हिन्दी पारिभाषिक शब्द : एक विश्लेषण

४.३.१ संस्कृत से आये शब्द

४.३.२ हिन्दी के अपने शब्द

४.३.३ अंग्रेज़ी के अपने शब्द

४.३.४ अन्य प्रकार के शब्द

उपसंहार 148- 150

संदर्भ ग्रंथ सूची 152- 163

प्राक्कथन

भाषा विचार विनिमय का बेजोड साधन है । अभिव्यक्ति की विशिष्टता और उसके उपयोग एवं प्रयोग की दृष्टि से भाषा के रूपों में, उसकी संरचना में विविधता का होना स्वाभाविक है । संरचना की दृष्टि से स्वन, रूप, शब्द, पद, वाक्य आदि भाषा के विभिन्न स्तर होते हैं । इनमें शब्दों का अपना विशेष महत्व है, क्योंकि वही भाषा का अर्थतत्व का संवाहक है । शब्द भी कई प्रकार के होते है – एकार्थी, पर्यायवाची, पारिभाषिक आदि । हर भाषा में पारिभाषिक शब्दों की अपनी अलग पहचान है, क्योंकि ज्ञान विज्ञान के हर क्षेत्र में सुनिश्चित अर्थ एवं पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता है। हर विकसित भाषा के ज्ञान-विज्ञान की प्रत्येक शाखा में पारिभाषिक शब्दावली का होना आवश्यक भी नहीं अनिवार्य भी है ।

भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में, हिन्दी दुनिया की महत्वपूर्ण भाषा मानी जाती है । स्वतंत्रता के बाद हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों का निर्माण एवं विकास त्वरित गति से हो रहा है । ज्ञान विज्ञान की प्रायः सभी शाखाओं में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण अवश्य हुआ है । नये-नये शब्दों को उन शब्दावलियों के साथ जोड़ने का और युगानुरुप प्रचलित शब्दों को संवारने या सुधारने का प्रयास भी चल रहा है ।

“हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (सूचना प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार माध्यम के विशेष संदर्भ में)” शीर्षक प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मैं ने हिन्दी की पारिभाषिक शब्दों का विकास विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है । सूचना प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार माध्यम ज्ञान विज्ञान की अन्य शाखाओं की तुलना में

बिलकुल नई है । अतः मैं ने विशेष अध्ययन के लिए इन दोनों क्षेत्रों को चुन लिया है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैं ने संपूर्ण शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है । शोध प्रबन्ध का पहला अध्याय है – "पारिभाषिक शब्द : परिभाषा, स्वरुप एवं निर्माण ।" प्रस्तुत अध्याय में पारिभाषिक शब्द और उसकी आवश्यकता के बारे में उल्लेख करके सामान्य और पारिभाषिक शब्दों के अन्तर को मैं ने व्यक्त किया है । आगे पारिभाषिक शब्द का स्वरुप अर्थात् उसकी परिभाषा, अर्थ और विशेषता के बारे में भी समझाने का प्रयास किया गया है । पारिभाषिक शब्दों की माँग एवं आवश्यकता आजकल बढ़ रही हैं । इसकी पूर्ति करना भी आवश्यक है । ज्ञान विज्ञान के नये नये शब्दों के निर्धारण अथवा निश्चयन के लिए भाषा विद्धानों ने ग्रहण, अनुकूलन, संचयन और निर्माण आदि चार पद्धतियाँ अपनायी हैं, उक्त पद्धतियों का उल्लेख प्रस्तुत अध्याय में किया है और पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न विद्धानों के द्धारा किए गए वर्गीकरण भी प्रस्तुत अध्याय में दिए गए हैं ।

दूसरा अध्याय है "हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास विभिन्न आयाम ।" प्रस्तुत अध्याय में पारिभाषिक शब्दों का महत्व व्यक्त करते हुए हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली के विकास के विभिन्न आयामों की ओर प्रकाश डाला गया है । 'स्वतंत्रता के पूर्व' और 'स्वतंत्रता के बाद की विकास यात्रा' के शीर्षक से दो भागों में बाँटकर विभिन्न आयामों की चर्चा मैं ने की है । शब्दों के निर्माण संबन्धी विभिन्न विद्धानों या विशेषज्ञों जैसे डॉ. रघुवीर, डॉ. भोलानाथ तिवारी, श्री हरिबाबू कंसल आदि के योगदान का उल्लेख इस अध्याय में हुआ है ।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा, केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद्, भारतीय अनुवाद परिषद, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड, वैज्ञानिक तथा तकनीकी

शब्दावली आयोग आदि प्रमुख संस्थाओं के बारे में प्रस्तुत अध्याय में चर्चा हुई है ।

तीसरा अध्याय है – "हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ।" प्रस्तुत अध्याय में हिन्दी पारिभाषिक शब्दों की अनिवार्यता को सूचित करके ज्ञान-विज्ञान के प्रमुख क्षेत्रों के प्रचलित शब्दों का उल्लेख किया है । इसमें कामकाजी शब्दावली, बैंकिंग क्षेत्र की हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली, विज्ञापन संबन्धी शब्दावली, आकाशवाणी या रेडियो संबन्धी शब्दावली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली, हिन्दी में परिवहन शब्दावली, हिन्दी में उपग्रह शब्दावली, हिन्दी में विधि शब्दावली, कंप्यूटर संबन्धी शब्दावली, नियुक्ति एवं स्थापना शब्दावली, शासकीय प्रक्रियाओं की शब्दावली, हिन्दी में वाणिज्य शब्दावली, हिन्दी में भौतिकी शब्दावली आदि प्रमुख है । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली निर्माण के सिद्धांतों के बारे में यहाँ बताया गया है ।

चौथा अध्याय है – "सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यमों के प्रयुक्त हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली : एक विश्लेषण ।" प्रस्तुत अध्याय में सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यम के क्षेत्रों के पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण किया गया है। शब्दों के अर्थ, संप्रेषण की क्षमता, लोकप्रियता और नए नए शब्दों की आवश्यकता आदि विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया है। वर्तमान जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी की अहम भूमिका है। जनसंचार माध्यम जन जीवन से इतना जुडा है कि उससे अलग होना एकदम कठिन है। दोनों क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण काफी मात्रा में हुआ है । दिन-व-दिन नई दिशा की ओर अग्रसर होनेवाले इन दोनों क्षेत्रों में नए नए पारिभाषिक शब्दों की माँग बढ़ रही है और उसके निर्माण की निरंतर आवश्यकता भी है। आजकल अंग्रेज़ी शब्दों के प्रयोग से इन दोनों क्षेत्रों में अधिकांश काम चल

रहा है ।

विश्लेषण की दृष्टि से दोनों क्षेत्रों के जिन शब्दों का प्रयोग हो रहा है उन्हें स्रोत की दृष्टि से अर्थात् संस्कृत के आये शब्द, हिन्दी के अपने शब्द, अंग्रेज़ी के शब्द, अन्य प्रकार के शब्द – इस प्रकार वर्गीकरण करके अध्ययन किया है ।

पाँचवाँ अध्याय है उपसंहार । उपसंहार के अंतर्गत शोध प्रबन्ध के समस्त अध्ययन का सारांश दिया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का वास्तविक श्रेय कालिकट विश्वविद्यालय के असोसिएट प्रोफेसर डॉ. आर. सेतुनाथ जी को है । आपका विद्वतापूर्ण निर्देशन और स्नेहयुक्त सहयोग, विषय-चयन, लेखन, संशोधन संबन्धित समस्यानुकूल परामर्श तथा कुशल मार्ग दर्शन से ही मैं यह शोध प्रबन्ध पूर्ण कर सका हूँ । मैं अपने श्रद्धेय गुरुवर के प्रति सहृदय आभारी हूँ ।

वर्तमान अध्यक्ष महोदया डॉ. फातिमा जीम जी के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ, जिनका सहयोग भी समय समय पर मुझे मिला है । विभाग के अन्य गुरुजनों के प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने भी मुझे आवश्यक प्रोत्साहन दिया है । विभाग के भूतपूर्व आचार्यों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनका प्रोत्साहन मुझे बराबर मिलता रहा ।

भारत के विभिन्न भागों से प्रकाशित पत्रिकाओं से मुझे कई मूल्यवान सामग्रियाँ मिली हैं। भाषा, संग्रथन, नव निकष, राजभाषा भारती, मंगला, कयर : स्वर्णिम रेशा आदि इनमें शामिल हैं । इनके संपादकों के प्रति मैं आभारी हूँ । कई संपादकों के शब्द कोश से मुझे जानकारी मिली है उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ ।

विविध पुस्तकालयों एवं संस्थाओं से मुझे अपने शोध कार्य में सहायता मिली है। उन संस्थाओं के अधिकारियों एवं पुस्तकालय अध्यक्षों के प्रति विशेषकर कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग पुस्तकालय, सी.एच. मुहम्मद कोया पुस्तकालय, केन्द्रीय साहित्य अकादमी नई दिल्ली, जवहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली, तुलसी सदन (Central Secretariat Library) नई दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के कार्यकर्ताओं के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ ।

अभी मैं सरकारी वोकेषणल हयर सेकंडरी स्कूल, पय्योली (कालिकट) की अध्यापिका हूँ । प्रस्तुत शोधकार्य में यहाँ के प्रधान अध्यापिका श्रीमती के.के. कमला जी तथा अन्य अध्यापक बन्धुओं से जो प्रोत्साहन मिला है उसके लिए उनके प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ ।

इन सबके अलावा जिन मित्रों एवं हितैषियों ने मेरी मदद प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप से की है उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ ।

इस शोध प्रबन्ध को विद्वानों के समक्ष विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत करता हूँ ।

विनम्रतापूर्वक

बिन्दु. सी.पी.

पहला अध्याय

पारिभाषिक शब्द : परिभाषा, स्वरूप एवं निर्माण

१.१ पारिभाषिक शब्दावली

भाषा सार्थक शब्दों की एक सुगठित एवं व्यवस्थित इकाई है । शब्दों के सार्थक प्रयोग पर ही भाषा की अभिव्यक्ति संभव होती है । भाषा की लघुतम स्वतंत्र सार्थक इकाई को शब्द कहते हैं । सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त शब्द सामान्य शब्द कहलाते हैं । ज्ञान विज्ञान के हर क्षेत्रों के विषय विवेचन के लिए सामान्य शब्द अपर्याप्त होती है, इसलिए इन क्षेत्रों के विवेचन विश्लेषण के लिए विशेष शब्द का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है । जो शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त न होकर ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विषय एवं संदर्भ के अनुसार विशिष्ट किन्तु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं । इस प्रकार के विशेष शब्दों के समूह को पारिभाषिक शब्दावली कही जाती है । पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की दिशा में एक शताब्दी पहले ही कोशिश शुरु हो गई थी । किसी भी स्वतंत्र देश की उसकी निजी भाषा के लिए पारिभाषिक शब्दावली महत्वपूर्ण होती है ।

१.१.१ पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता

ज्ञान-विज्ञान की परिधि का निरन्तर विस्तार होता रहता है । इन क्षेत्रों के अनुसंधान के बाद उसकी उपलब्धि को भाषा में व्यक्त करने के लिए प्राप्य शब्दों का संगठन या नवीन शब्दों की रचना करनी पड़ती है । किसी प्राचीन ऋषि ने कहा है – 'शब्दाभावें निरुक्तादय' अर्थात् जब किसी नव वस्तु, घटना या विचार के लिए शब्द का अभाव रहे, तो

निरुक्त पद्धति के आधार पर नवीन शब्द रचना कर ली जानी चाहिए । हर भाषा के लिए पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता है । सूचना प्रौद्योगिकी और जन संचार माध्यमों में पारिभाषिक शब्दावली के अभाव में कार्य चलाना कठिन है । आज तकनीकी संस्थाओं में शब्दावली का निर्माण हो रहा है । यह अच्छी बात ही है । इससे शब्दावली की कमी दूर हो जायेगी । यह ज़रूरी है कि भारतीय भाषाओं की विशेषकर राष्ट्रभाषा हिन्दी की अपनी पारिभाषिक शब्दावली हों, जिसमें हम अपने संचित एवं संकलित ज्ञान को लिपिबद्ध कर सके । डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते हैं कि "विभिन्न शास्त्रीय विषयों की अभिव्यक्ति के लिए पारिभाषिक शब्द बड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं । शास्त्रीय विषयों में यह बहुत आवश्यक होता है कि वक्ता या लेखक जो कहना या लिखना चाहे, श्रोता या पाठक तक वह बात ठीक उसी रुप में बिना अर्थ-विस्तार या अर्थ-संकोच के स्पष्ट एवं असंदिग्ध रूप में पहुँच जाय ।"[1] अर्थात् भाषा की संपन्नता में भी पारिभाषिक शब्दावली विशेष महत्व रखते हैं ।

ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर चिन्तन और अनुसन्धान हो रहा है । इससे नई-नई संकल्पनाएँ विकसित होती है और नए नए सिद्धांत पुष्ट होते हैं । इन संकल्पनाओं और सिद्धांतों की सही अभिव्यक्ति के लिए ऐसी शब्दावलियों की नितान्त आवश्यकता होती है ताकि विषय के विशेषज्ञों को परस्पर विचार विमर्श करने में सुविधा हो । किसी भी विषय की प्रगति और विकास के लिए विषय के अनुरूप शब्दावलियों की आवश्यकता होती है । विशिष्ट शब्दावलियों की आवश्यकता इसलिए भी पड़ती है कि एक ही विषय का अध्ययन करने वाले विभिन्न लोगों के लिए एक ही शब्द के विभिन्न अर्थ न हो जाए । किसी भी भाषा के लिए

---

1. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी – पृ. २१७

पारिभाषिक शब्दावली का बडा महत्व है । डॉ. माई दयाल जैन कहते है कि "किसी भी भाषा के लिए शब्दावली का स्थान पहला है साहित्य का दूसरा । संभवतः इसीलिए वे यह भी स्वीकारते हैं कि हिन्दी और दूसरी भाषाओं में वैज्ञानिक तथा शिल्प विज्ञान संबन्धी उच्च कोटि का साहित्य और उस साहित्य के लिए उपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली तैयार करने का काम अत्यन्त आवश्यक है ।"[1]

१.१.२ सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द

शब्द विज्ञान ने शब्द समूहों के जितने वर्गीकरण किये हैं उनमें प्रयोगवत्ता के आधार पर पारिभाषिक शब्दावली की विशिष्ट अस्मिता है । सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द का यदि विश्लेषण किया जाय तो सामान्य शब्द में यथार्थ वस्तु और उसकी संकल्पना अनिश्चित रहती है । उनमें लचीलापन होता है और संदिग्धता भी हो सकती है । इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, भौगोलिक आदि परिवेशों के कारण कई अर्थ निकाले जाते हैं, किन्तु पारिभाषिक शब्द में संकल्पना और यथार्थ वस्तु निश्चित होती है । उनमें स्पष्टता होती है और वे स्वयं सिद्ध होती हैं । ये अपनी अर्थ-परिधि से न तो अधिक अर्थ व्यक्त करते हैं और न ही कम । इनमें न तो अतिव्याप्ति दोष होता है और न ही अव्याप्ति दोष । इसके अतिरिक्त एक ही विज्ञान या शास्त्र में एक ही संकल्पना या सिद्धांत के लिए एक ही शब्द होता है ।

सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त शब्द सामान्य कहलाते हैं ।[2] ऐसे शब्दों का प्रयोग

---

1. हिन्दी शब्द रचना – डॉ. माई दयाल जैन – पृ. २४१
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. माधव सोनटक्के – पृ. १

समाज में सामान्य व्यवहार विषयक बातों की अभिव्यक्ति के सामान्य रुप से होता है । हर भाषा की सामान्य अभिव्यक्ति के मूल आधार से ही शब्द होते हैं । इनमें भाषा के सारे सर्वनाम तथा सामान्य जीवन से संबन्ध बहुप्रयुक्त संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रिया-विशेषण आदि आते हैं । सामान्यतः कोई व्यक्ति जब कोई भाषा सीखता है तो पहले इन्हीं शब्दों को सीखता है । ऐसे शब्दों का प्रयोग हम अपने सामान्य जीवन को चलाने के लिए करते हैं, किन्तु पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्द को कहते हैं; जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे - रसायन, भौतिकी वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शन, अलंकार शास्त्र, गणित, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र इत्यादि के होते हैं । शास्त्र विशेष में इनका एक विशिष्ट और निश्चित अर्थ होता है, इसीलिए विषय विशेष में इनकी सहायता से निश्चित, स्पष्ट और अपेक्षित अभिव्यक्ति होती है ।[1]

डॉ. दंगल झाल्टे भी कहते हैं कि "सामान्य शब्दों का संबन्ध जीवन और जगत के दैनंदिन या सामान्य व्यवहार तथा बोलचाल आदि से है अर्थात् ऐसे शब्दों का प्रयोग रोजमर्रा के सामान्य व्यवहार विषयक बातों की सहज अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है ।"[2]

उपर्युक्त कथनों के अनुसार व्यक्त है कि एक व्यक्ति अपने नित्य व्यवहार में उपयोग करने वाले शब्द सामान्य शब्द कहते हैं । लेकिन पारिभाषिक शब्दों के अंतर्गत प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर, जन संचार माध्यम, कार्यालय, प्रशासन इत्यादि क्षेत्र आते हैं । पारिभाषिक शब्दावली अधिकतर प्रौद्योगिकी, दूरसंचार क्षेत्रों में आवश्यक हो रहा है ।

---

1. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी – पृ. २१५
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. दंगल झाल्टे – पृ. ७८

१.१.३ पारिभाषिक शब्दावली का मूल अर्थ

डॉ. दंगल झाल्टे[1] के अनुसार पारिभाषिक शब्द अंग्रेज़ी के टेक्निकल शब्द का हिन्दी पर्याय है । मूल अंग्रेज़ी शब्द Technical ग्रीक भाषा के Technikoi अर्थात् कला या कला-विषयक (Of Art) से गृहीन है । Techne का अर्थ है कला तथा शिल्प । ग्रीक भाषा में Tekton शब्द का अर्थ निर्माण करनेवाला (निर्माता) या बढ़ई के रूप में स्वीकारा गया है । लैटिन भाषा में Texere का अर्थ है 'बुनना या बनाना' । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि तकनीकी शब्द वह शब्द है जो किसी निर्मित अथवा खोजी गई वस्तु अथवा विचार को व्यक्त करता हो । अंग्रेज़ी में पारिभाषिक शब्दावली के लिए 'टेकनिकल टर्मिनोलॉजी' (Technical Terminology) शब्द का प्रयोग किया जाता है । इसी तर्क पर कुछ विद्वान इसे तकनीकी शब्दावली कहते हैं । डॉ. सत्यव्रत ने लिखा है – तकनीकी या टेक्नीकल शब्दों के पीछे जो भाव छिपा है, उससे ज्ञात होता है कि ये वे शब्द हैं, जिन्हें केवल भौतिकी, रसायनिक या यांत्रिक विज्ञान-संबन्धी शाखाओं के विशेषज्ञ ही प्रयुक्त करते हैं । परन्तु आजकल इन शब्दों की आवश्यकता व माँग विशेषज्ञों की सीमा तोड़कर साधारण बोलचाल, दैनिक व्यवहार, औपचारिक लिखा-पढ़ी व विचार विनिमय के लिए भी बढ़ती जा रही है । वैज्ञानिक उन्नति के साथ-साथ दैनिक जीवन में नई-नई वस्तुएँ, क्रियाएँ, विचार, भावनाएँ तथा नियमादि का तेज़ी से प्रवेश हो रहा है अत: इसके द्योतक सभी नवीन शब्दों के लिए हिन्दी में 'पारिभाषिक शब्द' स्वीकार किया गया है ।

पारिभाषिक शब्द का शाब्दिक अर्थ है[2] – Of a particular art, science,

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. दंगल झाल्टे – पृ. ७८
2. प्रयोजन मूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे – पृ. १४०

craft or about art अर्थात् विशेष कला का अथवा विज्ञान का अथवा कला के बारे में । इसका प्रयोग skill (विशिष्ट कला) के अर्थ में भी किया जाता है । इस तरह कहा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द वह शब्द है जो किसी विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्र में एक निश्चित निर्धारित अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

१.१.४ पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा

विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दावली को अपने-अपने ढंग से उचित रूप से परिभाषित करने की कोशिश की है । कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ इस प्रकार है – चेम्बर्स टेक्निकल डिक्शनरी में पारिभाषिक शब्द को इस प्रकार रूपायित किया गया है – "Technical terms in symbol adopted or inverted by special and technicial to facilitate the precise recording ideas" अर्थात् पारिभाषिक शब्दावली वस्तुतः विशेषज्ञों एवं तकनीकी-विदों के अपने विशेष विचारों को लिपिबद्ध करने के लिए ग्रहण, अनुकूलन तथा निर्माण के द्वारा तैयार किए जाने वाले प्रतीक है ।[1]

उपर्युक्त परिभाषा से ज्ञात होता है कि पारिभाषिक शब्दावली ग्रहण, अनुकूलन और निर्माण द्वारा संभव होता है । आवश्यकता के अनुसार या शब्दों के अभाव से निर्माण प्रक्रिया द्वारा शब्द बनें । तो शब्दों की कमी नहीं होती है । किसी अन्य भाषा के संपर्क से अनुकूलन, ग्रहण कार्य भी चलते है ।

रेण्डम हाऊस ने पारिभाषिक शब्द की परिभाषा इन शब्दों में दी है – "A word

---

1. Chambers Technical Dictionary -- Page 48

of phrase used in some particular subject as a science or art a technical empression (more fully term of art) "[1]

"विशिष्ट विषय जैसे विज्ञान अथवा कला विषय की तकनीकी अभिव्यक्ति के लिए निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त एक शब्द अधिकांशतः कला का शब्द ।" यहाँ बताया गया है कि जो शब्द विज्ञान व कला के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट या निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं । अर्थात् सामान्य व्यवहार के लिए प्रयुक्त न होते हैं ।

अभिनव पाणिनि डॉ. रघुवीर ने पारिभाषिक शब्द की परिभाषा देते हुए लिखा है – "पारिभाषिक शब्द किसको कहते हैं, जिनकी परिभाषा की गई हो । पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हों । जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती हैं वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे साधारण शब्द होते हैं ।"[2]

स्पष्ट है कि पारिभाषिक शब्द परिभाषित होता है । पारिभाषिक शब्द और साधारण शब्द की भिन्नता यहाँ व्यक्त है । साधारण शब्द के लिए कोई सीमा नहीं होती है । पारिभाषिक शब्द में अर्थ एक ही है साधारण शब्द में अर्थ की एकरूपता का होना अनिवार्य थी । संदर्भ, प्रयोजन आदि के आधार पर अर्थ में भिन्नता हो सकती है ।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने पारिभाषिक शब्द के स्वरुप को इस प्रकार व्यक्त किया है – "पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति आदि

---

1. रण्डम हाऊस : दी रैण्डम हाऊस डिक्शनरी ऑफ दी इंग्लिश लैंगेज – पृ. १५०५
2. कम्प्रेहेंसिव डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश-हिन्दी – डॉ. रघुवीर

विभिन्न विज्ञानों या शास्त्रों के शब्द होते हैं तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट अर्थ में सुनिश्चित रूप परिभाषित होते हैं । अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से परिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते है ।"[1]

तिवारीजी का मत हमें यह समझाते हैं कि पारिभाषिक शब्द विज्ञान या शास्त्रों से मिले-जुले है । अर्थात् साधारण शब्द नहीं है । पारिभाषिक शब्द विज्ञान या शास्त्र के अपने अपने क्षेत्र में सुनिश्चित तथा विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करते हैं । इनका अर्थ और कार्यक्षेत्र सीमित है, इन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं ।

डॉ. माई दयाल जैन के विचार से पारिभाषिक शब्दों से अभिप्राय उन शब्दों से है, जो किसी विशेष विज्ञान, शिल्प विज्ञान, उद्योग, व्यवसाय, घरेलू दस्तकारी, रेल, तार-डाक, राजशासन, न्याय, साहित्य तथा कला आदि में किसी विशेष अर्थ को बनाते है ।[2]

अर्थात् हम दैनिक जीवन में हर विशिष्ट क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते हैं । रसोई घर से लेकर दफतर या कारखाने तक इनका प्रयोग होता है । लेकिन वह शब्द जनसाधारण की भाषा से अलग है ।

डॉ. विनोद गोदरे लिखते हैं कि "किसी विशिष्ट ज्ञान शाखा की विशिष्ट अभिव्यक्ति के लिए सुनिश्चित विशिष्ट अर्थ को ही ध्वनित करता है । इसके अलावा उक्त संदर्भ में उसके लिए न तो किसी प्रकार के अर्थ भेद की गुंजाइश होती है और न किसी प्रकार के अनिश्चित का ही वह वाहक होता है । वह तो बस मीन की आँख के लक्ष्य का वेधी तथा साधक

---

1. पारिभाषिक शब्दावली – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी शब्द रचना – डॉ. माई दयाल जैन – पृ. २०६

होता है ।"[1]

प्रस्तुत कथन से तात्पर्य यह है कि पारिभाषिक शब्द विशिष्ट है । ज्ञान-विज्ञान के विशिष्ट शब्द निश्चित अर्थ प्रदान करते है । साधारण शब्द अनिश्चित और भिन्नार्थ वाले है । पारिभाषिक शब्द में स्थान अर्थ निश्चित होती है ।

डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा का विचार है कि "पारिभाषिक शब्दावली ही वह कच्चा माल है, जिससे कुछ भी बनाया जा सकता है । शिक्षा में, शासन में, विधि में चाहे कहीं भी हिन्दी का प्रयोग करना है, तो उपयुक्त शब्दावली होनी चाहिए और उसके अभाव में न तो कार्यालयों में कार्य हो सकता है न विश्वविद्यालयों में शिक्षा दी जा सकती है और न न्यायालयों में न्याय की व्यवस्था संभव है ।"[2]

पारिभाषिक शब्दों की कमी नहीं होगी, क्योंकि वह बनाये जानेवाली बात है । कामकाजी क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों का उपयोग अधिकतर होता है । इसलिए उपयुक्त या उचित शब्दावली का बनाव होना ज़रूरी है ।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के विचार विश्लेषण के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द विशिष्ट होते है, उन शब्दों के अर्थ सीमा, स्पष्टता, निश्चितार्थ, निश्चितत्व होते हैं, विशिष्ट क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से, सीमित अर्थ से, आसानी से, शुद्धता से प्रयोग में लाये, उसे पारिभाषिक शब्दावली कहलाती है ।

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे – पृ. ४३
2. राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान – डॉ. देवेन्द्र नाथ शर्मा – पृ. ५०

१.१.५ पारिभाषिक शब्दावली का स्वरुप

पारिभाषिक शब्दावली के विविध आयामों के जानने के पहले या विश्लेषण करने के पहले उनके स्वरूप की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है । पारिभाषिक शब्द के स्वरूप का बोध उसके अर्थ, परिभाषा और गुण से होता है । परिभाषा के बारे में हमें कुछ जानकारी मिले हैं । विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ बड़ी विस्तार से ही प्रतिपादित किया जा चुका है । आगे इसके अर्थ और गुण के बारे में अवलोकन करने की आवश्यकता है ।

१.१.५.१ पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ

पारिभाषिक शब्द का अंग्रेज़ी में शब्द-कोशीय अर्थ है - टैक्निकल टेर्म । हर कार्यक्षेत्र में पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त होते हैं । विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि के विशेष अर्थ वाले शब्दों को ही पारिभाषिक शब्दों के अर्थ में लिया जाता है, परन्तु विस्तृत अर्थ में पारिभाषिक शब्द हर कार्यक्षेत्र में प्रयुक्त होते हैं, क्योंकि आधुनिक दृष्टिकोण से सभी प्रकार के अध्ययनों में वैज्ञानिकता या शास्त्रीयता आ गई है और हर कार्यक्षेत्र और अध्ययन क्षेत्र के नाम के साथ शास्त्र या विज्ञान शब्द को प्रत्यय के रूप में जोड़ा जा रहा है । उदा : मनोविज्ञान (Psychology), समाजशास्त्र (Sociology), राजनैतिक विज्ञान (Political Science) आदि ।

अत: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से हर कार्यक्षेत्र में प्रयुक्त शब्दावली को भी एक प्रकार से पारिभाषिक शब्दावली का नाम दिया जा सकता है । अध्ययन क्षेत्र या शिक्षा क्षेत्र या कार्यक्षेत्र (discipline) जो भी हो, अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से पारिभाषिक होने के कारण, ये शब्द पारिभाषिक कहे जाते हैं ।

पारिभाषिक शब्द का अर्थ सुनिश्चित, सुबोध तथा स्पष्ट होना चाहिए । पारिभाषिक शब्दावली में भिन्नार्थ नहीं होगा । अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्द के उसी अर्थ में हिन्दी पारिभाषिक शब्द मिलते हैं । समय-समय पर उसका निर्माण कार्य भी हो रहा है ।

१.१.५.२ पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताएँ

सामान्य भाषा शब्दों की अपेक्षा पारिभाषिक शब्दों की प्रकृति तथा उनका उद्देश्य अलग होता है । इसलिए उनकी अपनी-अपनी अलग-सी विशेषता होती है । यद्यपि हर ज्ञान शाखा तथा हर विषय की अपनी अपनी विशेष पारिभाषिक शब्दावली होती है । परन्तु इन सभी की प्रकृतिगत विशेषताएँ समान होती हैं । प्रोफेसर आगस्टिना सेवारिन (साइंटिफिक एण्ड टेक्निकल ट्रांसलेशन एण्ड अदर अस्पक्टस ऑफ लैंग्वेज प्रोब्लम), डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. सत्यव्रत आदि विद्वानों ने पारिभाषिक शब्दों की सामान्य विशेषताओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला है । उन लोगों ने पारिभाषिक शब्दावली की सामान्य विशेषताओं की ओर अपने-अपने ग्रन्थों में विस्तृत रुप से चर्चा की है । और अन्य लेखकों के लेखन में भी विस्तृत ब्याख्या है । इन सभी के आधार पर पारिभाषिक शब्द की निम्नलिखित सामान्य विशेषताएँ होती है ।

- पारिभाषिक शब्द परिभाषित होता है । हर पारिभाषिक शब्द में किसी विशिष्ट भाव या संकल्पना का समावेश रहता है । इसलिए ऐसे शब्दों को उनकी संकल्पना के अनुसार व्याख्या देकर समझाया जाता है । उदाः साफ्टवेयर, घनत्व, तापीय (थर्मल) गुणांक, गठानांक, व्यतिक्रम, अन्तरिक्ष (स्पेस), वोलट, समीकरण (ईक्वेशन) आदि ।

- पारिभाषिक शब्द की पहली विशेषता उच्चारण की दृष्टि से उसका सरल होना है । प्रयोक्ता के लिए पारिभाषिक शब्द का उच्चारण सरल होना चाहिए ताकि उसे इसका प्रयोग करने

में किसी प्रकार की परेशानी का अनुभव न हो । अगर पारिभाषिक शब्द किसी अन्य भाषा से लिया जाए तो उसे 'अनुकूलन पद्धति' एकेडमी - अकादमी (ध्वनि की दृष्टि से ग्रहण भाषा के अनुकूल करना जैसे एकेडमी - अकादमी) से अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूल ढाल लेना चाहिए ताकि प्रयोक्ता उसका उच्चारण सरलता से कर सके किन्तु सुगमता तथा शुद्धता में प्राथमिकता शुद्धता को दी जानी चाहिए ।

- पारिभाषिक शब्द असामान्य और इस कारण कभी-कभी दुरुह होते हैं । ये सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होते । जैसे दर्शनशास्त्र के अद्वैत, कुंडलिनी, ईडा, पिंगला आदि शब्द, भौतिक विज्ञान के शब्द - अनुदान (रेसोनेन्स), विकिरण (रेडिएशन), जीवविज्ञान के शब्द कोशिका (सेल), आनुवंशिक (जेनिटिक), कम्प्यूटर-विज्ञान के व्यतिक्रम (डिफाल्ट), संकुक (कर्सर), संप्रतीक (कैरक्टर) ।

- पारिभाषिक शब्द की एक और विशेषता उसकी अपर्यायीता है । तात्पर्य यह है कि किसी एक क्षेत्र के विशिष्ट पारिभाषिक शब्द का स्थान अन्य कोई दूसरा शब्द नहीं ले सकता। उदाः अधिसूचना, अनुस्मारक, इश्यू गुणा-सूत्र, दशमलव, द्विपदनाम आदि के पर्यायवाची दूसरे शब्द नहीं दिए जा सकते ।

- पारिभाषिक शब्दों की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उनसे सरलतापूर्वक नए शब्दों को, नए विज्ञान के प्रस्फुटन के साथ ही, निर्माण किया जा सकता है । जैसे 'मानव' से मानवता, मानवीयता, मानविकी, मानकीकरण । 'कलन' से आकलन, परिकलन, समाकलन, 'संकलन' से परांकन, पृष्ठांकन, रेखांकन, सीमांकन और 'रूपान्तरण' से लिप्यंतरण, स्थानान्तरण, भाषान्तरण आदि ।

♦ पारिभाषिक शब्दों की एक विशेषता यह भी है कि ये शब्द विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्ट किन्तु अलग अर्थ में प्रयुक्त होते है । जैसे 'कल्चर' शब्द मानविकी में संस्कृति के अर्थ में प्रयुक्त होता है किन्तु कृषि-विज्ञान में कल्चर में तात्पर्य कृषि से है । उदाहरणार्थ 'अक्वा-कल्चर' (जल-कृषि), 'सीरी कल्चर' (रेशमकीट पालन) आदि । इसी प्रकार, सैन्य विज्ञान में 'सेक्यूरिटी' शब्द का अर्थ है - सुरक्षा किन्तु बैंकिंग में 'सेक्युरिटी' शब्द 'प्रतिभूति' (जमानत) के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

♦ भाषा की सामान्य शब्दावली के समान पारिभाषिक शब्दावली का उद्‌भव और विकास समाज में स्वयं ही नहीं होता, क्योंकि पारिभाषिक शब्दावली कृत्रिम होती है । ग्रहण, अनुकूलन, संचयन और निर्माण इन चार प्रक्रिया द्वारा उसका निर्धारण होता है । सामान्य शब्दों का जनक-निर्धारक समाज होता है, परन्तु इस शब्दावली का निर्धारण भाषा-विशेषज्ञ करते हैं, जो शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया के साथ-साथ विशेष प्रकार के तकनीकी ज्ञात के भी विशेषज्ञ होते हैं । साथ ही इनके निर्माण में उन लोगों का भी योगदान होता है, जो ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में क्रियात्मक या रचनात्मक कार्य करते हैं । कृत्रिम शब्द होने के कारण इनमें वह लचीलापन नहीं होता, जो सामान्य शब्दों में होता है । इनका निर्माण एक विशेष प्रक्रिया के तहत होता है ।[1]

♦ नियतार्थता तथा परस्पर अपवर्जिता पारिभाषिक शब्द की दूसरी विशेषता है अर्थात् पारिभाषिक शब्द का अर्थ सुनिश्चित, नियत, सुबोध तथा स्पष्ट होना चाहिए । उसे अर्थ संकोच अथवा अर्थ विस्तार दोष से मुक्त होना चाहिए । पारिभाषिक शब्द को अपनी अर्थ परिधि से अधिक या कम अर्थ अभिव्यक्त नहीं करना चाहिए ।[2]

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. माधव सोनटक्के
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे

- पारिभाषिक शब्द अल्पाक्षर होना चाहिए । वह शब्द यथासंभव एक ही मूल शब्द से निर्मित होना चाहिए । हर शब्द को स्वतंत्र तथा अलग होना चाहिए ।

- पारिभाषिक शब्दावली में संक्षिप्तता के साथ-साथ सांकेतिकता को भी एक ज़रूरी गुण मानना चाहिए ताकि भाषा के नूतन संकेत वैज्ञानिक प्रगति को रेखांकित कर सकें ।

१.१.५.३ पारिभाषिक शब्दावली के निर्धारण पद्धतियाँ

पारिभाषिक शब्दों की माँग एवं आवश्यकता बढ़ रहने के कारण इसकी पूर्ति करना भी आवश्यक है । ज्ञान विज्ञान के नये नये शब्द के निर्धारण अथवा निश्चयन के लिए भाषा विद्वानों ने चार पद्धतियाँ अपनायी है । वे पद्धतियाँ निम्न-लिखित प्रकार का है –

(१) ग्रहण

(२) अनुकूलन

(३) संचयन

(४) निर्माण

१.१.५.३.१ ग्रहण (Principle of Adaptation)

ग्रहण या Principle of Adaptation, इसके द्वारा पारिभाषिक शब्द ग्रहण किया जाए । अर्थात् अन्य विदेशी-भाषा से गहरा संबन्ध हो, तो पारिभाषिक शब्द का ग्रहण कर लेने का सुझाव है । आज का युग ही तकनीकी तथा वैज्ञानिक का है, इसके लिए अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्दावली को अपनाये बिना काम नहीं चल सकता । क्योंकि तकनीकी और वैज्ञानिक विकास पश्चिमी देशों में हो रहा है । यह स्पष्ट है कि हम विदेशी शब्दों का ग्रहण करें । हिन्दी और भारतीय भाषाओं की पारिभाषिक शब्दावली को शब्द ग्रहण करने पडे हैं, वह शब्द हिन्दी के ही

बने शब्द के रूप में है । अतः यह कहा जा सकता है कि बहुप्रचलित तथा आवश्यक शब्दों के रूप में ही विदेशी भाषा से शब्द ग्रहण किये जाना उचित होगा ।

उदा :- मोटर, टिकट, स्टेशन, पेट्रोल, कार, रेडियो आदि ।

इसे 'उद्धृत शब्दावली'[1] भी कहा जाता है । उक्त कहा गया है कि इस प्रक्रिया के अंतर्गत विशेष रूप से यूरोपीय भाषाओं में प्रचलित पारिभाषिक शब्दावली को ज्यों का त्यों ग्रहण कर लेने का सुझाव है । इसके पक्ष में निम्नलिखित तर्क है –

(१) इससे नई पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के पीछे होनेवाला श्रम, समय तथा संपत्ति का व्यय बच जाएगा ।

(२) अंग्रेज़ी की पारिभाषिक शब्दावली अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली है । अतः इसे अपनाने से वैज्ञानिक, औद्योगिक तथा प्राविधिक क्षेत्रों में समस्त विश्व के सहज ही हमारा संवाद तथा संबन्ध स्थापित हो सकेगा । इससे इन क्षेत्रों में हमारा विकास द्रुततर हो सकेगा ।

इन दो लाभों पर ज़ोर देकर इस देश का एक बहुत बडा पढ़ा-लिखा वर्ग अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के ग्रहण पर ज़ोर देता है । परन्तु गहराई से सोचने पर उनके तर्क बडे निष्प्रभ तथा अज्ञातजन्य दिखाई देते हैं । अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली ग्रहण करने के पूर्व इस अंतर्राष्ट्रीय शब्द समझ लें । विदेश में अंतर्राष्ट्रीय का मतलब उस शब्दावली से है जो यूरोप के कम से कम तीन देशों में प्रचलित हो । वस्तुतः उसे अंतर्राष्ट्रीय न कहकर यूरोपीय शब्दावली कही जानी चाहिए । यही कारण है कि स्वयं वहाँ के विचारकों, वैज्ञानिकों ने इस शब्द प्रयोग

---

1. बंबई विद्यापीठ रजत जयंती ग्रंथ – हरिमोहन राय सक्सेना – पृ. ८९

के खिलाफ आवाज़ बुलन्द की है । 'साइंस न्यूज सर्विस' के बिडबीज़न ऑफ इण्टर लिग्वा के अध्यक्ष के सुझाव है कि "रसायन और आधुनिक विज्ञान की अन्य शाखाओं की पारिभाषिक शब्दावलियों के प्रसंग में हम जिस 'अंतर्राष्ट्रीय' संज्ञा का प्रयोग करते है, उसे बदलकर या तो प्रामाणिक यूरोपीय भाषा कर देना चाहिए या फिर उसका आशय सदैव इसी पर्याय के अनुसार समझा जाना चाहिए ।"[1]

(३) तथाकथित अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को मान्यता प्रदान करवाने के लिए प्रयत्नशील विद्वानों का यह भी मत है कि अन्य अनेक देशों ने इसे स्वीकार कर लिया है, परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि इस पारिभाषिक शब्दावली को स्वीकार करनेवाली भाषाओं में न नये शब्द के निर्माण करने की शक्ति ही है और न इनकी भाषा में विभिन्न अनुशासनों के लिए विभिन्न ठोस एकार्थ विशेष की साधिका पारिभाषिक शब्दावली है । विश्व में संस्कृत, लैटिन, ग्रीक तथा चीनी ये ही चार भाषाएँ पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में पूर्णतया सक्षम है । यही कारण है कि तुर्की अंग्रेज़ी की अन्तर्राष्ट्रीय प्राविधिक शब्दावली स्वीकार कर लेती है किन्तु चीनी भाषा इसकी ओर फटकती भी नहीं है। अतः नवीन पारिभाषिक शब्द संरचना की प्रक्रिया में ग्रहण तत्व के बहाने योरोपीय शब्दावली की अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली के नाम से भारतीय भाषाओं में घुसपैठ अनुचित कही जाएगी । किन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि हम संपूर्णतया विदेशी शब्दों को अस्वीकार कर उनके स्थान पर अपनी भाषा के नये-नये शब्दों का निर्माण करें । जहाँ तक विदेशी शब्दावली में व्यक्ति के नामों के आधार पर बनाये गए शब्द हैं उन्हें स्वीकार कर लेना चाहिए जैसे – भारतीय वैज्ञानिक सत्येन्द्र बोस के नाम पर गढ़ा गया शब्द बोसोन । हमें ऐसे शब्दों को भी स्वीकार कर लेना चाहिए जो एक लंबे अर्से से हमारी भाषा में धुलमिल गए हैं ।

---

1. General of Chemical Education, March 1953

इसी प्रकार सांस्कृतिक आदान-प्रदान, व्यापार अथवा शासन आदि विभिन्न कारणों से जो शब्द हमारी भाषा में चले आये हैं उन्हें भी स्वीकार कर लेना चाहिए, जैसे – पेट्रोल, कार, रेडियो आदि । मगर इस स्वीकार में हमारा भाषा-दारिद्र्य अथवा हीनता प्रकट नहीं होनी चाहिए । इतना अवश्य है कि यदि इन शब्दों के स्थान पर देशी पर्याय उपलब्ध व प्रचलित हो तो उन्हें विदेशी शब्दों की तुलन में अंगीकार करना चाहिए ।[1]

१.१.५.३.२ अनुकूलन (Adaptation)

अनुकूलन या Adaptation, विदेशी भाषा को अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूलन रुप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है अनुकूलन । अर्थात्, जब विदेशी शब्दावली को अपनी भाषा की ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणात्मक विशेषताओं के अनुकूल परिवर्तित कर अपनी भाषा में शामिल कर लिया जाता है तब, इस प्रक्रिया को 'अनूकूलन' कहते है । यह प्रक्रिया दो प्रकार से संपन्न की जाती है । पहली किसी शब्द की विदेशी ध्वनि को अपनी भाषा की ध्वनि पद्धति में ढाल लेना, जैसे – विदेशी एंजिन भारतीय इंजन हो गया । इसे दो भाषाओं का समासीकरण अथवा संधीकरण भी कहते है । इसमें विदेशी शब्द को नाम धातु मानकर अपने व्याकरण के सहयोग से उसे नया रुप प्रदान किया जाता है । जैसे Appelate से अपीलीय ।

ध्वन्यानुकूलन के कुछ उदा :-

Technique से तकनीकी

Academy से अकादमी

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे – पृ. १४८

Chaina से चीन

Classical – क्लॉसिकल

Bank – बैंक

January – जानवरी आदि ।

शब्दानुकूलन के कुछ उदा :-

Voltage – वोलटता

Carbonisation – कार्बनीकरण

अनुकूल में अंतर्राष्ट्रीय या विदेशी शब्दों यथा कथित स्वीकारा नहीं जा सकता, अर्थात् उन्हें अनुकूलन करके बनाया जाता है । अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को थोडा परिवर्तन करके (जो ध्वन्यानुकूलन हों, या शब्दानुकूलन हों) अनुकूलन बनाने की प्रयास सराहनीय है । वह बिलकुल एक सृजनात्मक प्रक्रिया है, यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय शब्द का भारतीकरण कर रहा है । उपर्युक्त उदाहरण सरलीकृत अनुकूल को व्यक्त करते हैं ।

१.१.५.३.३ संचयन

पारिभाषिक शब्दावली निश्चयन की तीसरी प्रक्रिया 'संचयन' कहलाती है । इसके अंतर्गत भारतीय भाषाओं, उपभाषाओं तथा बोलियों के उपयुक्त अछूत शब्दों का पारिभाषिक रूप में संचय व प्रयोग किया जाना चाहिए । यानी अपनी भाषा के प्रचलित शब्दों में से उपयुक्त शब्दों को पारिभाषिक शब्दों के रूप में अपनाकर उसके चयन तथा प्रयोग की प्रक्रिया को 'संचयन' कहलायी जाती है ।

१.१.५.३.४ निर्माण

पारिभाषिक शब्दावली निर्धारण की यह सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है । धातू,

प्रत्यय, उपसर्ग, संस्कृत, संधि द्वारा जो नये-नये शब्द की रचना करना निर्माण प्रक्रिया कहलाती है । छह सौ ज्ञान-विज्ञान शाखाओं के लाखों में प्रयुक्त मौलिक तथा व्युत्पादित शब्दों के लिए हिन्दी की अपनी पारिभाषिक शब्दावली आवश्यक है क्योंकि विदेशी शब्दावली से शब्द-निर्माण की प्रक्रिया बाधित हो जाती है और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पारिभाषिक शब्दावली अपनी भाषा की शब्द संपदा का महत्वपूर्ण हिस्सा होती है तथा उसे भाषा के व्याकरण के अनुकूल ढालना पड़ता है और विदेशी शब्दावली को व्याकरणानुकूल बनाना हमेशा संभव नहीं होता । पारिभाषिक शब्दावली के निर्धारण की पहली तीनों प्रक्रियाएँ सहज है परन्तु उनसे पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती । उसकी पूर्ति निर्माण से ही संभव है । पद्धति निर्माण उतनी सरल नहीं है । यह सिर्फ चीनी, ग्रीक, लैटिन तथा संस्कृत में संभव है । धातु, उपसर्ग एवं प्रत्यय ऐसे महत्वपूर्ण तत्व हैं जिनसे शब्द निर्माण की प्रक्रिया चलती है । इस तरह से जिन शब्दों का निर्माण होता है उसमें से एक तो वे शब्द होते हैं जिनमें पारिभाषिक ध्वनि संकेत होते हैं जिन्हें नाम कहा जाता है और दूसरे शब्द व्यापार या कार्य के प्रतीक होते हैं इन्हें आख्यात (क्रिया) कहा जाता है । पारिभाषिक शब्दावली के लिए हमें उपर्युक्त दोनों प्रकार के शब्दों का निर्माण करना पड़ता है क्योंकि प्रत्येक विज्ञान में तथ्यान्वेषण तथा कार्यानुसंधान की प्रक्रियाएँ होती हैं । प्रत्येक भाषा की मूल धातु में अर्थ का बीज समाया रहता है और जब विज्ञान की नई शोधों, पदार्थ के गुणों और व्यापारों का द्योतन करती हैं तब भाषा अपनी मूल धातु के साथ प्रस्तुत होकर उपसर्गों तथा प्रत्यय के द्वारा उनको उद्घाटित करती है । जैसे वच् धातु में प्रत्यय व उपसर्ग लगा कर बने विभिन्न संज्ञा शब्द ।

प्रत्यय = वचन, वाचा, वाचार

उपसर्ग = प्रवचन, सुवचन, निर्वाचन

आगे और एक उदाहरण देखिए

पत्र	–	letter
विपत्र	–	bill
पत्रकार	–	Reporter

संधि द्वारा –

निदेश + आलय	–	निदेशालय	–	Directorate
राज्य + पाल	–	राज्यपाल	–	Governor
घोषणा + पत्र	–	घोषणापत्र	–	Manifesto
पद + उन्नति	–	पदोन्नति	–	Probation

विख्यात पारिभाषिक शब्द निर्माता डॉ. डी.एस. कोठारी ने पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के तीन बुनियादी सिद्धांत बतलाए हैं – १. उपयोगिता २. सरलता तथा ३. लचकीलापन । जहाँ तक पहले दो सिद्धांतों का प्रश्न है वहाँ मतभेद की गुंजाइश नहीं है परन्तु तीसरा शब्द लचकीलापन का प्रयोग भ्रामक है । अगर इससे उनका तात्पर्य शब्द की नमनीयता तथा विभिन्न संदर्भ में विभिन्न अर्थों का संकेतक होना है तो पारिभाषिक शब्दावली के लिए यह सिद्धांत मारक और घातक है । कारण कि पारिभाषिक शब्दावली की पहली विशेषता उसकी एकार्थता है । मगर अगर नमनीयता क अर्थ नये ज्ञान-विज्ञान के लिए नई अभिव्यक्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करना हो तो यह सिद्धांत भी स्वीकार्य है ।

पारिभाषिक शब्दावली की निर्धारण की पहली तीनों प्रक्रियाएँ सहज हैं, परन्तु उनसे पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती । उनकी पूर्ति निर्माण से ही संभव है । इस निर्माण के संदर्भ में सुप्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. रघुवीर ने कुछ मुख्य सिद्धांत बताए हैं ।

(१) प्रत्येक मुख्य अर्थ के लिए एक पृथक शब्द हो । जैसे –

रिपोर्टिंग (Reporting) के लिए प्रतिवेदन

पावर (Power) के लिए शक्ति

फोर्स (Force) के लिए बल

एनर्जी (Energy) के लिए ऊर्जा

(२) प्रत्येक शब्द अन्वर्थ अर्थात् अर्थानुगामी हो । जैसे स्थानान्तरण की माप या स्पीड के लिए 'गति' और स्थानान्तरण की प्रवृत्ति के लिए 'चाल' ।

(३) असमस्त पदों का पर्यायवाची शब्द चार अक्षरों से अधिक नहीं होना चाहिए । जैसे – अथारिटी के लिए 'प्राधिकार', Phosphorus के लिए 'भास्वर' ।

(४) योरोपीय शब्दों के विभिन्न प्रतीकों एवं संक्षेपों के पर्यायवाची भारतीय शब्द भी विभिन्न प्रतीकों एवं संक्षेपवाले हों । गणित, रसायन एवं भौतिक शास्त्र में आनेवाले संक्षेप एवं प्रतीक (चिह्न) ।

(५) योरोपीय असमस्त पदों का अनुवाद असमस्त पदों से किया जाए, अर्थात् पर्यायवाची शब्द व्याख्यात्मक न हो, जैसे सिग्नल के लिए अग्निरथगमनागम शब्द व्याख्यात्मक एवं दुरूह है । उसके बदल संकेतक शब्द सही एवं सटीक लगता है ।

(६) यथासंभव उपसर्गों का अनुवाद उपसर्गों से और प्रत्ययों का अनुवाद प्रत्ययों से करना है । जैसे –

१. प्रत्यय Phosph से ate, ated, atic, atcle, ation, ide, in, inic, onic आदि प्रत्यय एक-एक, दो-दो बार लगते है । Phosph का अनुवाद भास्व, ate का ईय, Phosphate - भास्वीय।

Ated - इयित = Phosphatid भास्वीयि

Atic - इयिक	=	Phosphatic	भास्वीयि
Atido - हयेय	=	Phosphation	भास्वीयेय
Ation - हयन	=	Phosphation	भास्वीयेय
Ide - इय	=	Phosphide	भास्विन्
In - इन	=	Phosphin	भास्विन्
Inic - अयिक	=	Phosphinic	भास्वयिक
Onic - आयिक	=	Phosponic	भास्वायिक

२. उपसर्ग Peri के लिए परि

Peri - परि	=	Perimeter	परिमाप
Sub - अनु	=	Subgenus	अनुप्रजाति
Con - सं.	=	Condence	संघनन
Ab - अप	=	Ab-rade	अपघर्षण
Anti - प्रति	=	Antimeric	प्रतिखण्ड
En - सु	=	Eupepsia	सुपचन
Dys - दुस	=	Dyspnea	दुश्श्वसन

(७) यूरोपीय समस्त शब्दों का विश्लेषण द्वारा सार्थक अंगों के अनुवाद से भारतीय शब्दों का निर्माण किया जाना चाहिए । जैसे Centrifugal केन्द्रापग - केन्द्र से अपगमन करनेवाला -

Centre - केन्द्र Fugae - अपग

(८) विदेशी शब्दों के एक शब्द से बने विभिन्न रूप एक ही शब्द से व्युत्पादित किए जाएँ, जैसे –

Law - विधि	Legislate - विधान
Lawful - विधिवत्	Legislative - विधायी
Legal - वैध	Legislator - विधायक
Illegal - अवैध	Legislatable - विधेयक
Lawless - विधिहीन	Legislature - विधायिनी
Lawlessness - विधिहीनता	Legislatorlai - विधायकीय

(९) प्रत्येक शब्द के व्याकरण व अर्थ संबन्धी समस्त या असमस्त सभी पदों का संग्रह करके ही अनुवाद किया जाना चाहिए, जैसे –

१. व्याकरण संबंधी

Acid	=	अम्ल
Acidic	=	अम्लिक
Acidiant	=	अम्लकर
Acidification	=	अम्लन
Acidifier	=	अम्लक

२. अर्थ संबंधी

Right	=	अधिकार
Authority	=	प्राधिकार
Prerogative	=	परमाधिकार
Privilege	=	विशेषाधिकार
Monopoly	=	एकाधिकार

(१०) वास्तविक शब्दों के संक्षिप्तीकरण के साथ नये विचारों के लिए नये प्रत्ययों का निर्माण करना चाहिए । अंग्रेज़ी में रसायन संबन्धी धातुवाची तत्वों के द्योतन के लिए 'uni' प्रत्यय प्रयुक्त होता है और उनके लिए भारतीय 'पारिभाषिक शब्दावली' - निर्माण में 'आतु' प्रत्यय का प्रयोग कर सकते हैं, जैसे –

Alumna - स्फटी

Aluminium - स्फट्यात

(११) नवीन शब्दों के निर्माण से पूर्व हमारी प्राचीन भाषाओं के ग्रंथों में तथा संस्कृत से प्रभावित अन्य देशों की भाषाओं में उपलब्ध शब्दों का अनुसंधान कर लेना चाहिए ।

(१२) प्रांतीय भाषाओं में उपलब्ध शब्द यदि पूर्वोक्त नियमों के आधार पर अधिक उपयुक्त जाँचे तो हिन्दी की अपेक्षा उन्हें प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जैसे 'वायरलेस' को हिन्दी में 'वितन्तु' कहा गया है । तेलुगु में 'वितन्तु' का अर्थ विधवा होता है । 'वायरलेस' को तेलुगू में 'निस्तन्ली' कहा गया है । अतः 'वितन्तु' की जगह 'निस्तन्ली' शब्द को स्वीकार कर लेना अधिक उचित है । तात्पर्य यह है कि ऐसे शब्दों को अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली में स्थान न दिया जाय, तो किसी क्षेत्रीय भाषा में अन्य अर्थ के सूचक हों ।

(१३) अंतिम सिद्धांत यह है कि इस पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग शास्त्रीय स्तर पर हो और जनसामान्य के व्यवहार में प्रयुक्त शब्द साथ-साथ चलते भी रहे तो कोई हानि नहीं है । शास्त्रीय शब्द सदैव जनसाधारण में धीरे-धीरे ही फैलते हैं ।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के ये तेरह मूल सिद्धांत हैं और इस आधार पर

विश्व की प्रत्येक भाषा के शब्दों का भारतीय प्रतिरूप तैयार किया जा सकता है ।[1]

१.१.५.३.४.१ निर्माण की पाँच प्रक्रियाएँ

पूर्वोक्त तेरह मौलिक सिद्धांतों के आधार पर शब्द निर्माण के रूपार्थ निश्चय की पाँच प्रक्रियाएँ स्वीकार की गई हैं –

(१) धातु में प्रत्यय उपसर्ग लगाकर । जैसे –

प्रत्यय	Capacity	धारिता	(धृ + णिनि + ता)
उपसर्ग	Acquisition	अभिग्रहण	(अभि + ग्रह + लणुट्)

(२) दो धातुओं को मिलाकर । जैसे –

Test-flying जाँच-उडान

(३) सामासिक पद बनाकर । जैसे –

Surveying - सर्वेक्षण

Interview - साक्षात्कार

(४) निपात द्वारा या नामधातु बनाकर । जैसे –

Pressurised - दाविता

Oxidization - ओषीकरण

(५) यदृच्छा शब्दों के निर्माण । जैसे –

Roman Effect रॉमन प्रभाव

---

1. बंबई हिन्दी विद्यापीठ रजत जयंती अंक – पृ. १००

इन पाँच प्रक्रियाओं द्वारा पूर्वोक्त तेरह सिद्धान्तों के आधार पर सभी पारिभाषिक शब्दों का भारतीकरण कर लिया जाना चाहिए ।

इन निर्मित शब्दों के लिए एक और सिद्धांत बनाया गया है कि जहाँ प्रत्ययों के आधार पर व्याकरण की दृष्टि से लिंग भेद करना आवश्यक हो उन शब्दों को छोड़कर सभी पारिभाषिक शब्दों को पुल्लिगमान लिया जाना चाहिए ।[1]

१.१.६ पारिभाषिक शब्दावली का वर्गीकरण

पारिभाषिक शब्दावली के वर्गीकरण के लिए विद्वानों ने कई आधार सुझाए हैं । कुछ लोगों ने इस तरह के शब्दों को दो भागों में बाँटा है, तो कुछ ने तीन, तथा कुछ ने पाँच भेद स्वीकार किए हैं । कुछ प्रमुख वर्गीकरणों को नीचे दिया जा रहा है ।

(क) डॉ. राजेन्द्र लाल मित्र का वर्गीकरण :

डॉ. मित्र[2] ने पारिभाषिक शब्दावली के कुल छः भेद किए हैं ।

(१) कभी-कभी पारिभाषिक शब्द के रूप में व्यवहृत होने वाले सामान्य शब्द, जैसे – सिर, पेड, लोहा तथा ज्वर आदि ।

(२) प्रमुख रूप से मानविकी और सामाजिक क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले वे अर्ध पारिभाषिक शब्द, जिनका इस्तेमाल कभी सामान्य शब्द के रूप में होता है तो कभी पारिभाषिक रूप में ।

(३) ऐसे योगिरुढ़ शब्द, जिनका अस्तित्व अब नाममात्र के लिए रह गया है । इस प्रकार के

---

1. भारतीय राष्ट्रभाषा - सीमाएँ तथा समस्याएँ – डॉ. सत्यव्रत – पृ. ११६
2. A scheme for the rendering of European Scientific Terminology in the Vernaculars of India -- Rajendra Lal Mitra -- P. 107, Ed. 1877

शब्द कभी वस्तुओं के गुणों का द्योतन करते थे, जैसे – कुनैन, आक्सीजन इत्यादि ।

(४) वनस्पति विज्ञान तथा प्राणिविज्ञान में प्रयुक्त होने वाले द्विपदीय नाम, जो अब महज इनसे संबंधित 'वंश' और जाति का ही बोध कराते हैं ।

(५) अपना व्युत्पत्तिजनक अर्थ व्यक्त करने वाले तकनीकी शब्द इस श्रेणी में आते हैं, यथा – रवाकरण, अंकुरण आदि तथा

(६) इस अंतिम श्रेणी में वे शब्द आते हैं, जिनका मूल संबंध रसायन शास्त्र या रचना विज्ञान से होता है । इन्हें समस्तपदीय शब्द कहा जाता है । यहाँ एक या दोनों शब्द अपना व्युत्पत्ति परक अर्थ देता है, यथा– सल्फ्यूरिक अम्ल आदि ।

(ख) डॉ. भोलानाथ तिवारी का वर्गीकरण :

डॉ. तिवारी[1] ने पारिभाषिक शब्दावली को पाँच टुकडों में अधोलिखित रूप में बाँटा हैं । वे कहते भी हैं कि किसी भाषा के पारिभाषिक शब्दों को विभिन्न आधारों पर कई वर्गों में बाँटा जा सकता है –

(१) इतिहास के आधार पर –

(क) तत्सम जैसे अणु - molecule,

(ख) तद्भव (जैसे acknowledgement के लिए 'पावती'),

(ग) विदेशी (जैसे मीटर, विटैमिन),

(घ) देशज (जैसे silt के लिए भल) ।

---

1. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी – पृ. २१७-२१८

(२) प्रयोग के आधार पर –

(क) पूर्ण पारिभाषिक – इस वर्ग में वे शब्द आते हैं, जो केवल पारिभाषिक शब्द के रुप में ही विभिन्न शास्त्रों में प्रयुक्त होते हैं, जैसे – भाषा विज्ञान में ध्वनिग्राम, नाट्य शास्त्र में प्रकरी या गणित में दशमलव,

(ख) अर्थ पारिभाषिक या मध्यस्थ – इस वर्ग में वे शब्द आते हैं जो पारिभाषिक अर्थों में भीप्रयुक्त होते हैं तथा सामान्य अर्थ में भी । उदाहरण के लिए – 'अक्षर' । यह शब्द सामान्य भाषा में लिखित वर्ण या letter के लिए आता है, किन्तु भाषा विज्ञान में syllable के लिए । इसी तरह 'असंगति', अलंकार शास्त्र में एक विशिष्ट अलंकार का नाम है, अतः पारिभाषिक है, किन्तु सामान्य बातचीत में भी 'संगति न होने' के अर्थ में इसका प्रयोग होता है । 'आपत्ति' शब्द सामान्य शब्द के रुप में बातचीत में आता है और पारिभाषिक शब्द के रुप में कानून या विधि में,

(ग) सामान्य – उन शब्दों को कहते हैं,जो मूलतः सामान्य भाषा के सामान्य शब्द हैं, किन्तु प्रसंगतः विशिष्ट शास्त्रों या विज्ञानों में पारिभाषिक शब्द का भी अर्थ देते हैं। उदाहरण के लिए पलंग, कुर्सी, सोफा सामान्य शब्द हैं, किन्तु काष्ठकला में ये पारिभाषिक शब्द हैं । इसी तरह 'दाँत' चिकित्सा में पारिभाषिक शब्द है तो सामान्य भाषा में सामान्य शब्द है । 'ध्वनि' व्याकरण और भाषाशास्त्र में पारिभाषिक है, किन्तु मूलतः यह सामान्य भाषिक व्यवहार का सामान्य शब्द है ।

(३) सूक्ष्मता - स्थूलता के आधार पर – इस आधार पर पारिभाषिक शब्दों के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं –

(क) संकल्पना बोधक (Conceptual) पारिभाषिक शब्द – जो विभिन्न प्रकार की संकल्पनाओं को व्यक्त करते हैं, जैसे – गणित (दशमलव, बिन्दु, समीकरण), भौतिक शास्त्र (गीत, अनुवाद ऊर्जा) । दर्शन शास्त्र (मुक्ति, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, सुखवाद), मनोविज्ञान (व्यक्तित्व, हीन ग्रंथि) आदि में प्रयुक्त होने वाले बहुत से पारिभाषिक शब्द,

(ख) वस्तु बोधक (Objective) पारिभाषिक शब्द – जो ठोस चीज़ों को व्यक्त करते हैं, जैसे – रसायन शास्त्र (कैलशियम, सोडियम, कार्बन, मूल तत्वों के नाम, मिश्र तत्वों के नाम), प्राणिशास्त्र (कोशिका, धमनी, जीवद्रव्य) या वनस्पति शास्त्र (जाइलम, फ्लोयम) में प्रयुक्त होने वाले बहुत से शब्द ।

(४) स्रोत के आधार पर – इस आधार पर शब्द मुख्यतः तीन प्रकार के हो सकते हैं ।

(क) भाषा में पहले प्रयुक्त शब्द – इस वर्ग में वे शब्द आते हैं, जो लक्ष्य भाषा में पहले से हों, जैसे - हिन्दी में जीव, चूना, नस, बिजली आदि । ऐसे शब्द शुद्ध पारिभाषिक (जैसे विशेषण) भी हो सकते हैं और ऐसे भी हो सकते हैं, जो मूलतः सामान्य हों, किन्तु शास्त्र विशेष में पारिभाषिक शब्द के रुप में भी प्रयुक्त होते हों, जैसे मुक्ति,

(ख) दूसरी भाषा से गृहित शब्द – ये शब्द भी मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं । एक तो वे प्राय: अपने मूल रुप में ही गृहीत कर लिए गए हों, जैसे – कार्बन, राडार, मीटर, लीटर, कैलशियम और दूसरे वे जो लक्ष्य भाषा की ध्वनि-व्यवस्था या ध्वनि-प्रकृति के अनुरुप अनुकूलित कर लिए गये हों, जैसे – Acdemy का अकादमी या interim का अंतरिम । हिन्दी में गृहीत पारिभाषिक शब्द तथाकथित अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्द, अंग्रज़ी पारिभाषिक शब्द,

संस्कृत पारिभाषिक शब्द या भारतीय भाषाओं एवं बोलियों के पारिभाषिक शब्द हो सकते हैं । हिन्दी की उर्दू शैली अरबी-फारसी से भी ऐसेशब्दों को लेती है ।

(ग) नवनिर्मित शब्द – कभी-कभी पहले वर्ग के अभाव में तथा दूसरे वर्ग के शब्द का किसी कारणवश ग्रहण न कर पाने की स्थिति में, लक्ष्य भाषा के अनुवादक के दो या अधिक शब्द धातु, उपसर्ग, प्रत्यय आदि की सहायता से नए शब्द गढ़ने पड़ते हैं । हिन्दी में विभिन्न विज्ञानों के लिए ऐसे काफी शब्द गढे गए हैं, जैसे – रुपग्राम (Morphene) , मंत्रिमंडल (Cabinet), मंत्रालय (Ministry), निदेशक (Director), कुलसचिव (Registrar), संपादकीय (Editorial) आदि ।

(५) विषय के आधार पर – विषय के आधार पर किसी भाषा के पारिभाषिक शब्दों के उतने भेद किए जा सकते हैं, जितने विशिष्ट विषय हैं, जैसे – रसायन शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली, भाषा-वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली या दर्शन शास्त्रीय पारिभाषिक शब्दावली आदि । वस्तुतः इस अंतिम आधार पर पारिभाषिक शब्दों के कई सौ भेद हो सकते हैं । यों इस प्रसंग में यह भी उल्लेख्र हैं कि बहुत से ऐसे शब्द भी होते हैं, जो एक से अधिक ज्ञानों, विज्ञानों या शासत्रों में प्रयुक्त होते हैं, जैसे – 'धातु' धातू विज्ञान में भी आता है और भाषा विज्ञान में भी ।

(ग) डॉ. गोपालशर्मा का वर्गीकरण :

डॉ. गोपाल शर्मा[1] के अनुसार पारिभाषिक शब्द तीन तरह के होते हैं ।

---

1. समाज के विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन – डॉ. गोपाल शर्मा – पृ. १०

(१) पूर्ण पारिभाषिक

(२) मध्यस्थ

(३) सामान्य

(घ) डॉ. विनोद गोदरे का वर्गीकरण :

डॉ. विनोद गोदरे[1] ने पारिभाषिक शब्दावली को स्थूल से दो वर्गों में बाँटा है –

(१) पूर्ण पारिभषिक शब्दावली – जो विभिन्न अनुसंधानों में ज्ञान, विज्ञान शाखाओं में प्रयुक्त शब्दावली का स्थूल वाचक शब्दावली है ।

(२) अर्द्ध पारिभाषिक शब्दावली – जिसमें सामान्य शब्द संदर्भ विशेष में पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं । चूँकि सामान्यत: ये पारिभषिक शब्द नहीं होते, किन्तु कभी-कभार ही संदर्भ की आवश्यकता से पारिभाषिक बनते हैं अत: इन्हें पारिभाषिकोन्मुख सामान्य शब्द कहा जा सकता है । इन्हें अर्द्ध पारिभाषिक शब्द भी कहा जा सकता है ।

डॉ. दंगल झ़ालटे का वर्गीकरण[2] –

प्रयुक्ति अथवा प्रयोग के आधार पर 'शब्द' के एक ओर तो बहुप्रयुक्त, अल्पप्रयुक्त तथा अप्रयुक्त आदि भेद किए जा सकते हैं, तथा दूसरी ओर सामान्य, अर्ध-पारिभाषिक तथा पारिभाषिक । परन्तु इस संदर्भ में मुख्य: शब्दों के तीन प्रमुख प्रकार या रूप माने जा सकते हैं –

१. सामान्य शब्द

२. अर्धपारिभाषिक शब्द

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. विनोद गोदरे – पृ. १५९
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. दंगल झ़ालटे– पृ. ७७-७९

३. पारिभाषिक शब्द

१. **सामान्य शब्द** – सामान्य शब्दों का सम्बन्ध जीवन और जगत् के दैनंदिन या सामान्य व्यवहार तथा बोलचाल आदि से है । अर्थात् ऐसे शब्दों का प्रयोग रोज़मर्रा के सामान्य व्यवहार विषयक बातों की सहज अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है । प्रत्येक भाषा की सर्वसामान्य अभिव्यंजना के मूलाधार ऐसे सामान्य शब्द ही माने जाते हैं और उनमें संबन्धित भाषा के सर्वनाम तथा सामान्य जीवन व जगत् से सम्बन्धित बहुप्रयुक्त क्रिया, संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया विशेषण आदि का समावेश रहता है । ऐसे सामान्य शब्दों के आधार पर ही कोई व्यक्ति भाषा सीखता है और उनका नित्य प्रति के व्यवहार में उपयोग भी करता है । बच्चा भी जब मातृभाषा सीखता है तब सर्वप्रथम सामान्य शब्दों को ही सीखता है । खाना, पीना, चलना, चाचा, माँ, पिता, आना, जाना, ठंडा, गरम, रोटी, पानी, कलम, मेज़, कुर्सी जैसे शब्द सामान्य शब्द की श्रेणी में आयेंगे। बोलचाल, वार्तालाप या संवाद तथा ललित साहित्य आदि में ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है । सरलता, भावुकता, लक्षणा-व्यंजनाश्रितता तथा सहजता आदि गुण सामान्य शब्दों में देखे जा सकते हैं । सामान्य शब्द पारिभाषिक शब्द के रूप में कभी प्रयोग में नहीं आते ।

२. **अर्धपारिभाषिक शब्द** – सामान्य शब्दों के अलावा कुछ ऐसे शब्द हैं जो सामान्य तथा पारिभाषिक दोनों रूपों में प्रयोग में लाये जाते हैं । अर्थात् कुछ ऐसे शब्द होते हैं जिनका प्रयोग स्थिति, विषय-वस्तु तथा संदर्भ के अनुसार कभी तो सामान्य शब्दों के रूप में होता है, और कभी पारिभाषिक शब्दों के रूप में ।

सामान्य शब्द को आसानी से पहचाना जा सकता है किन्तु अर्ध-पारिभाषिक शब्द को उसकी विशिष्टताओं तथा विशेष ज्ञान की स्पष्टताओं के द्वारा पहचाना जा सकता है । माया, विपदा, वेदना, क्रिया, सृजन, आपत्ति, रस, अर्थ आदि ऐसे अनेक शब्द हैं जो अर्ध-

पारिभाषिक शब्द-वर्ग में आते हैं । विश्व की भाषाओं में इस प्रकार के शब्दों की संख्या काफी मात्रा में विद्यमान रहती है ।

३. **पारिभाषिक शब्द** – पारिभाषिक शब्द को 'तकनीकी शब्द' भी कहा जाता है । वस्तुतः 'टेक्निकल टर्मिनालॉजी' के पर्याय के रूप में हिन्दी में 'पारिभाषिक शब्दावली' अथवा 'तकनीकी शब्दावली' का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है । विख्यात कोशकार डॉ. रघुवीर ने 'कम्प्रेहेन्सिव डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश-हिन्दी' में पारिभाषिक शब्द की व्याख्या देते हुए लिखा है – "पारिभाषिक शब्द किसको कहते है, जिसकी परिभाषा की गई । पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हों । जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती वे साधारण शब्द होते हैं ।" पारिभाषिक शब्दों का सम्बन्ध ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से है और उनकी परिधि निश्चित अर्थात् परिभाषित (Defined) रहती है तथा विषय-पल्लवन की प्रक्रिया में इनका विशिष्ट स्थान रहता है । ज्ञान विशेष में इन शब्दों का अर्थ होता है । अतः विषय-विशेष में इन शब्दों की सहायता से स्पष्ट तथा एकार्थक अभिव्यक्ति संभव होती है । अधिकांश पारिभाषिक शब्द अर्थ-संकोच से बनाये जाते है जो जटिल विचारों को सांकेतिक रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं । विभिन्न प्रकार के विज्ञानी शास्त्रीय सिद्धान्तों का निरूपण करते हैं जिन्हें सर्वसामान्य बोलचाल की भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता । फलतः इस प्रकार की शास्त्रीय सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति हेतु विशिष्ट 'मानक' (Standard) शब्दों का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है । यही पारिभाषिक शब्द हैं और यहीं से पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है । पारिभाषिक शब्दों के अंतर्गत मानविकी, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कार्यालयी, प्रशासन, अंतरिक्ष, कंप्यूटर तथा दूरसंचार आदि क्षेत्र आते हैं ।

दूसरा अध्याय

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास : विभिन्न आयाम

२.१ पारिभाषिक शब्दावली का महत्व

किसी भी स्वतंत्र देश की उसकी निजी भाषा के लिए पारिभाषिक शब्दावली महत्वपूर्ण है । खासकर भारतवर्ष में बहुसंख्यकों की भाषा हिन्दी के लिए तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है । हमारे देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उदय एवं विकास के साथ उसकी सटीक तथा सार्थक अभिव्यक्ति हेतु हिन्दी के प्रयोजनमूलक के रूप में उसकी तकनीकी शब्दावली की नितान्त ज़रूरत महसूस की गई है । फलतः हिन्दी में विज्ञान, प्रशासन एवं टेक्नोलॉजी से संबन्धित पारिभाषिक शब्दावली का विकास एवं प्रचलन हुआ । इसके कारण हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली कई क्षेत्रों में अनिवार्य तत्व के रूप में बन गया । इस अर्थ में प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रशासन, जनसंचार, कंप्यूटर तथा प्रौद्योगिकी आदि कई क्षेत्रों में प्रयुक्ति के उपकरण के रूप में पारिभाषिक शब्दावली का महत्व बढ़ गया है ।

हिन्दी, सरकार और जनता के बीच एक अत्यंत महत्वपूर्ण कडी है । सरकारी नीतियों, संकल्पों एवं अधिसूचनाओं को आम जनता तक पहूँचने का माध्यम राजभाषा हिन्दी है । सुचारु ढंग से भाषा का उपयोग करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली का महत्व देना ही चाहिए । क्योंकि पारिभाषिक शब्द सरल है । साथ ही साथ पारिभाषिक शब्द का अर्थ सुनिश्चित, नियत, सुबोध तथा स्पष्ट भी होता है ।

२.२ हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास

हिन्दी में तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली विगत दो-तीन दशकों से प्रचलित

है । केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति ने सन् १९४० में हुए पाँचवें अधिवेशन में तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दावली पर विचार विमर्श करते हुए सिफारिश की थी कि जहाँ तक संभव हो अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को भारतीय अर्थात् हिन्दी वैज्ञानिक शब्दावली में सम्मिलित कर लेना चाहिए । इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया गया था । तदुपरांत १९४८ में 'अखिल भारतीय शिक्षा परिषद' ने निर्णय लिया कि –

(१) अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाले शब्द, यथासंभव ग्रहण किए जाएँ, किन्तु जो शब्दावली अंतर्राष्ट्रीय नहीं है, उनके लिए भारतीय भाषाओं के शब्द अपनाएँ जाएँ ।

(२) सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक शब्दावली का कोश बनाने के लिए केन्द्रीय सरकार एक बोर्ड का गठन करें । उसमें भाषा-शास्त्री तथा वैज्ञानिकों को लिया जाए ।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के बारे में जो अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हुई थीं, उनपर डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग (जो १९४८ में स्थापित हुआ था) ने भी विचार-विमर्श करते हुए निम्नलिखित सिफारिशें की थी –

(१) अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्दावली को अपना लिया जाए, दूसरी भाषाओं की ध्वनि प्रणाली के अनुरूप बना लिया जाए और उनका वर्ग-विन्यास भारतीय लिपियों के ध्वनि-संकेतों के अनुसार निश्चित कर लिया जाए ।

(२) राजभाषा और प्रादेशिक भाषाओं को विकास करने के लिए तत्काल कार्यवाही की जाए ।

इन सिफारिशों तथा किए गए संकल्पों आदि को दृष्टिगत रखते हुए वैज्ञानिक

तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के लिए भारत सरकार ने शिक्षा मंत्रालय के अधीन सन् १९५० में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली बोर्ड के तत्वावधान में तकनीकी शब्दावली के बारे में बहुत ठोस कार्य आरंभ किये गये ।

हिन्दी में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के लिए सन् १९६० का वर्ष एक युग के निर्माण का वर्ष साबित हुआ । १९५५ में गठित 'संसदीय राजभाषा समिति' की सिफारिशों को मानते हुए भारत के राष्ट्रपति ने सन् १९६० में एक आदेश निकाला । इस आदेश के अनुसार भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन १९६१ में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' की स्थापना की गई । इस आयोग को निम्नांकित कार्यभार सौंपा गया –

(अ) राष्ट्रपति के १९६० के आदेश में उल्लिखित सिद्धांतों के आधार पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में तब तक किए गए कार्य का पुनरीक्षण ।

(आ) हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के समेकन और निर्माण से संबन्धित सिद्धांतों का प्रतिपादन ।

(इ) विभिन्न राज्यों की सहमति से या उनके निर्देशों पर राज्यों के विभिन्न अभिकरणों द्वारा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में किए गए कार्यों का समन्वय । संबनिधत अभिकरणों द्वारा प्रस्तुत हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावलियों के प्रयोग-व्यवहार के लिए अनुमोदन ।

(ई) आयोग द्वारा निर्मित या अनुमोदित शब्दावली के आधार पर मानक पाठ्यपुस्तकों का लेखन, वैज्ञानिक एवं तकनीकी कोशों का संकलन तथा विदेशी भाषाओं में उपलब्ध वैज्ञानिक पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद ।

इन उद्देश्यों की पूर्ति में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग अत्यन्त सफल रहा है । इस आयोग में विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं के भाषाविदों के अतिरिक्त लब्धप्रतिष्ठ विद्वान, यूरोपीय भाषाओं के भाषा, भाषी, प्राध्यापक आदि सम्मिलित किये गये थे । हिन्दी मानक वर्तनी आदि के साथ पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दावली के भाषा वैज्ञानिक स्वरुप पर विचार-विमर्श करने के लिए अलग संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया था । हिन्दी भाषा की प्रारंभिक स्थिति को देखते हुए यह कार्य अत्यन्त जटिल और कठिन था, परन्तु आयोग ने पूरी कर्तव्य-निष्ठा का परिचय देते हुए उसे सफलतापूर्वक किया ।

अब तक भौतिकी, प्राणि-विज्ञान, गणित, भूगोल, भूविज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, अनुप्रयुक्त विज्ञान, मानविकी, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाजविज्ञान आदि के साथ प्रशासनिक एवं विभागीय शब्दावलियों का निर्माण एवं प्रकाशन इस आयोग के द्वारा किया गया है । इसके अलावा विविध विषयों से संबन्धित बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह के अनेक खण्डों में प्रकाशित किया गया है ।

२.३ पारिभाषिक शब्दावली के विकास के विभिन्न आयाम

पारिभाषिक शब्दावली का विकास एक महत्वपूर्ण बात ही है । अब सभी क्षेत्रों में वह शब्द लागू किया जा रहा है । स्थूल और सूक्ष्म, स्पष्ट और व्यक्त रूप से शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है । अब पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग प्रचलित है । उसकी विकास यात्रा पहले से अब तक गंभीर से ही चलता है । इस तरह के विभिन्न आयामों पर गुज़रना ही मनोरंजन की बात है । इसके लिए दो तरह की शब्दों के बारे में भी जानकारी ज़रुरी है ।

प्रत्येक विशिष्ट भाषा में दो तरह के शब्द होते हैं एक तो सामान्य शब्द और

दूसरे तो पारिभाषिक शब्द । पारिभाषिक शब्द के लिए निश्चित, सरल और व्यक्त परिभाषा होती है, लेकिन कुछ शब्द ऐसे होते है, जो सामान्य शब्द के रूप में भी और पारिभाषिक शब्द के रूप में भी प्रयोग करते है । सामान्य शब्द जिनका प्रयोग समाज में सामान्य व्यवहार-विषयक बातों की अभिव्यक्ति के लिए होता है तो पारिभाषिक शब्द जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों जैसे - रसायन, भौतिकी, गणित, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान आदि के होते है । सामान्य और पारिभाषिक शब्द दोनों में प्रयुक्त कुछ शब्द हैं – अधिकारी - Officer, पत्र -letter, आवेदन - Application, नियम -rule, नाम - name, व्यय - expenditure, विकास - development, भाग - part, सेवा - service आदि ।

२.४ पारिभाषिक शब्दावली कोश

पारिभाषिक शब्दों के विकास के अंतर्गत पारिभाषिक शब्द कोशों की प्रभाव काफी प्रधान होती है । इसके लिए कोश परंपरा के बारे में भी जानना ज़रूरी है । डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्द में कहे तो हिन्दी के कोशों की परंपरा तो काफी प्राचीन है । 'ख़ालिक बारी' को यदि अमीर खुसरो की कृति मान लें तो हिन्दी कोशों की शुरुआत १४वीं सदी से मानी जा सकती है, किन्तु हिन्दी के पारिभाषिक कोशों की परंपरा काफी बाद की है । यों तो मध्यकाल में सर्वप्रथम शिवाजी ने रघुनाथ पंत से राजकाज विषयक पारिभाषिक शब्दों का 'राजकोश' नाम का एक कोश बनवाया था, जिसमें लगभग डेढ़ हज़ार शब्द थे, किन्तु उसे मात्र हिन्दी कोश नहीं कहा जा सकता । हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों की समस्या की ओर ध्यान १८०० के आसपास गया । १८०९ ई. में अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद करने के लिए इंग्लैंड में एक 'ट्रांसलेशन सोसायटी' स्थापित हुई थी । उसने कुछ काम भी किया, किन्तु वह विशेष आगे न

बढ़ सका । इस दिशा में प्रथम नाम रोबक का लिया जा सकता है जिन्होंने १८११ में नौ-विज्ञान के पारिभाषिक शब्दों का एक अंग्रेज़ी - हिन्दी कोश (An English and Hindustanee Naval Dictionary of Technical terms and Sea phrases) प्रकाशित किया । आगे चलकर १८४३ ई. के लगभग डॉ. बैलनटाइन ने भारतीय भाषाओं के लिए वैज्ञानिक शब्दावली की समस्या पर गहराई से विचार किया । वे भारतीय शब्दावली के पक्षपाती थे । उन्होंने रसायन-शास्त्र के एक संदर्भ ग्रंथ का हिन्दी में अनुवाद करने के लिए अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्दावली की समानार्थी हिन्दी शब्दावली संस्कृत का आधार लेते हुए बनाई तथा अनुवाद में उसी का प्रयोग किया ।[1]

२.५ पारिभाषिक शब्दावली - स्वतंत्रता के पूर्व की विकास यात्रा

पारिभाषिक शब्दावली का विकास स्वतंत्रता के पूर्व ही शुरु हुई थी, लेकिन इनके विकास क्रमों के आयाम निर्णय करना उतना आसान कार्य नहीं होगा । फिर भी इन आयामों पर गुज़रना रोचक बात है । कहते है कि १८०९ ई. में इंग्लैण्ड में हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली से संबन्धित ‘ट्रान्सलेशन सोसाइटी’ (Translation Society) द्वारा एक छोटे से प्रयास का पता चलता है । भारत पर छत्रपति शिवाजी की प्रेरणा से ‘राजकोश’ ग्रंथ में १५०० पारिभाषिक शब्दावली बनाकर इनका बुनियाद स्थापित किया । फोर्ट विलियम कॉलेज के मुंशी लल्लू लाल जी १८६७ ई. में ३५०० से ऊपर हिन्दी शब्दों की सूची बनायी थी । डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. माधव सोनटक्के, डॉ. बलराज सिरोही आदि लोगों ने भी स्वतंत्रता के पूर्व पारिभाषिक शब्दावली के लिए कुछ काम किये । गुलामी भारत में ही हिन्दी-उर्दु के साधारण जानकारी के लिए सन् १८७९ ई. में एक महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्द संग्रह सामने आया ।

---

1. भाषा - मार्च-जून १९८३

हिन्दी भाषा को पारिभाषिक शब्दावली की देन में, हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों का योगदान मुगलों के ज़माने से ही रहा था । सन् १८९८ ई. में नागरी प्रचारिणी सभा काशी में महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी, सरस्वती के पहले संपादक और पारिभाषिक शब्दावली कोश तैयार करने वाले बाबु श्यामसुन्दर दास, गंगानाथ झा, लाला खुशी राम, बाबू भगवती सहाय, पंडित विनायक राव, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि के सहयोग से अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्दों के पर्याय बनाने का कार्य संपन्न हुआ । डॉ. शिवगोपाल मिश्र के अनुसार "सरस्वती और उसके बाद विशाल भारत, माधुरी, सुधा तथा वीणा जैसी शुद्ध साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकों की व्यापक दृष्टि तथा समाज में विज्ञान की आवश्यकता की स्वीकृति का ही यह परिणाम था कि इन पत्रिकाओं में इस काल के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारों ने भी विज्ञान पर लेखनी चलाई ।"[1] चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, लक्ष्मीधर वाजपेयी, लल्ली प्रसाद पाण्डेय, रामदहिन मिश्र जैसेसाहित्यकारों ने भी विज्ञान विषयों पर लेख लिखे । विशाल भारत हिन्दी अँचल से दूर कलकत्ता से प्रकाशित होनेवाली मासिक पत्रिका थी, जिसके संपादक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी थे । वे भी विज्ञान लिखनेवालों को लगातार प्रश्रय देते रहे । उपेन्द्रनाथ अश्क तथा पंडित राहुल सांकृत्यायन ने भी विज्ञान पर लेख लिखे । इसी प्रकार लखनऊ से प्रकाशित माधुरी में मिश्रबन्धु तथा सुधा में भी रामशर्मा, चतुरसेन शास्त्री, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला आदि ने भी वैज्ञानिक निबन्ध लिखे । वीणा (इन्दौर) के अतिरिक्त हिन्दी, प्रदीप, मर्यादा, चाँद, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, हिन्दुस्तानी सम्मेलन पत्रिका में वैज्ञानिक लेख छपते रहे । गणना करने पर १९०० से १९५० की अवधि में सरस्वती में कुल २२९, विशाल भारत में २०४, वीणा में १२९, माधुरी में ४६ और सुधा में ५० लेख छपे, जिनके लेखकों की संख्या क्रमशः १६०,

---

1. अक्षर पर्व - मासिक पत्रिका - पृ. २२

१३८, ७९, ४३ है । इनके अतिरिक्त इसी समय के आसपास हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन और स्फुट रुप में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में यत्र-तत्र सहायता करनेवाले लेखकों में – लक्ष्मीशंकर मिश्र, डॉ. एस.एम. नेहरु, डॉ. वामन राव कोकटनूर, महेश शरणसिन्हा, पाण्डुरंग खान खोजे, दुर्गाशंकर नागर, लज्जाशंकर झा, रमेश बेदी, डॉ. सत्यप्रकाश, महावीर प्रसाद श्रीवास्तव, रामदास गौड़, डॉ. प्रसाद, कुँवर सुरेश सिंह तथा जगन्नाथ थे । स्वतंत्रता के पूर्व पारिभाषिक शब्दावली का विकास बहुत धीमी गति से चल रही थी । सन् १९०१ ई. में विभिन्न प्रान्तों के विद्वानों के सहयोग से 'हिन्दी सांइटिफिक ग्लोसरी' (Hindi Scientific Glossary) नामक एक महत्वपूर्ण पारिभाषिक कोश का निर्माण हुआ । कालान्तर में सन् १९३२ ई. में राजस्थान के अजमरे जनपद निवासी श्री सुखसंपत राय भण्डारी का पारिभाषिक शब्दावली से संबन्धित एक चर्चित ग्रंथ 'ट्वेन्टिएथ सेन्चुरी इंग्लिश-हिन्दी डिक्शनरी' (Twentieth Century English-Hindi Dictionary) का प्रकाशन हुआ । कुछ समय के बाद महापंडित राहुल सांकृत्यायन के प्रधान संपादकत्व में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने १९४६ ई. में प्रशासनिक, संसदीय और विधि संबन्धी तकनीकी शब्दों का एक कोश प्रकाशित किया । लेकिन इसी बीच १९४० ई. के आसपास पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के संदर्भ में सरकारी स्तर पर गोष्ठियों का सिलसिला शुरु हुआ । नई समितियों का गठन हुआ । डॉ.दंगल झालटे कहते हैं कि "केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति ने सन् १९४० ई. में पाँचवें अधिवेशन में तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दावली पर विचार-विमर्श करते हुए सिफारिश की थी कि जहाँ तक संभव हो, अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को भारतीय के (भारतीय अर्थात् हिन्दी) वैज्ञानिक शब्दावली में सम्मिलित कर लेना चाहिए ।"[1] इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया गया था । तदुपरान्त १९४८ ई.

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. दंगल झलटे – पृ. ८५-८६

में 'अखिल भारतीय शिक्षा परिषद्' ने निर्णय लिया कि –

(अ) अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले शब्द, यथासंभव ग्रहण किए जाएँ, किन्तु जो शब्दावली अंतर्राष्ट्रीय नहीं हैं, उनके लिए भारतीय भाषाओं के शब्द अपनाएँ जाएँ ।

(आ) सभी आधुनिक भाषाओं की वैज्ञानिक शब्दावली का कोश बनाने के लिए केन्द्रीय सरकार एक बोर्ड का गठन करे । उसमें भाषाशास्त्री तथा वैज्ञानिकों को लिया जाय । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के बारे में जो अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हुई थी, उनपर डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में 'विश्वविद्यालय आयोग' (जो १९४८ में स्थापित हुआ) ने भी विचार विमर्श करते हुए निम्नलिखित सिफारिशें की थीं –

(क) अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्दावली को अपना लिया जाय, दूसरी भाषाओं से आये हुए शब्द आत्मसात् कर लिये जाये, उन्हें भारतीय भाषाओं को ध्वनि प्रणाली के अनुरुप बना लिया जाय और उनका वर्ग-विन्यास भारतीय लिपियों के ध्वनि संकेतों के अनुसार निश्चित कर लिया जाय,

(ख) राजभाषा और प्रादेशिक भाषाओं को विकसित करने के लिए तत्काल कार्यवाही की जाय । डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार डॉ. शतिस्वरूप भटनागर और डॉ. बीरबल साहनी जैसे कई विशिष्ट वैज्ञानिकों ने भी इस निश्चय का समर्थन किया था ।[1]

२.६ पारिभाषिक शब्दावली - स्वतंत्रता के बाद की विकास यात्रा

१९४७ में देश स्वतंत्र हुआ । स्वतंत्रता के तुरन्त पश्चात पारिभाषिक शब्दावली में कोई बदलाव नहीं आयी । देश में नया राष्ट्रीयता का बोध पैदा हुआ । इसका

1. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी – पृ. २२५

फलस्वरुप देश की अन्य क्षेत्रों में सरकार ने देशी भाषाओं के विकास पर ध्यान देना शुरु किया ।

भारत के स्वतंत्र होने के बाद संविधान में राजभाषा संबन्धी मान्यताओं के प्रावधान होते ही, सरकार ने यह महसूस किया है कि विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा तरह-तरह की शब्दावलियाँ तैयार होकर उनका सहज होने के बदले कृत्रिम होता गया । यही नहीं, विविध क्षेत्रों में प्रकाशित और प्रचलित शब्दावलियों में एकरुपता नहीं रही, जो अर्थ व्यंजना, व्यावहारिक प्रयोग, राष्ट्रीय ग्राह्यता और अनुवाद की दृष्टि से शब्दावली के विकास में तथा राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में घातक बनेगी, भविष्य में यह बुरा प्रभाव होगी । इसलिए सन् १९५२ में भारत सरकार ने अनेक बैठकों और सम्मलनों का आयोजन करने के बाद शब्दावली के निर्माण हेतु सिद्धान्तों और उनके पुनर्विचार व समन्वय पर दृष्टि डाली । इस अवसर पर भारत के संविधान निर्माताओं का ध्यान देश की सभी भाषाओं के विकास की ओर गया । संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा के रुप में मान्यता दी गई और केन्द्रीय सरकार का यह दायित्व सौंप गया कि वह हिन्दी का विकास प्रसार करे एवं उसे समृद्ध करे । तदनुसार भारत सरकार के केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने संविधान के अनुच्छेद ३५१ के अधीन हिन्दी के विकास एवं समृद्धि की अनेक योजनाएँ आरंभ कीं । इन योजनाओं में हिन्दी में तकनीकी शब्दावली के निर्माण का कार्यक्रम भी शामिल किया गया ताकि ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाओं में हिन्दी के माध्यम से अध्ययन एवं अध्यापन हो सके । शब्दावली निर्माण कार्यक्रम को सही दिशा देने के लिए १९५० में शिक्षा सलाहकार की अध्यक्षता में वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड की स्थापना की गई ।[1]

---

1. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग : प्रगति एवं उपलब्धियाँ – मानव संसाधन विकास मंत्रालय

१९५० ई. में केन्द्र सरकार ने शब्दावली निर्माण के तहत जिस 'वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड' की स्थापना की थी, वह शुरू में शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत हिन्दी एकक के अधीन था किन्तु बाद में विभिन्न विषयों की हिन्दी शब्दावली का निर्माण करने के दौरान यह ज्ञात हुआ कि यह काम बहुत ही अधिक विशाल, गहन और बहुआयामी है । इसके पूरे होने में बहुत समय लगेगा और इस कार्य के लिए सभी विषयों के विशेषज्ञों एवं भाषाविदों की आवश्यकता होगी । अतः भारत सरकार ने १ अक्टूबर, १९६१ को प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. डी. एस. कोठारी की अध्यक्षता में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की ताकि शब्दावली निर्माण का यह कार्य सही एवं व्यापक परिप्रेक्ष्य में कार्यान्वित किया जा सके । सच तो यह है कि विभिन्न विषयों की तकनीकी शब्दावली का निर्माण सन् १९५० से ही शिक्षा मंत्रालय के हिन्दी एकक में शुरू हो गया था । मंत्रालय ने विविध विषयों की अनेक आरंभिक और अनंतिम शब्दावलियाँ छापीं और उन्हें निःशुल्क विश्वविद्यालयों आदि के प्राध्यापकों को वितरित किया । इसके बाद अनेक विषयों की अंतिम रूप से स्वीकृत शब्दावली भी अलग अलग छापी गयी । सन् १९६२ ई. में इन सभी शब्दों को एकत्र कर पारिभाषिक शब्द संग्रह के नाम से पहली बार छापा गया । इस शब्द संग्रह में लगभग ९००० शब्द थे । शब्दावली आयोग की स्थापना के बाद इस कार्य में बहुत गति आई । तब से आयोग ने विभिन्न विषयों की शब्दावलियों को अनेक शब्द संग्रहों के रूप में प्रकाशित किया है । अब तक कुल लगभग ३५ शब्द-संग्रह या शब्दावलियाँ छापी जा चुकी हैं, जिनमें कुल-मिलाकर लगभग ५.२५ लाख तकनीकी शब्दों के हिन्दी पर्याय दिए गए हैं । इनमें से कुछ प्रमुख शब्द-संग्रह इस प्रकार है –

(१) बृहत पारिभाषिक शब्द-संग्रह विज्ञान, दो खण्ड (शब्द संख्या १.३० लाख, पृ. २६५८)

(२) बृहत पारिभाषिक शब्द-संग्रह : मानविकी, दो खण्ड (शब्द संख्या ८५००, पृ. १३००)

(३) इंजीनियरी शब्दावली (तीन संग्रह पृ. ९००)

(४) आयुर्विज्ञान शब्दावली (शब्द संख्या ५००   पृ. ७००)

उपर्युक्त शब्दावलियों या शब्द संग्रहों के साथ-साथ आयोग ने कृषि, पशु-चिकित्सा, कंप्यूटर विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान, धातु कर्म, परमाणु ऊर्जा, खनन इंजीनियरी, रसायन इंजीनियरी, इलेक्ट्रौनिकी, लोक प्रशासन आदि विषयों के शब्द-संग्रह भी प्रकाशित किए हैं । इस आयोग ने ज्ञान-विज्ञान की लगभग सभी आधुनिकतम शाखाओं की अधिकांश शब्दावलियों के हिन्दी पर्याय बना दिए हैं ।

जैसे कि ऊपर जिक्र किया गया है हिन्दी भाषा को पारिभाषिक या कामकाजी शब्दावली की देन में हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों का योगदान मुगलों के ज़माने से ही रहा था । स्वतंत्रता के साथ, भारत सरकार द्वारा जब शब्दावली आयोग का गठन किया गया तब साहित्य, विज्ञान, मानविकी आदि कार्यक्षेत्रों के प्रकांड विद्वानों को आयोग के सदस्य बना दिया गया और उनके कर्मनिष्ठ प्रयासों की वजह से ही, अब हिन्दी में कार्यालयीन कामकाज के लिए पारिभाषिक शब्दावली का भण्डार उपलब्ध हुआ है ।

राजभाषा हिन्दी कार्यान्वयन और उसके प्रयोग को एक अभियान के रूप में स्वीकार कर भारत सरकार की ओर से आधारभूत कार्यवाई हुई, उसमें पारिभाषिक या कामकाजी शब्दावली का निर्माण व मुद्रण भी है । भारतीय अनुवाद परिषद् की 'अनुवाद' नामक पत्रिका से पारिभाषिक शब्दावली की जानकारी हमें मिलते हैं । सभी क्षेत्रों में हिन्दी का प्रगामी प्रयोग सुचारु रुप से चलाने के लिए वर्गीकृत शब्दावलियों के निर्माण की आवश्यकता पडी है । तदर्थ वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग एवं विधि शब्दावली आयोग ने

प्रशंसनीय प्रयास किए । नये-नये पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण सदा होता रहा है । शब्दावली की संरचना में समय-समय पर परिवर्तन हो रहे हैं । नये-नये शब्दों का आविष्कार भी होता रहा है । पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग में किसी भी अभिव्यक्ति को अनेक अर्थों में नहीं कर सकते, उससे एक ही अर्थ अपेक्षित है । इसी प्रकार शब्दावली के प्रयोग में भी, अमुक शब्द का प्रयोग अमुक अर्थ में ही होता है और होना भी चाहिए ।

भाषा विकासशील होने के कारण उसका पुराना रूप तो रहता ही है, परन्तु उसमें सुधार होकर उसका संशोधित रूप भी समय-समय पर विकसित होता रहता है और उसी प्रकार उसके शब्द भी । यही परिवर्तन पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न आयामों पर गुज़रते है ।

२.७ पारिभाषिक शब्दावली के विकास की गति : एक विश्लेषण

स्वतंत्रता के पूर्व और स्वतंत्रता के बाद की पारिभाषिक शब्दावली पर परख करते समय हमें ऐसा लगा है कि आज पारिभाषिक शब्दावली तीव्र गति प्राप्त हो चुका है । अभी विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जानेवाले विषयों के साथ-साथ आयोग विभिन्न सरकारी विभागों के अनुरोध पर उन विभागों की तकनीकी शब्दावली के हिन्दी पर्यायों के निर्माण का भी कार्य करता है । विभागीय शब्दावलियों में अब तक डाकतार शब्दावली, रेलवे शब्दावली, रक्षा शब्दावली, वैमानिकी शब्दावली, वानिकी शब्दावली, मौसम विज्ञान शब्दावली, स्वास्थ्य भौतिकी शब्दावली आदि का प्रकाशन किया जा चुका है । दूरसंचार शब्दावली (१५००० शब्द) का निर्माण भी पूरा हो गया है । विभिन्न विभागों से हिन्दी पर्यायों के लिए तकनीकी शब्दों की सूचियाँ आयोग में समय-समय पर प्राप्त होती रहती हैं । प्रारंभ में आयोग ने अलग-अलग विषयों की शब्दावलियों छापी थीं । काफी शब्दों के निर्माण के बाद उन्हें विषय समूहवार बृहत् शब्द-संग्रहों

के रूप में छापा गया । विज्ञान के शब्दों को एक संकलन में और मानविकी के शब्दों को अन्य संकलन में छापा गया । बाद में इंजीनियरी, आयुर्विज्ञान, कृषि, पशु-चिकित्सा, लोक-प्रशासन, रक्षा, वाणिज्य, कम्प्यूटर-विज्ञान, अन्तरिक्ष-विज्ञान, मुद्रण इंजीनियरी, धातु कर्म आदि के विषयों के अनुसार इन्हें अलग-अलग भी छापा गया । वस्तुतः अनेक वैज्ञानिक, लेखक और प्राध्यापक अपने-अपने विषय की अलग-अलग शब्दावली की माँग काफी समय से करते रहे हैं, ताकि वह उन्हें कम मूल्य में ही प्राप्त हो जाय । तदनुसार अब आयोग अपनी एक योजना के अंतर्गत विषयवार शब्दावलियाँ ही परिवर्धित रूप में प्रकाशित कर रहा है । इनमें से अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । इनमें गणित, भौतिकी, गृहविज्ञान, रसायन, इंजीनियरी, भूगोल, खनन एवं भूविज्ञान, संरचनात्मक भूविज्ञान एवं विवर्तनिकी शामिल हैं ।

हिन्दी भाषा को पारिभषिक या कामकाजी शब्दावली की देन में, हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकारों का योगदान मुगलों के ज़माने से ही रहा था । स्वतंत्रता के साथ, भारत सरकार द्वारा जन शब्दावली आयोग का गठन किया गया तब साहित्य, विज्ञान, मानविकी आदि कार्यक्षेत्रों के प्रकांड विद्वानों के आयोग के सदस्य बना दिया गया और उनके कर्मनिष्ठ प्रयासों की वजह से ही, अब हिन्दी में कार्यालयीन कामकाज के लिए पारिभाषिक शब्दावली का भण्डार उपलब्ध हुआ है ।

राष्ट्रपति के आदेशों से पहले ही शिक्षा मंत्रालय के प्रारंभिक हिन्दी प्रभाग ने रेलवे एवं डाक तार इत्यादि केन्द्रीय सरकारी विभागों में सामान्यतया प्रयुक्त होनेवाले कामकाजी शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्दों की सूची देते हुए, छोटी-छोटी पुस्तिकाओं / कर-पत्रों को प्रकाशित किया था । तदुपरांत शिक्षा मंत्रालय द्वारा हिन्दी के महाकवि रामधारी सिंह दिनकर

की अध्यक्षता में मानविकी एवं समाज-विज्ञानों की शब्दावली के समन्वय हेतु एक पुनरीक्षण एवं समन्वय समिति का गठन किया गया था । राष्ट्रपति के उपर्युक्त आदेश के फलस्वरूप हिन्दी में कामकाज होने की दिशा में निम्नोक्त आधारभूत कार्रवाई हुई :

■ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माणहेतु शिक्षा मंत्रालय के अधीन विविध क्षेत्रों के विद्वानों को सदस्यों के रूप में लेकर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया गाय ।

■ सांविधिक नियमों, विनियमों और आदेशों के अतिरिक्त मैनुअलों तथा कार्यविधि साहित्य के अनुवाद के लिए गृह मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की गई और अनुवाद कार्य तथा उसकी ग्राह्यता में एकरूपता लाने की दृष्टि से अनुवाद का सारा काम उसीको सौंपा गया । इससे संबंधित नीति के अनुसार उल्लिखित साहित्य का हिन्दी में अनुवाद सरकारी कार्यालय संगठन स्वयं नहीं करेंगे, इसी ब्यूरो को भेजेंगे । यह ब्यूरो ऐसे साहित्य का अनुवाद हिन्दी में करके, फिर संस्थाओं को भेजेगा । अनुवाद में प्रशिक्षण का काम भी इसी ब्यूरो को सौंपा गया । इसी प्रकार विधि शब्दावली की संरचना का काम अलग से विधि मंत्रालय के राजभाषा (विधायी) आयोग को सौंपा गया ।

■ हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान न रखनेवाले कर्मचारियों को हिन्दी का प्रशिक्षण दिलाने के लिए प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ (प्राथमिक, माध्यमिक और मेट्रिक स्तर) – तीन स्तरों के पाठ्यक्रमों द्वारा हिन्दी शिक्षण की योजना बनाई गई । इन पाठ्यक्रमों को आगे चलकर अधिक राजभाषापरक बनाया गया ।

■ हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों के लिए हिन्दी में कार्य करने की कुशलता

दिलाने के लिए कार्यशालाओं को चलाने के अनुदेश भी सभी सरकारी कार्यालयों को दिए गए।

■ केन्द्रीय सरकारी कार्यालय के व्यापक अर्थ को स्पष्ट करते हुए, ऐसे भी आदेश जारी किए गए कि केन्द्रीय सरकारी कार्यालय का अर्थ केन्द्रीय सरकारी उपक्रम, उद्यम, निगम, समवाय, स्वायत्त निकाय इत्यादि से भी है । उन पर भी राजभाषा संबंधी सभी आदेश-अनुदेश एक समान लागू होंगे ।

■ राजभाषा कार्यान्वयन की जिम्मेदारी गृह मंत्रालय के अधीनस्थ राजभाषा विभाग को सौंपी गई ।

२.८ पारिभाषिक शब्दावली : डॉ. रामविलास शर्मा और श्री आर.पी. नायक का मत या घोषणा

केन्द्र सरकार के महत् कार्य के बारे में हम देख्र चुके हैं । केन्द्र सरकारों की संभावना बहुत महत्वपूर्ण है । यह पारिभाषिक शब्दावली के विकास की तीव्रता है । उसकी ओर प्रशंसा करते हुए सुप्रसिद्ध भाषा-चिंतक डॉ. रामविलास शर्मा ने कहा था कि “भारत सरकार ने सांस्कृतिक क्षेत्र में अब तक जो कुछ गोडा और बोया है, उसकी श्रेष्ठ उपज है -पारिभाषिक शब्द-संग्रह ।”[1] विकास का यह अद्वितीय कार्य संपन्न करने के बाद भी हिन्दी भारत की राजभाषा न बनी, इसके लिए भारत सरकार को दोष नहीं दिया जा सकता । पारिभाषिक शब्द-संग्रह की भूमिका में शिक्षा मंत्रालय की ओर से श्री. आर. पी. नायक ने गर्व के साथ घोषित किया कि – “It brings together practically all the terms that have been evolved under

---

1. भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परंपरा – डॉ. रामविलास शर्मा – पृ. २०८

its auspicious durincy a period of more them one decade and thus marks that the latest stage in its work pertaining to the evolution of terminology". दस वर्ष तक पारिभाषिक शब्दावली का निरंतर विकास करते रहने के बाद जो उपलब्धि हुई, वह इस ग्रन्थ द्वारा प्रस्तुत की गई । भारत सरकार को पता था कि अन्य संस्थाएँ और विद्वान भी इस पुण्य कार्य में लगे हुए हैं, लेकिन इनका कार्य उचित पारिभाषिक दृष्टि के अभाव में संतोषजनक नहीं था । श्री नायक के शब्दों में – "Scholars and institutions have engaged themselves in coming fresh India equivalents for English and other terms". हालाँकि भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पारिभाषिक शब्द संग्रह की अपनी कुछ कमज़ोरियाँ भी रही है । इसमें लगभग एक शताब्दी पूर्व प्रकाशित कोशों के ढेरों शब्द, जैसे १०० शब्द फैलन (१८७९) के कोश के, १०० शब्द लल्लू लाल जी (१८१०) के कोश के तथा ३२० शब्द जान शेक्सपियर (१८४५) की पुस्तक से अर्थात् लगभग ५०० शब्द आ गये हैं । फिर उक्त कोश का यह बहुत कमज़ोर पक्ष नहीं है । केन्द्र सरकार ने इस कोश के निर्माण के समय विद्वान और सामान्य जन – इन दोनों का ध्यान रखा था । सारे भारत के विद्वानों ने वर्षों तक कठिन परिश्रम किया और उसका फल हुआ यह ग्रन्थ – "The present work in an outcome of the hard labour and effort of scholars and experts from all over the country over a long period of time".

२.९ पारिभाषिक शब्दावली के विकास में व्यक्तियों, गैर सरकारी एवं सरकारी संस्थाओं के योगदान

२.९.१ शब्दावली निर्माण के आयामों में व्यक्तियों का योगदान

अंग्रेज़ी हिन्दी कोशों की परंपरा में सर्वश्री फर्ग्यूसन, हेनरी हैरिस ,गिलक्राइस्ट,

देवीप्रसाद राय, मथुराप्रसाद राय, पुरुषोत्तम, नारायण अग्रवाल, गोपीनाथ श्रीवास्तव, डॉ. सूर्यकांत, केदारनाथ भट्ट, डॉ. सत्यप्रकाश, सुख संपत्तिराय भण्डारी, भगवानदास केला, पंडित राधाकृष्ण झा, दयाशंकर दुबे, गोपीचन्द्र सिंह, हरिहर निवास द्विवेदी, डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. नगेन्द्र, फादर कामिल बुल्के, हरिबाबू कसल, डॉ. नारायणदत्त पालीवाल आदि के प्रयास उल्लेखनीय है ।

२.९.१.१ डॉ. रघुवीर का योगदान

डॉ. रघुवीर ने सन् १९५५ में ही 'ए काम्प्रिहेन्सिव इंग्लिश - हिन्दी डिक्शनरी' का संकलन किया जिसमें सभी कार्यक्षेत्रों के सामान्य शब्दों के अतिरिक्त पारिभाषिक शब्द भी समाविष्ट है । वास्तव में डॉ. रघुवीर ने पारिभाषिक शब्द कोश का निर्माण कार्य स्वतंत्रता से पहले सन् १९४२ में ही प्रारंभ किया, परन्तु सन् १९४७ के बाद इस दिशा में तेज़ी आई । इनको मध्यप्रदेश सरकार का पूरा समर्थन भी प्राप्त हुआ । सन् १९४७-५४ की अवधि में सांख्यिकी, सरल विज्ञान, तर्कशास्त्र, वाणिज्य, अर्थशास्त्र आदि कार्यक्षेत्रों के अलग-अलग कोश बने । इस बीच सन् १९५० में डॉ. रघुवीर का 'ग्रेट इंग्लिश-इण्डियन डिक्शनरी' नामक ८० हज़ार शब्दों का बहुत बड़ा कोश प्रकाशित हुआ और उसीके परिवर्धित संस्करण भी बाद में निकले । डॉ. रघुवीर के इस कोश के सृजन से हिन्दी शब्दावली शब्दकोश परंपरा में क्रांति-सी आ गई । चूँकि इस दिशा में यह प्रारंभिक कार्य था, इस कोश में गडे गए कुछ शब्द तनिक कठिन, दुरुह और अप्रचलित भी महसूस होने लगे । इसीका दूसरा संस्करण सन् १९५० में 'ए काम्प्रिहेन्सिव इंग्लिश-हिन्दी डिक्शनरी' के नाम से प्रकाशित हुआ । यह कोश पारिभाषिक शब्द निर्माण की दिशा में एक मील का पत्थर बनकर रह गया है ।

डॉ. रघुवीर की कर्मठता से प्रसन्न होकर संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने उनको और उनके सहयोगियों को भारत के संविधान के अंग्रेज़ी मूलपाठ का हिन्दी में अनुवाद करने का बृहत कार्य सौंपा था । यही कारण है कि संविधान के हिन्दी पाठ में डॉ. रघुवीर कृत उपर्युक्त शब्दकोशों में संरचित, संकलित शब्दों का ही प्रयोग पाया जाता है । हालाँकि इस महत्वपूर्ण कार्य में प्रधान भूमिका डॉ. रघुवीर की रही हैं, परन्तु संविधान की अंग्रेज़ी मूल शब्दों को हिन्दी में उतारने में उनके अष्टम अनुसूची के चौदहों भाषाओं के सहयोगियों द्वारा भी सोचे-विचारे जाने के कारण हिन्दीतर भाषाओं में भी संविधान के हिन्दी रूपान्तर को मान्यता प्राप्त हुई । इस बृहत कार्य से उन हिन्दी पारिभाषिक शब्दों को आधुनिक भारतीय भाषाओं में स्थान दिलाकर डॉ. रघुवीर ने एक बहुत बडे अभाव की पूर्ति की और पारिभाषिक शब्दों के निर्माण की दिशा में मार्ग सुगम्य कर दिया । यही नहीं, उन्होंने अपने सहयोगियों की सहायता से रेलवे, कृषि, संसदीय प्रणाली, अन्य सरकारी विभागों में प्रयुक्त होनेवाले अनेक अंग्रेज़ी शब्दों के हिन्दी समानार्थक पर्यायों की संरचना की और परवर्ती शब्द-कोशकारों के लिए मार्गदर्शक बने ।[1]

२.९.१.२ डॉ. भोलानाथ तिवारी का योगदान

डॉ. रघुवीर के बाद पारिभाषिक शब्दकोश और शब्दावली के संकलन कार्य में डॉ. भोलानाथ तिवारी ने डॉ. महेन्द्र चतुर्वेदी के सहयोग से गणनीय प्रयास किये । इनका हिन्दी-अंग्रेज़ी व्यावहारिक शब्दकोश (A Practical Hindi-English Dictionary) शब्दकोश निर्माण के क्षेत्र में एक प्रशस्त कार्य माना ज सकता है । इनमें अनेक पारिभाषिक शब्दों को लिंग, वचन

---

1. कामकाजी हिन्दी शब्द-संरचना - गणपति भोट्ल राय नारायण - पृ. ७७

विशेषों सहित, उनकी संकलन-प्रक्रिया में स्थान दिया गया, जो प्रयोक्ताओं को बहुत ही उपयोगी है । इसके अलावा डॉ. तिवारी ने डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया के सहयोग से शब्दावली निर्माण, संकलन के क्षेत्र में एक और प्रशंसनीय कार्य किया, वह है – अखिल भारतीय प्रशासनिक कोश का संकलन, जिसमें उन्होंने बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि हिन्दी भाषी राज्यों में स्थित विविध राज्य सरकारी कार्यालयों से केन्द्रीय सरकारी कर्यालयों में प्राप्त होने वाले पत्राचार में प्रयुक्त एक ही प्रशासनिक अंग्रेज़ी के अलग-अलग हिन्दी प्रदेशों में जिन-जिन हिन्दी समानार्थक शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है, उनका एक कोश बनाया । यह कोश एक ओर विविध हिन्दी प्रांतों में एक ही अर्थ में प्रयुक्त होनेवाले भिन्न-भिन्न पर्यायवाची शब्दों का परिचय दिलाता है और दूसरी ओर पारिभाषिक शब्दावली की अखिल भारतीय स्तर पर एकरूपता लाने की आवश्यकता पर इंगित करता है, जिससे केवल अनुवाद की सौलश्यता के लिए ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय ग्राह्यता के लिए भी कठिनाई या असुविधा महसूस नहीं होगी ।[1]

२.९.१.३ श्री हरिबाबू कंसल का योगदान

श्री हरिबाबू कंसल १९४१ से १९७९ तक अनेक मंत्रालयों, सरकारी विभागों, राजदूतावासों में सेवा करने के बाद भारत सरकार राजभाषा विभाग के उपसचिव के रूप में सेवारत रहे थे और सेवानिवृत्त होने के बाद भी राजभाषा की बहुत सेवा कर रहे हैं । वे कुछ और राजभाषा से जुड़े केन्द्रीय सरकारी अधिकारियों के प्रयासों से स्थापित केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् के व्यवस्थापक सदस्य रहे । अपने सेवाकाल में राजभाषा अधिनियम और

---

1. कामकाजी हिन्दी शब्द-संरचना - गणपति भोट्ल राय नारायण - पृ. ७७

राजभाषा नियमों के प्रलेखन में इनका सक्रिय योगदान रहा । उन्होंने कार्यालय सहायिका, प्रशासनिक हिन्दी निपुणता, कर्यालय कार्यबोध, कार्यालय दीपिका आदि अपने ग्रन्थों द्वारा अनेक पारिभाषिक शब्दों और नेमी वाक्यांशों के हिन्दी पर्याय देकर लाभान्वित किया । कई कार्यक्षेत्रों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावलियों के संकलनों में इनका योगदान रहा । उनके द्वारा संकलित विविध शब्दावलियों के लिए शिक्षा मंत्रालय का अनुदान पूर्वक प्रोत्साहन प्राप्त है । उन्होंने अनेक हिन्दी समानार्थक शब्दों को प्रस्तुत करने का साहस किया जो अर्थ-व्यंजना की दृष्टि से परिपूर्ण अर्थ के निकट निरूपित हुए और प्रमुख शब्दावलियों द्वारा प्रस्तुत शब्दों की तुलना में बेहतरीन भी साबित हुए । उन्होंने अपने शब्दावली और अन्य राजभाषा संबन्धी रचनाओं को, देश को पराधीनता से मुक्त करनेवाले भारत के सपूतों को समर्पित किया, जिनकी वह आकाँक्षा थी कि स्वतंत्र भारत का कामकाज भारतीय भाषाओं में हो ।[1]

२.९.२ विकास के आयामों में गैर सरकारी संस्थाएँ

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में सरकारी व्यवस्था होने से पहले और बाद भी कई गैर सरकारी संस्थाओं ने प्रशस्त कार्य किया । ऐसी संस्थाओं में काशी नागरी प्रचारिणी सभा, प्रयाग विज्ञान परिषद्, शास्त्रीय परिभाषा मण्डल, महाराष्ट्र कोश मण्डल, बिहार हिन्दुस्तानी कमेटी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि इंटरनेशनल अकादमी ऑफ इंडियन कलवर, लाहौर, केन्द्रीय सार्ववालय हिन्दी परिषद् आदि प्रमुख संस्थाओं ने प्रारंभिक कार्य किया । इनमें से कुछ संस्थाओं का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है ।

२.९.२.१ काशी नागरी प्रचारिणी सभा

---

1. कामकाजी हिन्दी शब्द-संरचना - गणपति भोट्ल राय नारायण - पृ. ७८

इस सभा से प्रकाशित हिन्दी वैज्ञानिक कोश (दो संस्करण) सन् १८९८ और १९३०-३१ में भूगोल, ज्योतिष, गणित, भौतिक, विज्ञान, रसायन और दर्शनशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी पर्याय मिलते हैं । इस कोश के निर्माण में सर्वश्री सुधाकर द्विवेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, भगवान दास आदि प्रमुख हिन्दी विद्धानों का योगदान रहा । इसी संकलन के संशोधन में प्रो. टी.के. गज्जर, प्रो. एन.वी. रानाडे, प्रो. ए.सी. सन्याल, पं. विनायकराव जैसे अहिन्दी विद्धानों ने प्रयास किए । उन्होंने इस संशोधित पारिभाषिक कोश को सार्वदेशीय बनाने केलिए अंग्रेज़ी, संस्कृत और हिन्दी एवं अन्य भाषाओं के उपसर्गों और प्रत्ययों का सहारा लिया । ये शब्द आज भी हिन्दी वैज्ञानिक ग्रंथों में प्रयुक्त पाए जाते हैं ।

२.९.२.२ केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्

यह कुछ सचिवीय स्तर के केन्द्रीय सरकारी अधिकारियों के संयुक्त प्रयासों से सन् १९६८ में स्थापित संस्था है, जिसने पारिभाषिक शब्दावली की संरचना में गैर-सरकारी रूप में प्रशंसनीय कार्य किया । इसमें केन्द्रीय सरकारी संस्थानों में राजभाषा हिन्दी के लिए कार्यरत लगभग कई अधिकारी व कर्मचारी सदस्य है । राजभाषा अधिनियम व नियम बनाने में लगे कई सचिवीय स्तर के अधिकारी इसके संरक्षक है । इस परिषद की शाखाएँ देश-भर में फैली हुई है । मुख्यतया इस संस्था द्वारा प्रकाशित कार्यालय सहायिका, हिन्दी में कार्य निपुणता, अनगिनत वर्गीकृत शब्दावलियाँ, पुस्तिकाएँ, चार्ट जैसे सहायक ग्रंथ कई विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक प्रमाणित हुए हैं, जिनके सहारे वे राजभाषा की सेवा में भर्ती पा रहे हैं, और उसका अपना व्यक्तित्व है । राष्ट्रीय स्तर पर यह परिषद अनुवाद, निबन्ध लेखन, हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि इत्यादि पहलुओं मे तथा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए सरकारी कार्यालयों के लिए

प्रतियोगिताएँ आयोजित करती है और उनको अनेक पुरस्कार भी देती हैं ।

२.९.२.३ भारतीय अनुवाद परिषद्

यह परिषद् अनुवाद नामक पत्रिका प्रकाशित कर रही है । कोई भी अनुवादक व हिन्दी प्रेमी इसके सदस्य बन सकते हैं । उक्त पत्रिका में अनुवाद संबन्धी उपयोगी लेख छापे जाते हैं । इसमें न केवल हिन्दी में अनुवाद संबन्धी लेख छापे जाते है, अद्यतन पारिभाषिक शब्दावली की भी जनकारी, उसमें दी जाती है । इसमें न केवल हिन्दी में अनुवाद संबन्धी लेख छापे जाते है, बल्कि इस पत्रिका के विशेषकों द्वारा अन्य भाषाओं के अनुवाद संबन्धी रचनाएँ भी पढ़ने को मिलती है । इस प्रकार यह परिषद् भारतीय भाषाई समेकता के लिए सेवा कर रही है ।

२.९.३ सरकारी संस्थाएँ

हिन्दी कामकाजी कार्य सुधार के लिए भारत सरकार ने भी सरकारी तौर पर उपयुक्त मंत्रालयों के अधीन कुछ आयोगों और विभागों का गठन किया, उनमें से केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, विधाई आयोग आदि प्रमुख है ।

२.९.३.१ केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

सन् १९५१ में शिक्षा मंत्रालय में एक हिन्दी एकक का गठन हुआ था । वही आगे चलकर एक प्रभाग के रूप में परिणत हुआ । साथ ही संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिश पर राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए अनेक योजनाएँ बनाई गई । फलत: मार्च,

१९६० के शिक्षा मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की स्थापना की गई । निदेशालय ने देवनागरी लिपि को मानक रूप देने के प्रयास भी किए हैं ।

२.९.३.२ वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड

संविधान के अनुच्छेद ३५१ के अधीन राजभाषा हिन्दी के विकास एवं संवृद्धि हेतु केन्द्र सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा आरंभ की गई अनेक योजनाओं में हिन्दी में तकनीकी शब्दावली के निर्माण का कार्यक्रम भी शामिल था । शब्दावली निर्माण अभियान को सही दिशा देने हेतु १९५० में भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार की अध्यक्षता में १२ सदस्यों के साथ वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड की स्थापना की गई । इसी बोर्ड के नेतृत्व में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के तत्वावधान में १९६२ में पारिभाषिक शब्द संग्रह (A Consolidated Glossery of Technical Terms : English-Hindi) का पहला संस्करण दो खण्डों में प्रकाशित किया गया । इसमें विभिन्न अध्ययन व कार्य क्षेत्रगत विषयों से संबन्धित शब्दावलियों के निर्माणार्थ २६ विशेषज्ञ समितियाँ कार्यरत रही । इनको सहयोग देते हुए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के २० अधिकारी और ७७ अनुसंधान सहायक और २० तकनीकी सहायक भी लगे रहे । भारत सरकार ने मशहूर वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. कोठारी की अध्यक्षता में १९६१ में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग का गठन किया । इसी आयोग द्वारा बोर्ड से संकलित शब्द संग्रह का भी पुनरवलोकन किया गया ।[1]

२.९.३.३ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

भारत में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण का उत्तरदायित्व प्रमुख रूप से

1. कामकाजी हिन्दी शब्द-संरचना - गणपति भोट्ल राय नारायण - पृ. ८०-८१

'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' का है । स्वतंत्र भारत में हिन्दी में नई वैज्ञानिक उपलब्धियों, संकल्पनाओं आदि की सम्यक् अभिव्यक्ति के लिए अपर्याप्त शब्दावली को देखते हुए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण की आवश्यकता अनुभव की गई । पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की भूमिका सराहनीय ही है ।

भारत के राष्ट्रपति के दिनांक २७.०४.१९६० के आदेश के अनुसरण में, अक्तूबर १९६१ में स्थाई रूप से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना हुई । पहले यह आयोग भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन काम करता था, अब मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन है । आयोग की स्थापना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है -

(क) वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों की सरंचना के क्षेत्र में अब तक किए गये काम की समीक्षा करना।

(ख) हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्द संरचना और समन्वय संबन्धी सिद्धांत निर्धारित करना ।

(ग) वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में राज्यों के विभिन्न उपकरणों द्वारा किए गये काम का समन्वय करना ।

(घ) नये-नये संरचित शब्दों का प्रयोग करते हुए विज्ञान की मानक पाठ्य पुस्तकें तैयार करना।

२.९.३.३.१ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली-निर्माण के सिद्धांत

१. अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेज़ी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी

व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए । अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं –

(क) तत्वों और यौगिकों के नाम, जैसे हाइड्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड आदि;

(ख) तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ, जैसे डाइन, पैलॉरी, ऐम्पियर आदि;

(ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं जैसे, मार्क्सवाद (कार्ल मार्क्स), ब्रेल (ब्रेल), बॉयकाट (कैप्टेन बॉयकाट), गिलोटिन (डॉ. गिलोटिन), गेरीमैंडर (मि. गेरी), ऐम्पियर (मि. ऐम्पियर), फारेनहाइट तापक्रम (मि. फारेनहाइट) आदि;

(घ) वनस्पति-विज्ञान, प्राणि-विज्ञान, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली;

(ङ) स्थिरांक जैसे π,g आदि;

(च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आम तौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है, जैसे रेडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन आदि;

(छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिह्न और सूत्र, जैसे साइन, कोसाइन, टैन्जेन्ट, लॉग आदि (गणितीय सक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला के होने चाहिए) ।

२. प्रतीक, रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएँगे परंतु संक्षिप्त रूप देवनागरी और मानक रूपों में भी, विशेषत: साधारण तौल और माप में, लिखे जा सकते हैं – जैसे सेन्टीमीटर का प्रतीक cm हिंदी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा परतु देवनागरी संक्षिप्त रूप से.मी. भी हो सकता है । यह सिद्धांत बाल-साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा, परंतु विज्ञान और

प्रौद्योगिकी की मानक पुस्तकों में केवल अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक, जैसे cm ही प्रयुक्त करना चाहिए ।

३. ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं जैसे –क, ख, ग, या अ, ब, स, परंतु त्रिकोणमितीय संबंधों में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए, जैसे साइन A, कॉस B आदि ।

४. संकल्पनाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का सामान्यतः अनुवाद किया जाना चाहिए ।

५. हिंदी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता और सुबोधता का विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

६. सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में यथासंभव अधिकाधिक एकरूपता लाना ही इसका उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए ऐसे शब्द अपनाने चाहिए जो :

(क) अधिक से अधिक प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त होते हों,और

(ख) संस्कृत धातुओं पर आधारित हों ।

७. ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग के पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं जैसे telegraph/telegram के लिए तार, continent के लिए महाद्वीप, post के लिए डाक आदि इसी रूप में व्यवहार में लए जाने चाहिए ।

८. अंग्रेज़ी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे टिकट, सिग्नल, पेन्शन, पुलिस, ब्यूरो, रेस्तरां, डीलक्स आदि इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए ।

९. *अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण* – अंग्रेज़ी शब्दों का लिप्यंतरण इतना

जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नए चिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पडे। शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण अंग्रेज़ी उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप होना चाहिए और उनमें ऐसे परिवर्तन किए जाएं जो भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित हों।

१०. *लिंग* – हिंदी में अपनाए गए अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को, अन्यथा कारण न होने पर, पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए ।

११. *संकर शब्द* – पारिभाषिक शब्दावली में संकर शब्द, जैसे guaranteed के लिए गरंटित, classical के लिए क्लासिकी, codifier के लिए कोडकार आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्द रूपों को पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं तथा सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए ।

१२. *पारिभाषिक शब्दों में संधि और समास* – कठिन संधियों का यथासंभव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन लगा देना चाहिए । इसमें नई शब्द-रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी । जहाँ तक संस्कृत पर आधारित 'आदिवृद्धि' का संबंध है, 'व्यावहारिक', 'लाक्षणिक' आदि प्रचलित संस्कृत तत्सम शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है । परंतु नवनिर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है ।

१३. *हलंत* – नए अपनाए हुए शब्दों में आवश्यकतानुसार हलंत का प्रयोग करके उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए ।

१४. *पंचम वर्ण का प्रयोग* – पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करना चाहिए परंतु lens, patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस, पेटेंट या पेटेण्ट न करके लेन्स, पेटेन्ट ही करना चाहिए।[1]

विभिन्न विद्वानों और विभिन्न सरकार और गैर सरकारी स्थापना के फलस्वरुप पारिभाषिक शब्दावली जटिल हो रही है । इनका प्रयोग और प्रसार भी बढ़ रही है । हमें ऐसा कहा जा सकता है कि पारिभाषिक शब्द दैनिक व्यवहार के शब्द नहीं होते । लेकिन आज दैनिक जीवन में भी इन शब्दों का इस्तेमाल करते है । स्वतंत्र देश की अपनी स्वतंत्र भाषा में पारिभाषिक शब्दों का महत्व एवं उपयोग और अधिक हो जाती है ।

अब समाज में शब्दावली का विकास स्वाभाविक प्रयोग प्रक्रिया से चलने के फलस्वरूप यहाँ कई प्रकार की सामाजिक और भाषापरक समस्याएँ दूर हो जाती है । स्वतंत्रता के पूर्व से लेकर भारत में अब तक हुए शब्दावली निर्माण और प्रयोग संबन्धी समस्याएँ सफल हो रही है । हिन्दी में अधिकाधिक पारिभाषिक शब्द नवनिर्मित है, साथ ही साथ अन्य भाषाओं से अनूदित या लिप्यंतरित शब्द ही है । अपनी ही भाषा से लिए हुए शब्द पारिभाषिक शब्दावली में है । उदा :- Sea - समुद्र, Price - मूल्य, Details - विवरण, Weight - भार, Salary - वेतन आदि ।

---

1. नाट्यशास्त्र - फिल्म एवं टेलीविज़न शब्दावली - वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग , भारत सरकार - पृ. XV, XVI, XVII

तीसरा अध्याय

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

३.१ हिन्दी में पारिभाषिक शब्द और अनिवार्यता

शास्त्रीय विषय, तकनीकी क्षेत्र तथा कार्यालयीन कामकाज में पारिभाषिक शब्दों का महत्व एवं अनिवार्यता हर काल में रही है । हर भाषा में पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता होती है । क्योंकि पारिभाषिक शब्द ज्ञान-विज्ञान के हर क्षेत्र में प्रयुक्त होते हैं । परिभाषित (defined) किये गये वे शब्द भाषा को सुदृढ़ बनाते हैं । पारिभाषिक शब्दावली, उसकी अनिवार्यता या आवश्यकता एवं उसके महत्व की चर्चा पिछले अध्यायों में की गयी है । ऐसा लगता है कि ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का विकास ही पारिभाषिक शब्दावली से सार्थक हो जायेगा । आज हिन्दी भाषा राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा घोषित होने के पश्चात् उसका प्रयोग क्षेत्र या कार्यक्षेत्र बढ़ गया है । साथ ही साथ ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण होता आ रहा है । निर्माण कार्य से अब शब्दावली की सुलभता है । केन्द्रीय सरकार के विभिन्न विभागों में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कार्य साथ ही प्रयोग कार्य चल रहा है । केन्द्रीय सरकार के सभी क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग होता जा रहा है । प्रान्तीय प्रदेशों में भी आज हिन्दी का प्रयोग चल रहा है। यहाँ भाषा की सुदृढ़ता व्यक्त है । भाषा नियमित, निश्चित, स्पष्ट, सरल होने के लिए पारिभाषिक शब्दावली की अनिवार्यता है । जिस भाषा में पारिभाषिक शब्दों का प्रभाव अधिक है उस भाषा उतनी ही संपन्न मानी जायेगी ।

हिन्दी के संदर्भ में विशेष रुप से आज, हिन्दी राजभाषा बनने के बाद पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता एवं अनिवार्यता और अधिक बढ़ गयी है । आज हिन्दी

को एक ओर जहाँ राजभाषा की संघीय संवैधानिक नीति का सफल अनुपालन करना है तो वही दूसरी ओर सांस्कृतिक साहित्यक चेतना को स्पन्दित करना है । और वही उसे ज्ञान-विज्ञान, विधि आदि विभिन्न अनुशासनों की विभिन्न ज्ञान शाखाओं की विशेष एवं सुनिश्चित स्पष्ट अभिव्यक्तियों के लिए पारिभाषिक शब्दावली से भी स्वयं को समृद्ध तथा संपन्न करना ज़रुरी हो गया है । नये-नये शोध कार्य तथा उपलब्धियों से लाभान्वित होने के लिए उस ज्ञान की विशिष्ट शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है ।

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विश्लेषण करते समय डॉ. महेन्द्र चतुर्वेदी के शब्द याद आते हैं – "किसी भी भाषा में समुचित पारिभाषिक शब्दावली की विद्यमानता उस भाषा-भाषी वर्ग के बौद्धिक उत्कर्ष एवं संपन्नता की परिचायक होती है और उसका अभाव बौद्धिक दरिद्रता का ।"

३.२ पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा : कुछ तथ्य

पिछले अध्याय में विभिन्न विद्वानों के पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा की चर्चा की गयी है । इससे स्पष्ट है कि जो शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में नहीं, परन्तु ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में विषय और संदर्भ के अनुसार विशिष्ट, किन्तु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, वे ही पारिभाषिक शब्द हैं । यहाँ व्यक्त है कि पारिभाषिक शब्द दैनिक व्यवहार के शब्द नहीं होते, वह जन साधारण की भाषा से अलग होनी चाहिए ।

Chambers Technical Dictionary (चैम्बर्स टेक्निकल डिक्शनरी) में जो परिभाषा दी है, इसमें ग्रहण, अनुकूलन और निर्माण के बारे में चर्चा की है । यहाँ पारिभषिक शब्दावली की संभावना व्यक्त है ।

डॉ. रघुवीर, डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. माईदयाल जैन और डॉ. विनोद गोदरे आदि कई विद्वानों की परिभाषा में पारिभाषिक शब्दों की सीमा और निर्धारण कार्य के बारे में चर्चा की है । विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से शब्दावली को परिभाषित करने की कोशिश किये गये हैं । फलतः हिन्दी में प्रशासन, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी से संबन्धित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण एवं प्रचलन हुआ । इस प्रकार वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के निर्माण के कारण जनसंचार माध्यम और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी अनुप्रयोग को अत्यधिक महत्वपूर्ण विकास मिल गया है ।

विद्वानों की परिभाषा से व्यक्त है कि पारिभाषिक शब्दावली कैसा होना चाहिए ? कैसे निर्माण कार्य चलेगा, किन-किन क्षेत्रों में उपयोग होगा ? आदि । विद्वानों ने अपने-अपने तरीके से परिभाषा को व्यक्त किये है, कुछ लोग निर्माण कार्य पर बल दिये हैं, तो कुछ लोग सीमा पर, और कुछ लोग उपयोग के क्षेत्र पर ।

३.३ हिन्दी पारिभाषिक शब्द : अर्थ, रचनापरक दृष्टिकोण

अंतर्राष्ट्रीय राजभाषा है अंग्रेज़ी, भारत की राष्ट्रभाषा और राजभाषा है हिन्दी । भारत में भारतीय भाषाओं के ऊपर का वर्चस्व अब भी बरकरार है । अब सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अधिकतर अंग्रेज़ी शब्दों का प्रभाव है । प्रस्तुत शब्दों का समतुल्ल हिन्दी पारिभाषिक शब्द हिन्दी में अब सुलभ है । हिन्दी आज विशाल भौगोलिक क्षेत्र की भाषा है । संविधान ने इसे और अधिक विस्तृत क्षेत्र की भाषा होने का गौरव प्रदान किया है । अंग्रेज़ी के सभी कामकाजी शब्द के रूपान्तरण हिन्दी में मिलता है । एक प्रकार से हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली की संरचना का आधार प्रधानतया अंग्रेज़ी ही है । भारतीय संविधान के प्रावधानों के

अनुसार अंग्रेज़ी ने सह-राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त कर, हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों की अर्थ-व्यंजनागत संरचना में गणनीय योगदान दिया । अंग्रेज़ी के अर्थ में जो विविधता है वह हिन्दी में भी दिखाई देती है । उदाः-

Gazette	-	राजपत्र
Gazetted Post	-	राजपत्रित पद
Gazette Notification	-	राजपत्र-अधिसूचना
Gazetted Officer	-	राजपत्रित अधिकारी

यहाँ अंग्रेज़ी शब्द Gazette से अनेक शब्द बनाये गये हैं, उसी प्रकार हिन्दी पारिभाषिक शब्द राजपत्र से भी अनेक शब्द बनाये गये हैं । ऐसे सन्दर्भ में हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली की सुलभता दिखाई है ।

सभी पारिभाषिक शब्दावली ऐसे नहीं है । उसमें वैविध्यता भी है । उदाः-

High Court	-	उच्च न्यायालय
High way	-	राजपथ
Highest bid	-	सबसे ऊँची बोली
High authority	-	उच्चतर प्राधिकारी

हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली में High के लिए उच्च, सबसे, उच्चतर आदि भिन्न-भिन्न शब्दों के रूप में आते हैं ।

कुछ विभिन्न शब्दावली उसी प्रकार है – उदाः-

Examination	-	परीक्षा, परीक्षण

Example	-	उदाहरण
Exercise	-	प्रयोग करना
Expansion	-	विस्तार, प्रसार
Expedition	-	अभियान
Expert	-	विशेषज्ञ
Explanation	-	व्याख्या
Exchange	-	विनिमय, केन्द्र
Exise	-	उत्पादक शुक्ल
Expiry	-	समाप्ति

पारिभाषिक हिन्दी शब्दों का अपना अपना स्वतंत्र रुप है । क्योंकि हिन्दी भाषा का मूल केन्द्र संस्कृत है । इसके कारण, संस्कृत पारिभाषिक शब्दों का बाहुल्य हिंदी पारिभाषिक शब्दों में होना स्वाभाविक है । फलतः हिन्दी के कुछ मूल शब्द उपसर्ग, प्रत्यय अथवा अन्य अर्थ बदल देनेवाले शब्दों से एक ही शब्द के विविध शब्द भी बन गए हैं । उदा :-

हिन्दी -अंग्रेज़ी क्रम से —

तुलना	– Comparison
तुलन - पत्र	– Balance Sheet
संतुलन	– Balancing
तुलनात्मक	– Comparative
अतुलनीय	– Non-comparisonable

वाद	–	Suit/plaint
प्रतिवाद	–	Respondent
विवाद	–	Controversy
संवाद	–	Dialogue
अनुवाद	–	Translation
वाद-विवाद	–	Debating

अंग्रेज़ी - हिन्दी क्रम से —

Port	–	बन्दरगाह
Import	–	आयात
Export	–	नियति
Transport	–	परिवहन
Passport	–	पारपत्र आदि ।

उपर्युक्त शब्दों के अलावा एक ही अंग्रेज़ी शब्द के विविध संदर्भों में उसके अर्थ विविधता के कारण विविध अर्थों में हिन्दी पर्यायों की संरचना की गई है । पूर्णतः पारिभाषिक शब्दावली का महत्व बढ़ा रहा है । उदा :-

नियम	–	Rule
नियमन	–	To regulate
नियमानुसार	–	According to rule
नियमावली	–	Rules and Regulations
नियम-बाह्य	–	Against Rule

विविध कार्यालयों के नाम एवं पदनाम :

Accountant General	–	महालेखाकार
Post and Telegraphs	–	डाक-तार
Administration Section	–	प्रशासन अनुभाग
Administrative Reforms Department	–	प्रशासनिक सुधार विभाग
Agricultural Aviation	–	कृषि विमानन
Directorate	–	निदेशालय
Airport	–	हवाई पतन
Health Organisation	–	स्वास्थ्य संगठन
All India Radio	–	आकाशवाणी
Armed Force Films and Photo Division	–	सशस्त्र सेना फिल्म व फोटो प्रभाग
Atomic Energy Department	–	परमाणु ऊर्जा विभाग
Central Bureauof Investigation	–	केन्द्रीय जाँच ब्यूरो
Central Hindi Directorate	–	केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
Council of Scientific and Industrial Research	–	वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्

पदनाम :

Administrator General	–	महाप्रशासक
Agent	–	अभिकर्ता

Accountant	–	लेखाकार
Field Officer	–	क्षेत्राधिकारी
Editor	–	संपादक
Director	–	निदेशक
Welfare Officer	–	कल्याण अधिकारी
Receptionist	–	स्वागती
Superintendent of Police	–	पुलिस अधिकारी

३.४ पारिभाषिक शब्दावली की अभिव्यक्तियाँ

हिन्दी राजभाषा है और राष्ट्रभाषा भी । प्रशासन के कामकाज में हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है । वह शब्द एक ही क्षेत्र में सीमित नहीं है । ज्ञान-विज्ञान के सभी क्षेत्रों में व्यापित है । ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापित कुछ शब्दावलियाँ नीचे दिये हैं।

३.४.१ कामकाजी हिन्दी शब्दावली

हिन्दी में कामकाजी शब्दावली के निर्माण में कई साहित्यकारों, भाषाविदों और विद्धानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । इसी तरह सरकारी विभागों और शैक्षिक, प्रचार-प्रसार तथा स्वयं सेवी संस्थाओं ने भी हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली की संरचना में अपना-अपना योगदान दिया । हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता के अनुसार निर्माण कार्य में भी वृध्दि हुई । नये-नये शब्दों के निर्माण से भाषा का विकास होता है । हिन्दी कामकाजी शब्दावली नहीं होती तो दूसरी भाषाओं की शब्दावली पर आधारित होना पड़ेगा । हिन्दी में

पारिभाषिक शब्दों का आधार अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्दावली ही रही है । लेकिन पारिभाषिक शब्दावली की चर्चा केवल अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्दावली से जुड़ी नहीं है । विभिन्न कार्य क्षेत्रों से अनुभवी विद्वानों की सेवाएँ पारिभाषिक शब्दावली के लिए उपलब्ध है । कामकाजी हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली की कुछ उदाहरण देखिए –

Eligibility	–	अर्हता/पात्रता
Emergency	–	आपातकाल
Immediately	–	शीघ्र/तत्काल
Class	–	श्रेणी
Category	–	वर्ण
Supervision	–	पर्यवेक्षण
Inspection	–	निरीक्षण
Suspension	–	निलंबन
Retirement	–	सेवा-निवृत्ति
Insurance	–	बीमा
Index	–	सूची
Increment	–	वेतन वृद्धि
Identity Card	–	पहचान पत्र
Capacity	–	क्षमता
Appointment	–	नियुक्ति
Gross	–	सकल
Total	–	योग

३.४.२ बैकिंग क्षेत्र में हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली

बैकिंग आज के युग में निरंतर परिवर्तित हो रही है । नये-नये शब्दों का प्रयोग बैकिंग जगत् के प्रबुद्ध एवं निष्ठावन हिन्दी अधिकारी इन शब्दों का तत्काल अर्थ प्रचलित कर लेते हैं अथवा लिप्यंतरण द्वारा शब्दों को अपने प्रचार माध्यमों द्वारा परिचित करवा देते हैं । इसके परिणामस्वरुप बैकिंग जगत् में शब्दावली रुकना नहीं पड़ता है ।

कुछ शब्द देखिए :–

रजिस्टर पन्ना	–	Register Folio
पोस्ट बॉक्स न.	–	Post Box No.
बुक पोस्ट	–	Book Post
नकद प्रदत्त	–	Cash paid
नकद प्राप्त	–	Cash received

हिन्दी में पासबुक संबन्धी कुछ शब्दावली :–

Deposits	–	जमा
By cheque	–	नकदी जमा / से
By salary	–	वेतन जमा / से
By interest	–	ब्याज जमा / से
Withdraws	–	आहरण
To cash	–	नकदी भुगतान / को
To Demand Draft	–	ड्राफ्ट हेतु / को
To mail transfer	--	डाक अंतरण हेतु / को

आजकल अंग्रेज़ी संक्षिप्तियों के स्थान पर हिन्दी संक्षिप्तियों का प्रचलन भी हो रहा है ।

उदा :-

Clearing cheque (CLC)	–	समाशोधन चैंक (स. चेक)
Fixed Deposit Receipt (FDR)	–	मियादी जमा रसीद (मि.ज.र)
Returned Cheque (R/C)	–	लौटाया गया चैंक (लौ. चेक)
Transfer Cheuqe (T/C)	–	अंतरण चैंक (अ. चेक)
Demand Draft (D/D)	–	ड्राफ्ट (ड्रा.)

आज की वैश्विक आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ है बैंक । डॉ. विजयपाल सिंह के अनुसार, "भारत में बैंकिंग व्यवस्था पश्चिम की देन है ।"[1] देश के आर्थिक ढाँचे के निर्माण और उसके सुनियोजित विकास में बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण है । आर्थिक विकास के नियमन में बैंकों की भूमिका को पाश्चात्य देशों में बहुत पहले ही पहचाना गया । हालाँकि माना जाता है कि हमारे बैंकिंग का प्रयोग वैदिक युग से होता चला आ रहा है और धीरे-धीरे आधुनिक युग में इसका विकास हुआ है । बैंकों के प्रत्येक शाखा में हिन्दी प्रयोग संबन्धी बोर्ड दिखाई पड़े है, यहाँ पारिभाषिक शब्दावली महत्वपूर्ण है । हिन्दी में लिखे गये आवेदन पत्र और हिन्दी में भरे चैक आदि बैंक में है । अर्थ-व्यंजना की दृष्टि से यह शब्द पूर्णता प्राप्त करता है । शब्दों में स्पष्टता (clarity), यथार्थता (accuracy), सरलता (simplicity) और एकरूपता (uniformity) है । ऐसे कुछ शब्द नीचे दिये हैं –

आवेदन – Application

---

1. कार्यालयीन हिन्दी – डॉ. विजयपाल सिंह – पृ. ७५

आवेदक	–	Applicant
अनुदेश	–	Direction
जमाकर्ता	–	Depositor
जाँचकर्ता	–	Checked by
शेष धन	–	Balance
केन्द्रीय बैंक	–	Central Bank
सहकारी बैंक	–	Co-operative Bank
व्यापारिक बैंक	–	Commercial Bank
धनादेश	–	Cheque
चालू खाता	–	Current Account
धनाराशि	–	Amount
रोकड बही	–	Cash Book
रोकड	–	Cash

३.४.३ विज्ञापन संबन्धी शब्दावली

प्रत्येक क्षेत्र के लिए विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग होता है । विज्ञापन संबन्धी पारिभाषिक शब्दावली सामान्य साहित्य भाषासे थोड़ी अलग है । उदा :-

शास्त्रीय अध्ययन	–	Academic studies
विज्ञापनदाता कम्पनी	–	Advertising company
विज्ञाप्ति	–	Bulletin

नौकरशाही	–	Bureaucracy
व्यावसायिक कला	–	Commercial art
बाज़ार की गतिविधि	–	Market report
निजी क्षेत्र	–	Private sector
मुद्रण कला	–	Typography
परिवहन सेवा	–	Transport service
पराध्वनि	–	Supersonic
उप संपादक	–	Sub-Editor

३.४.४ आकाशवाणी (रेडियो) संबन्धी शब्दावली

हिन्दी में संचार माध्यम की शब्दावली में आकाशवाणी संबन्धी शब्दावली में स्पष्टता सरलता होती है । आकाशवाणी संबन्धी हिन्दी शब्दावली का प्रयोग भी आज चलते है । हिन्दी शब्दों का प्रचार-प्रसार तथा प्रयोग आगे बढ़ रहा है । शब्दों के अर्थ स्पष्टीकरण में सरलता आती है । उदा :-

आकाशवाणी	–	All India Radio
ध्वनि रक्षित	–	Sound proof
प्रसारण	–	Broadcast
प्रक्षेपण	–	Transmission
प्रसारण-कक्ष	–	Studio
महानिदेशक	–	Director General

आलेख	–	Script
कार्यक्रम	–	Programme
ध्वनि	–	Sound
प्रसारण केन्द्र	–	Radio Station

३.४.५ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली

आज इन क्षेत्रों में शब्दावली का उपयोग अंग्रेज़ी के बराबर होता है । अधिकतर शब्द के लिए उचित हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली मिलता है –

अनुप्रयुक्त विज्ञान	–	Applied Science
अनूकूलन	–	Adaptation
अंतरिक्षयानिकी	–	Astronauties
अभिरुचि	–	Aptitude
आरोग्य प्रमाणपत्र	–	Certificate of Medical Fitness
अभियन्ता	–	Engineer
आकलन	–	Estimate
उदर	–	Abdomen
उपचय	–	Anabolism
उत्प्रेरक	–	Catalyst
कार्यपालक	–	Executive
कोशिका	–	Cell

कक्ष	–	Orbit
खंडी भवन	–	Segmentation
चुम्बक मंडल	–	Magnet Sphere
जनित्र	–	Generator
जीवाश्म	–	Fossil
जड़त्व	–	Inertia
तंत्रिका	–	Nerve
संकल्पना	–	Concept
प्रतिमान	–	Criterion
परिस्थितिकी	–	Ecology
तत्व	–	Element
पर्यावरण	–	Environment
लक्षण	–	Symptom
संश्लेषण	–	Synthesis
प्रतिचयन	–	Sampling

३.४.६ हिन्दी में परिवहन शब्दावली

जहाज़ पर	–	Abroad
विदेशी व्यापार	–	Cross trade
निर्यात	–	Export
आयात	–	Import
अधिनियम	–	Act

अनुमानित लागत	–	Cost estimated
इकतरफा यातायात	–	Oneway traffic
कार्यशाला	–	Workshop
विधेयक	–	Bill
बन्दरगाह	–	Harbour
व्यापारी बेडा	–	Merchant Navy
यात्री सेवा	–	Passenger service

३.४.७ हिन्दी में उपग्रह शब्दावली

अभिग्राहक	–	Receive
अधि परिभाषित	–	High Definition
निवेश	–	Input
अन्तर्वाहक	–	Sub carrier
प्रवरण	–	Selection
विस्तार	–	Band
तंत्र	–	System
सारणी	–	Channel
संकेतावली	–	Coding
संपीडित	–	Compressed
प्रबर्धन	–	Amplification
संचरण	–	Transmission

दर्शन क्षेत्र	–	Field of view

३.४.८ हिन्दी में विधि शब्दावली

अधिवक्ता	–	Advocate
अपील	–	Appeal
आरोप	–	Charge
न्याय	–	Justice
वकील	–	Lawyer
विधि	–	Law
न्यायाधीश	–	Judge

३.४.९ कंप्यूटर संबन्धी शब्दावली

आँकड़ा	–	Data
ऑकडा संसाधन	–	Data processing
दृश्य प्रस्तुति	–	Visual display
संचार प्रेषक	–	Transputer
निर्गम	–	Output
स्मृति इकाई	–	Memory Unit
यंत्र भाषा	–	Machine language
भण्डारण	–	Storage
मध्यसीमा	–	Interface
संकेत	–	Code

३.४.१० नियुक्ति एवं स्थापना शब्दावली

Appointment	–	रोज़गार
Election	–	चुनाव
Promotion	–	पदोन्नति
Upgradation	–	पदोन्नयन
Removal	–	निष्कासन
Conversion	–	परिवर्तन / रूपान्तरण
Resignation	–	पद त्याग
Retirement	–	सेवा-निवृत्ता

३.४.११ शासकीय प्रक्रियाओं की शब्दावली

Nationalisation	–	राष्ट्रीकरण
Liberalization	–	उदारीकरण
Globalisation	–	वंशीकरण
Orientation	–	अभिमुखीकरण
Standardisation	–	मानकीकरण
Renewal	–	नवीकरण
Presentation	–	प्रस्तुतीकरण

३.४.१२ हिन्दी में वाणिज्य शब्दावली

अंचल प्रमुख	–	Zonal Head

अंचल कार्यकाल	–	Zonal Office
कार्यशाला	–	Workshop
कार्यदिवस	–	Working day
वाउचर	–	Voucher
मूल्य	–	Value
निविदा	–	Tender
परिवहन	–	Transport
किराया	–	Rent
गुणवत्ता प्रमाणपत्र	–	Quality Certificate
प्रचार	–	Publicity
प्रकाशित	–	Published
अवधि	–	Period
मालिक	–	Owner
अनुपलब्ध	–	Out of stock
मूल	–	Original

३.४.१३ हिन्दी में भौतिकी शब्दावली

अणु जालक	–	:Lattic
प्रत्यानयन	–	Restoring
उष्मचालन	–	Thermal conduction
प्रगामी तरंगे	–	Progressive waves

अन्तराणविक	–	Intermolecular
परिशुद्धता	–	Precision

३.४.१४ प्रशासनिक हिन्दी में प्रयुक्त तत्सम शब्दावली

आजकल लोकप्रिय देशी अथवा विदेशी शब्दों का प्रयोग व प्रभाव अधिकाधिक देखा जा सकता है । पूर्णतः संस्कृत निष्ठ शब्दावली को कहीं कहीं सुधारना और उसके स्थान पर लोकप्रिय देशी अथवा विदेशी शब्दों का प्रयोग समीचीन लगता है । फिर भी अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के स्थान पर उचित संस्कृत निष्ठ शब्द है तो उनका प्रयोग भी उचित मालूम होता है । ऐसे प्रशासनिक हिन्दी में प्रयुक्त कुछ शब्दावलियाँ देखिए –

अनुबंध	–	:Appendix
अन्वेषण	–	Investigation
औचित्य	–	Justification
आशोधन	–	Modification
उद्धरण	–	:Extract
साक्ष्यांकन	–	Attestation
वर्गीकरण	–	Classification
परामर्श	–	Consultation
स्थिति	–	Condition
स्पष्टीकरण	–	Clarification
संग्रहण	–	Collection
निर्णय	–	Decision

पदनाम	–	Designation
विचार विमर्श	–	Discussion
पदच्युति	–	Dismissal
दक्षता	–	Efficiency
पृष्ठांकन	–	Endorsement
स्थापना	–	Establishment
पाद टिप्पणी	–	Foot note
प्रवेश पत्र	–	Admission Form
राजभाषा	–	Official Language
नामांकन	–	Nomination

हिन्दी पारिभाषिक शब्द दिन-व-दिन अंग्रेज़ी के समानान्तर अपना रुपान्तरण करते जा रहे हैं । अर्थात् जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाए जाने वाले शब्दों के रूप में प्रस्तुत शब्दों का प्रयोग हो रहा है ।

३.५ पारिभाषिक शब्दों में उपयोग की अनिवार्यता

पारिभाषिक शब्द, जनता की ज्ञानकारी के अभाव से सूख जाते हैं । ऐसे अनेक शब्द है, जिनके अंग्रेज़ी मूल रूप से ही आम जनता परिचित है और इसी कारण से हिन्दी शब्दों के प्रयोग में अज्ञानी की संभावना होगा । उदा :-

Memory	–	मेमोरी
Keyboard	–	की-बोर्ड
Software	–	सोफ्टवेयर

Programme	–	प्रोग्राम
Upload	–	अपलॉड
Click	–	क्लिक
Layout	–	ले आउट
Mail merge	–	मेल मर्ज
Board	–	बोर्ड
Scanner	–	स्कैनर
Printer	–	प्रिन्टर
Plotter	–	प्लॉटर
Fax	–	फैक्स
Icon	–	आइ्कॉन

अधिकतर शब्द के लिए पारिभाषिक शब्द बनाया गया है । लेकिन यह शब्द व्यावहारिक प्रयोग में अधिक नहीं रहा है । आम जनता के बीच इन शब्द का जितना स्वीकृति मिलती है, उतना ही अस्वीकृति पारिभाषिक शब्दावली में होगा । ऐसे अनेक शब्द है । उदा :-

Report	–	रिपोर्ट	–	प्रतिवेदन
Manager	–	मैनेजर	–	प्रबन्धक
Record	–	रकार्ड	–	अभिलेख
Workshop	–	वर्कशॉप	–	कर्मशाला
Install	–	इंस्टॉल	–	संस्थापित करना
Copy	–	कॉपी	–	नकल

आम जनता की स्वीकृति और अस्वीकृति के कारण विविध सरकारी विभागों में बैंकों में कई शब्द मूल रूप में स्वीकृत है । उदा :-

Post Card	–	पोस्ट कार्ड
Cover	–	कवर
Bank	–	बैंक
Cheque	–	चेक
Counter	–	काउण्टर
Draft	–	ड्रफ्ट
Money Order	–	मनी आर्डर
Postal Order	–	पोस्टल आर्डर

आज हमारे समाज औद्योगिक सूचना प्राप्त करने के लिए प्राप्त ढंग का इस्तेमाल कर रहा है । सूचना प्रौद्योगिकी अब विस्तार हुआ है । उससे सूचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है ।सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने के जिाए मुद्रण का आविष्कार हुआ, जिससे समाचार पत्र-पत्रिकाएँ सूचना का आधार बनीं । विद्युतकीय आविष्कारों ने सूचना माध्यम को आगे बढ़ाते हुए आधुनिक स्वरुप दिया ।टेलीफोन, फैक्स, ई-मेल, इंटरनेट, सैटेलाइट, कंप्यूटर, वेबसाइट, लैपटाप आदि के आविष्कार ने तो सूचना की पूरी प्रक्रिया की ही तीव्रतर बना दिया है । इन सभी क्षेत्रों में अंग्रेज़ी शब्दों का प्रभाव है । यहाँ बराबर हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली होगा, या निर्माण भी होगा, लेकिन इनका उपयोग कहाँ तक सफल होगा, यह ध्यान देने की बात है । सूचना प्रौद्योगिकी में कंप्यूटर सबसे महत्वपूर्ण है । आधुनिक युग कंप्यूटर युग के नाम से जाना जाता है ।कंप्यूटर अंग्रेज़ी के सात अक्षरों का संयोग

है । इन सात अक्षरों का विस्तार इस प्रकार है, विशेषता यह है कि इन्हें हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली की सुलभता है ।

C	–	Commonly	–	साधारण रुप से
O	–	Operator	–	संचालक
M	–	Machine	–	यंत्र
P	–	Particulars	–	विशेष रुप से
U	–	User	–	प्रोक्ता
T	–	Trade -	-	व्यवसाय
E	–	Education	–	शिक्षा
R	–	Research	–	अनुसंधान

कंप्यूटर संबन्धी अंग्रेज़ी शब्दावली में हिन्दी शब्दावली की भूमिका महत्वपूर्ण है । कुछ हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली देखे –

Word Processor	–	शब्द संसाधक
Visual display	–	दृश्य प्रस्तुति
Error	–	तृष्टि
Primary memory	–	प्राथमिक स्मृति
Output	–	निर्गम
Memory Unit	–	स्मृति इकाई

हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली में निर्माण आयोग का योगदान महत्वपूर्ण है । पारिभाषिक शब्द रचना में विज्ञान के लगभग सभी अंगों की वस्तुओं के नाम-बोधक पारिभाषिक

शब्दों की रचना करने का प्रशंसनीय प्रयास आयोग ने किया है । इसमें अधिकतर शब्द हमें सुपरिचित है । शिक्षा संबन्धित तथा अन्य कार्यों से संबन्धित क्षेत्रों में इन शब्दों का इस्तेमाल किए जाते हैं । ऐसे कुछ पारिभाषिक शब्दावली इस प्रकार है ।

Temperature	–	तापमान
Energy	–	ऊर्जा
Iron	–	लोहा
Zoology	–	प्राणि विज्ञान
Biology	–	जीव विज्ञान
Botany	–	वनस्पति विज्ञान

लोगों की आवश्यकता के अनुसार पारिभाषिक शब्दावलियों का निर्माण कार्य चल रहे है, फिर लोग सुविधा के लिए हिन्दी पारिभाषिक शब्द के होते हुए भी अंग्रेज़ी शब्दों का ही उपयोग करते है । उसी प्रकार हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली का अभाव न होना चाहिए । भाषा के अस्तित्व को संभालना भाषाविदों का कर्तव्य है । इसलिए अंग्रेज़ी शब्दावली के समान हिन्दी शब्दावली का निर्माण भी हुआ है, फिर भी लोग अधिकतर हिन्दी शब्दों का प्रयोग नहीं करते है ऐसे कुछ शब्द है –

Cancel	–	कॉनसल
Disc	–	डिस्क
Delete	–	डिलीट
Refresh	–	री-फ्रेष
Save	–	सेव

Monitor	–	मोनीटर
On	–	ऑन
Off	–	ऑफ
Mouse	–	मौस
Button	–	बट्टन

हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली में cancel के लिए 'निरसन' शब्द है, यहाँ हिन्दी शब्दावली का अभाव नहीं होता है, उपयोगिता का अभाव है । अधिकतर शब्दों का इस्तेमाल ऐसा है, एक एक केलिए उचित हिन्दी शब्द है । Disc के लिए वृत्त अथवा आधार फलक, delete के लिए निरसन, refresh के लिए पुनःदर्शाओं, save के लिए संचित रखे, Monitor के लिए प्रपट्ट इत्यादी ।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में कार्य संचालन बहुत तेज़ी से है, भाषाई कार्य के लिए पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता बहुत बड़ा है । एक-एक शब्द के लिए सरल, सुदृढ़, अर्थ युक्त शब्दावली हिन्दी में सुलभ है । कुछ शब्द देखिए –

File (फयल)	–	पंजिका
Input (इनपुट)	–	निवेश
Output (औटपुट)	–	निर्गम

कहने का अर्थ यह है कि हिन्दी शब्दावली का विकास कार्य आवश्यकता के अनुसार बढ़ रहा है । पारिभाषिक शब्दों का हिन्दी में निर्माण करने के लिए जो पथ-प्रदर्शन डॉ. रघुवीर ने किया, उसके लिए सारा राष्ट्र उनका सदा स्मरण रहेगा । ज्ञान-विज्ञान के शब्दों

का हिन्दी शब्द निर्माण कार्य या सूत्र उन्होंने ही सर्वप्रथम हमें दिया और भावी पीढ़ियों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया । उन्होंने प्रत्येक अंग्रेज़ी शब्द के लिए हिन्दी का एक अपना शब्द देकर राष्ट्रभाषा का गौरव बढ़ाया एवं उसकी क्षमता सिद्ध की ।

पारिभाषिक शब्दावली का विकास बड़ी रोचक बात है । वास्तव में उसका मानव भाषा और जन समूह के सभी पक्षों से सीधा संबन्ध है । पारिभाषिक शब्दों का इस्तेमाल करना आवश्यक है, जो निजी भाषा की अभिव्यक्ति की क्षमता बढाएगी ।

देश स्वतंत्र हुआ, अब हम सूचना प्रौद्योगिकी के बहाव में है । स्वतंत्र देश की राजभाषा या राष्ट्रभाषा के लिए सर्वमान्य पारिभाषिक शब्दावली होना चाहिए । ज्ञान-विज्ञान विभिन्न बातें की हिन्दी में सार्थक अभिव्यक्ति करने के लिए हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली का विकास होना ज़रूरी है । विभिन्न आयोग द्वारा नये नये शब्द बनाये जाते हैं । आज प्रौद्योगिकी के युग में हमको प्रतिदिन नए-नए शब्द बनाना है । हिन्दी जन समूह को इसका इस्तेमाल करना चाहिए । प्रौद्योगिकी के आधुनिक युग में देश की प्रगति और समृद्धि टेक्नालोजी के व्यावहारिक उपयोग पर निर्भर करती है । विज्ञान मानव के सभी क्रियाकलापों को प्रभावित करने लगा है और इसके कारण सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक पहलुओं में बहुत से परिवर्तन होते रहते हैं । विज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए ऐसी शब्दावली की ज़रूरत होती है जिसमें भावों को उजागर करने की पूर्ण क्षमता और हर प्रकार की अभिव्यक्ति की क्षमता हो । तभी विज्ञान की जानकारी को शब्दावली के माध्यम से अच्छी तरह से अभिव्यक्त किया जा सकता है । समय-समय पर वैज्ञानिकों को नये-नये शब्दों की आवश्यकता पड़ती है जिनके द्वारा वे विभिन्न संकल्पनाओं, प्रक्रियाओं, दशाओं, गुणों, यंत्रों, घटनाओं आदि को यथोचित रूप से अभिव्यक्त

कर सकें । शब्दावली की संपूर्णता के लिए भिन्न-भिन्न पदार्थों, प्रक्रियाओं को सही रूप में पारिभाषित करने के लिए उपयुक्त क्रियाएँ, विशेषण, उपसर्ग और प्रत्यय भी होने चाहिए । ऐसे करने से सुस्पष्ट रूप से नए-नए शब्दों का निर्माण हो सकता है । दिन ब दिन विकसित होते रहने वाले विज्ञान के साथ-साथ नई शब्दावली की अनिवार्य रूप से माँग बढ़ती जाती है । प्रत्यय और उपसर्ग वाली कुछ शब्द देखे –

क प्रत्यय से निदेशक

ई प्रत्यय से सहकारी

ईश प्रत्यय से अन्तर्राष्ट्रीय

आ उपसर्ग से आलोचक

अनु उपसर्ग से अनुदान

उप उपसर्ग से उपभोक्ता आदि ।

विज्ञान या प्रौद्योगिकी के साथ-साथ वैज्ञानिक शब्दावली का महत्व भी उत्तरोत्तर बढ़ रहा है । पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, सिनेमा, रेडियो, टेलिविज़न, इन्टरनेट आदि क्षेत्र तक आज पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग या प्रयोग हो रहा है, और आम जनता भी इसके संपर्क में आता है । इन क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों का महत्व एवं आवश्यकता हर काल में रही होगी । पुराने ज़माने से ही वह संपन्न हो रहा है । अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में इनका महत्व बढ़ रहा है । आज हमारे लिए हिन्दी पारिभाषिक शब्दावलियों के भण्डार है, फिर भी जनता अंग्रेज़ी के पीछे चलने की मनोवृत्ति में है । हमें यह निष्कर्ष में पहुँचना पडेगा कि जब हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली उपयुक्त होगी, तब उसका उपयोग्यता बढ़ जाएगी । हिन्दी पारिभाषिक

शब्दावली के विकास की विशेषता यह है कि इसका निर्माण क्षेत्र दृढ़ है । इसलिए सुलभ रूप से शब्द मिलते है, लेकिन उपयोगिता की कमी के कारण हिन्दी शब्दों का प्रयोग नहीं चलता है । अन्य शब्दों का विशेषकर अंग्रेज़ी शब्दों का उपयोग बढ़ती जा रही है । हिन्दी शब्दों का विकास होना चाहिए, इसके लिए हिन्दी शब्दों का प्रयोग करना भी चाहिए । आजकल सूचना प्रौद्योगिकी और जन संचार माध्यम जैसे क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों की उपयोगिता बढ़ रही है ।

चौथा अध्याय

सूचना प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली : एक विश्लेषण

४.१ सूचना प्रौद्योगिकी

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग माना जाता है । हमारे सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन दिखाई दे रहा है । इस बदलाव का कारण सूचना प्रौद्योगिकी है । जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव पड रहा है । हर क्षेत्र में उसका हस्ताक्षेप दिखाई दे रहा है । सूचना क्रांति के इस सार्वभौमिक संवृत्ति से देश अपनी प्रगति के बल पर है । सूचना प्रौद्योगिकी, वह निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है । मानव जीवन के हर क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है ।

सूचना को अंग्रेज़ी के 'Information' शब्द का हिन्दी रुपान्तरण मानते हैं । हिन्दी पर्याय के रूप में सूचना के लिए जानकारी, ज्ञान, खबर, इतला आदि शब्द प्रचलित है । लेकिन इसका शाब्दिक अर्थ है – अवगत या सूचित करना । प्रौद्योगिकी शब्द व्यावहारिक ज्ञान है । इन्साइक्लोपीडिया अमेरिका में कहा है – "Technology refers to the way of making or doing things." 'प्रौद्योगिकी' अंग्रेज़ी के बहुप्रचलित शब्द 'Technology' का हिन्दी रुपान्तर है । सूचना प्रौद्योगिकी या Information का लघु नाम या रूप है आई. टी. । यह शब्द बहुत प्रचलित है ।

४.१.१ सूचना प्रौद्योगिकी का स्वरूप

सूचना प्रौद्योगिकी बिलकुल अद्यतन वैज्ञानिक शाखा है । कंप्यूटर के आविष्कार

के पहले इलक्ट्रोनिकी का विकास एवं प्रचार हो चुका था । कंप्यूटर तथा सज्जन्य सुविधाओं के साथ इलक्ट्रोनिकी का योग संचार जगत में एक अभूतपूर्व क्रान्ति पैदा कर दी । दोनों के सम्यक सहयोग से सूचना प्रौद्योगिकी नामक वैज्ञानिक शाखा का विकास हुआ । सूचनाओं का आदान-प्रदान पुराने ज़माने से ही होता आ रहा है । लेकिन आज सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के कारण प्रस्तुत आदान-प्रदान अत्यन्त त्वरित गति से होने लगा है । वह संपूर्ण मानव जीवन को बेहद प्रभावित किया है । जन जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र है ही नहीं। जहाँ किसी किसी रूप में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव न पडा था ।

४.१.१.१ सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ

सूचना प्रौद्योगिकी अंग्रेज़ी के बहुप्रचलित शब्द Information Technology है । प्रौद्योगिकी शब्द मुख्य रूप से दो संदर्भों में प्रयोग किया जाता है । इसका संकुचित अर्थ केवल प्रौद्योगिकी प्रक्रियाओं से संबन्धित है, जिसने हस्तकला और शिल्प को विस्थापित किया है । जबकि विस्तृत अर्थ में यह शब्द सभी पदार्थों के साथ होनेवाली सभी प्रक्रियाओं का द्योतक है । वास्तव में देखा जाए तो प्रौद्योगिकी का ज्ञान व्यावहारिक ज्ञान है, जिसे अर्जित करना पड़ता है । आवश्यक प्रशिक्षण पाकर अक्सर सीखना पड़ता है । जो विशिष्ट सैद्धांतिक ज्ञान हम अर्जित करते हैं, उसे व्यावहारिक ज्ञान में तब्दील करना होता है । इसीलिए कहा गया है कि "In this broader sense technology may be defined as application of knowledge."[1]

अत: प्रौद्योगिकी या Technology शब्द ज्ञान की एक शाखा है । वह यांत्रिक

1. www.google search

कला का विज्ञान है । प्रौद्योगिकी एक कला है । यहाँ उद्योग की ध्वनि भी व्यक्त है। अर्थात् वह शब्द विज्ञान (Science), कला (Art) तथा अभियांत्रिकी (Engineering) से जुडा हुआ शब्द है ।

आज मानव का जीवन प्रौद्योगिकी से भरा है । अर्थात् दैनिक जीवन में मनुष्य छोटे-छोटे और बडे-बडे यंत्रों का उपयोग करते हैं, मानव के उपयोगी यंत्रों, संसाधनों, प्रक्रियाओं आदि को प्रौद्योगिकी कहते है । यहाँ सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ व्यक्त है । अर्थात् सूचना, जानकारी, आँकडों के लिए काम आनेवाली सभी उपकरण या पद्धतियों सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत आते है ।

४.१.१.२ सूचना प्रौद्योगिकी की परिभाषाएँ

सूचना प्रौद्योगिकी की व्याख्या[1] संक्षिप्त विश्वकोश में 'सूचना प्रौद्योगिकी' को सूचना से संबन्धित माना गया है । इस प्रकार के विचार 'डिक्शनरी ऑफ कंप्यूटिंग' में भी व्यक्त किये गये हैं । मैक मिलन, 'डिक्शनरी ऑफ इनफॉर्मेशन तकनोलॅजी' में 'सूचना प्रौद्योगिकी' को परिभाषित करते हुए यह विचार व्यक्त किया गया है कि कंप्यूटिंग और दूरसंचार के सम्मिश्रण पर आधारित माइगे-इलैक्ट्रॉनिक्स द्वारा मौखिक, चित्रात्मक, मूल-पाठ विषयक और संख्या संबन्धी सूचना अर्जन, संसाधन (प्रोसेसिंग), भण्डारण और प्रसार है ।

डॉ. जगदीश्वर चतुर्वेदी ने सूचना प्रौद्योगिकी के लिए सूचना तकनीकी शब्द को परिभाषित करते हुए लिखा है – "सूचना, तकनीकी (प्रौद्योगिकी) का किसी भी उद्देश्य के लिए

---

1. www.google search -- Definition of Information Technology

इस्तेमाल किये जाये वह वस्तुतः उपकरण तकनीकी है । यह सूचनाओं को अमूर्त संसाधन के रूप में मथती है । यह हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर दोनों पर आश्रित है । इसमें उन तत्वों का समावेश भी है जो हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के रूपान्तर है ।"

Definition adopted by UNESCO -- The Scientific, Technological and engineering disciplines and the management techniques used in information handling and processing, their applications, computers and their interaction with men and mechines, and associated social, economic and cultural matters (quoted by Raitt, 1982). It means Information Technology is new technology applied to the creation, storage, selection, transformation and distribution of information of various kinds.

सूचना प्रौद्योगिकी के संदर्भ हम जब सूचना शब्द का प्रयोग करते हैं तब यह एक तकनीकी पारिभाषिक शब्द होता है । वहाँ सूचना के संदर्भ में आँकडा (Data), प्रज्ञा विवेक, बुध्दिमत्ता (wisdom) आदि शब्दों का भी प्रयोग मिलता है । प्रौद्योगिकी ज्ञान की एक ऐसी शाखा है इसका सरोकार यांत्रिकीय कला अथवा प्रयोजनपरक विज्ञान अथवा इन दोनों के समन्वय रूप से है । सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत वे सब उपकरण एवं पद्धतियाँ सम्मिलित है जो सूचना के संचालन में काम आते हैं । यदि इनकी एक संक्षिप्त परिभाषा देनी है तो कहेगे – "सूचना प्रौद्योगिकी एक ऐसा अनुशासन है जिसमें सूचना का संचार अथवा आदान-प्रदान त्वरित गति से दूरस्थ समाजों में विभिन्न तरह के साधनों तथा संसाधनों के माध्यम से सफलता पूर्वक किया जाता है ।"

४.१.१.३ सूचना प्रौद्योगिकी से लाभ

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए कोई

कठिनाई नहीं । एक महत्वपूर्ण कंप्यूटेशनल घटना के रूप में 'इंटरनेट' हमारे दैनिक जीवन में जुडी हुई है । सूचना के महत्व तथा कंप्यूटर के द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी के संसाधन से हम सब भलीभाँति परिचित है। 'इंटरनेट' के कारण आज हर प्रकार की सूचना संचार संभव हो गया है । सूचनाओं का एक विशाल समुद्र है 'इंटरनेट' । वह दैनिक जीवन में बहुत लाभदायक भी है कि इसके बिना ज़िन्दगी में रुकावट बनेगा ।

४.१.२ सूचना प्रौद्योगिकी एवं हिन्दी

हिन्दी भाषा से वर्तमान स्वरूप तक परिणत होने में सदियाँ लग गई हैं, और कई पीढियों से गुज़रना पडा है । डॉ. विश्वनाथ अय्यर कहते हैं कि – "भाषाएँ विकास के विविध युगों को पारकर वर्तमान रूप धारण कर चुकी है ।" अभी हमारे समाज में सब कहीं टेकनॉलजी का अनुप्रयोग हो रहा है । वह हमारे निजी सामाजिक और व्यावहारिक जीवन से संबन्ध स्थापित कर लिया है । भाषा का अनुप्रयोग सूचना प्रौद्योगिकी के ज़रिए जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है । हिन्दी हमारी जन भाषा है । आज सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से जीवन की हर गति-विधि के साथ जुडने में हिन्दी समर्थ हो गई है । अर्थात् एक संगणकीय भाषा के रूप में हिन्दी का विकास हुआ है । आज गली-गली में इन्टरनेट फैल गया है । रेलवे, बैंक, बीमा और अन्य कार्यालयों में कंप्यूटर के बिना कुछ नहीं चलता है । समाज के हर क्षेत्र में कंप्यूटर से कार्य चल रहा है । स्पष्ट है कि कंप्यूटर से काम और नौकरी के अवसर बढते हैं, काम में सुविधा होती है और घंटों तक किए जानेवाले काम मिनटों में पूरे हो जाते हैं । हर भाषा में कंप्यूटर की सुविधाएँ उपलब्ध हैं । लेकिन आम जनता की भाषा की दृष्टि से हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण है ।

४.१.३ आम जनता के लिए सूचना प्रौद्योगिकी

भारत में वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण और निजीकरण के परिप्रेक्ष्य में यह सोचना अनिवार्य हो गया है कि यदि आम लोगों को इस सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ पहुँचना है तो इसे भारतीय भाषाओं में सुलभ कराना आवश्यक है । आज भारत में अधिकाधिक लोग प्रौद्योगिकी से जुडे कामों में कार्यरत है । हमारे कामकाजों में कंप्यूटरों के बिना कार्य नहीं चलेगा, ऐसी स्थिति आ गई है । आज कंप्यूटर टेक्नोलॉजी सूचना संसाधन और संप्रेषण इंजीनियरी की सबसे ज़्यादा कारगर टेकनोलॉजी सिद्ध हो रही है । आम लोगों के जीवन तक प्रौद्योगिकी का प्रभाव है । कल के उद्योग आज प्रौद्योगिकी से जुड़ गया है । सूचना प्रौद्योगिकी आज आगे की आगे ओर बढ़ रहा है, क्योंकि समाज में मानव के लिए जो कुछ चाहिए वह सभी बातों की जानकारी उससे मिलते है । अब तीव्र गति से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित नए उपकरण, नई नई संकल्पनाएँ और नई व्याख्याएँ सामने आ रही है । इन्टरनेट इसका एक मूल उपकरण है । इसके द्वारा मानव को छोटे-छोटे तथा बडे-बडे कार्य सभी व्यक्तियों को, अन्य स्थानों पर सूचना देने में सहायक होती है। इच्छित सूचना उपलब्ध हो जाने से अपने व्यावसायिक, सामाजिक और वाणिज्यक कार्यकलापों में वृद्धि कर सकते हैं और अपना जीवन स्तर ऊँचा कर सकते हैं । अतः सूचना प्रौद्योगिकी जनकल्याण के लिए है ।

४.१.४ सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न आयाम

शताब्दियों के बाद पहली बार समाज में या जन जीवन में एक ऐसी टेक्नोलॉजी का उत्भव हुआ है, वह हमारे जीवन के हर क्षेत्र में अर्थात् सामाजिक और व्यावहारिक जीवन में प्रवेश पा चुका है । पिछले कुछ दशकों से सूचना प्रौद्योगिकी दैनिक जीवन में परिवर्तन कर

रहा है । इस दिशा में भारत में जो उन्नति हुई है वह अन्य देशों की तुलना में विशेषतः एशियाई देश, अधिक महत्वपूर्ण है । आज सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में अद्‌भुत उपलब्धियाँ प्राप्त हो चुकी है और प्राप्त हो रहा है ।

सूचना प्रौद्योगिकी शब्द आज 'आई.टी' के नाम से प्रचलित हो गया है । 'भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान' की स्थापना हैदराबाद में हुई है । अन्य कई स्थानों पर सूचना प्रौद्योगिकी के संस्थानों की स्थापना की जा रही है । आज कंप्यूटर टेक्नोलॉजी सूचना संसाधन और संप्रेषण इंजीनियरी की सबसे ज़्यादा कारगर टेक्नोलॉजी सिद्ध हो रही है । आज कंप्यूटर टैक्नोलॉजी से जितनी बड़ी क्रांति हमारे सामाजिक या व्यावहारिक जीवन में आई उससे कहीं बडी क्रांति सूचना प्रौद्योगिकी से आई है ।

'सूचना प्रौद्योगिकी' शब्द कानों में गुंजते ही विभिन्न वर्ग के लोग सामने उपस्थित हो जाते हैं । जहाँ प्रशिक्षित युवा पीढी इसे विदेश जाने का अवसर समझती है, वहीं बेरोज़गार युवा इसे रोजगार प्राप्ति का साधन समझते हैं । गत शताब्दी के अंतिम दशकों में सूचना एवं संचार के क्षेत्र में हुई अभूतपूर्व प्रगति के कारण उद्‌भुत सूचना प्रौद्योगिकी नामक विशिष्ट क्षेत्र आज विश्व में अपना जाल फैला चुका है । विश्व का अधिकांश भाग सूचना और सूचना प्रौद्योगिकी की पकड में आ चुका है । सूचना प्रौद्योगिकी की विभिन्न रुपों ने हमारे लिए विकास के नए द्वार खोल दिए हैं । स्थिति यह बन चुकी है कि सूचना प्रौद्योगिकी के अभाव में विकास की संभावनाएँ धूमिल हो चुकी है । सूचना-प्रौद्योगिकी जन्य इस सूचना क्रांति ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में आगे बढाकर प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया है । दैनिक कार्य प्रणाली से लेकर स्वास्थ्य-चिकित्सा, कृषि, बैंकिंग, वाणिज्य-व्यापार, शिक्षा आदि विविध क्षेत्रों

में सूचना प्रौद्योगिकी व्यापक परिवर्तन प्राप्त की जा रही है । समाज के सभी श्रेणी से लेकर साधारण लोगों तक इस ओर आकृष्ट हुआ है । इलैक्ट्रॉनिक वाणिज्य से संबन्धित 'ई-कॉमर्स', कंप्यूटर द्वारा डाक प्रक्रिया संबन्धी 'ई-मेल', चिकित्सा संबन्धी 'ई-मेडिसिन', ऑनलाइन शिक्षा और अधिगम संबन्धी 'ई-एज्यूकेशन', ऑनलाइन सरकारी प्रचालन विषयक 'ई-गार्वेंस', 'ई-बैंकिंग', साधारण मुद्राओं के स्थान पर 'ई-कैश', ई-शॉपिंग, आँकडों का प्रबन्धन, सूचना की पुनः प्राप्ति आदि के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी ने वाणिज्य-व्यापार आदि जीवन के अनेकानेक क्षेत्रों में अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया है ।

४.१.५ सूचना प्रौद्योगिकी में प्रयुक्त हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली

Information Technology का हिन्दी पारिभाषिक शब्द है सूचना प्रौद्योगिकी । सूचना प्रौद्योगिकी के निरंतर विकास के साथ-साथ हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली का विकास भी हो रहा है ।

भारत में भी सूचना प्रौद्योगिकी के महत्व को समझा गया, और जनता के बीच सूचना प्रौद्योगिकी के बिना कुछ नहीं चलता, तथा विभिन्न क्षेत्रों में इसके अनुप्रयोगों का अनुसन्धान करके विकास की गति को अपेक्षाकृत तीव्र किया गया । वास्तव में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं को अधिक उन्नत बनाने के विभिन्न प्रयास सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा कर रहे हैं । आज हमारा जीवन बिलकुल बदल गया है, यह बदलाव छोटे बच्चे तक दिखाई देती है । यह बदलाव का कारण सूचना प्रौद्योगिकी है । अर्थात् निरंतर बदलाव में सूचना प्रौद्योगिकी की अहम् भूमिका है । यह शब्द कोने कोने में मुखरित है ।

सूचना प्रौद्योगिकी शब्द संग्रह में विभिन्न संकल्पनाओं के लिए लोकप्रिय शब्दों को अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के यथावत अपना लिया गया है । जहाँ जहाँ हिन्दी पर्याय के तत्काल चलन की संभावना कम दिखाई दी है, वहाँ हिन्दी पर्यायों के साथ साथ मौजूदा प्रचलित अंग्रेज़ी रुप भी दे दिए गए है । अभी जनता के बीच विभिन्न परिचालक प्रणालियों के लिए अंग्रेज़ी शब्दावली का प्रयोग हो रहा है । उदा :-

Access	–	एकसेस
Excel	–	एकसेल
Pearl	–	पर्ल
Microsoft Office	–	माइक्रोसोफ्ट ऑफिस
SAP	–	सैप
Linux	–	लिनक्स
X-Window	–	एक्स-विंडो

आगे और कुछ भिन्न प्रणालियाँ या शब्द देखिए –

Wizard	–	विजार्ड
Google	–	गूगिल
Chrome	–	च्रोमे
You Tube	–	यू-टूब
Hangouts	–	हाञ्औट्स
Email	–	ई-मेल
Whatsup	–	वाड्सअप
Chat on	–	चाट्ट ऑण
Face book	–	फेस बुक आदि ।

इन्टरनेट संबन्धी तथा कंप्यूटर संबन्धी शब्द अधिकतर अंग्रेज़ी में प्रयोग करते है । लेकिन हिन्दी में उचित शब्दावली भी हे । उदा :-

Software	–	सोफ्टवेयर	–	प्रक्रिया सामग्री
Hardware	–	हार्डवेयर	–	यंत्र सामग्री
Operating System	–	ओपरेटि्टङ सिस्टम	–	परिचालन प्रणाली
Network	–	नेटवर्क	–	जालक्रम
Internet	–	इन्टरनेट	–	अन्तरजाल
Virus	–	वायरस	–	विषाणु
Zoom in	–	ज़ूम इन	–	आकारवर्धन
Analog	–	एनालॉग	–	अनुरूप
Back up	–	बैक-अप	–	पूर्तिकर
Browser	–	ब्राउज़र	–	विचरक
Bar menu	–	बार मेनू	–	स्तंभ प्रसूची
Menu	–	मेनू	–	सूचि
Memory	–	मेमोरी	–	स्मृति
Programme	–	प्रोग्राम	–	क्रमादेश
Server	–	सर्वर	–	परिसेवक
Keyboard	–	की बोर्ड	–	कुंजीपटल
Printer	–	प्रिंटर	–	मुद्रक
Error	–	इरर	–	त्रुटि
Data Processing	–	डाटा प्रोसेसिंग	–	डाटा संसाधन
Card Reader	–	कार्ड रीडर	–	कार्ड पाठक
Computer	–	कंप्यूटर	–	संगणक

Memory Guard	–	मेमोरी गार्ड	–	स्मृति सुरक्ष
Delete	–	डिलीट	–	विलोप
Disc	–	डिस्क	–	वृत्त
Monitor	–	मोणिट्टर	–	प्रपट्ट
Save	–	सेव	–	संचित रखो
Refresh	–	रीफ्रष	–	पुनः दर्शाओ
Cancel	–	कॉनसल	–	निरसन

उपर्युक्त अंग्रेज़ी शब्दों का इतना काफी प्रचार हो चुका है कि एकदम उसके बदले हिन्दी शब्दों का प्रयोग आसान नहीं है । नई पीढी के उपयोग कर्ताओं को यथासमय, यथासंभव हिन्दी शब्दों से परिचित कराने का प्रयास की जाए तो हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग एवं प्रचार इस क्षेत्र में व्यापक हो जाएगा ।

स्वतंत्र देश की अपनी निजी भाषा में पारिभाषिक शब्दों का महत्व एवं उपयोगिता और अधिक हो जाता है, क्योंकि शासन संबन्धी सभी कार्य उसकी अपनी भाषा में होते है । इस दृष्टि से हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली का महत्व बहुत अधिक है । लेकिन अंग्रेज़ी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है । उसके बराबर पारिभाषिक शब्दावली हिन्दी में होने के बावजूद उसका प्रचार उतना नहीं हुआ है । सूचना प्रौद्योगिकी से संबन्धित अधिकतर अंग्रेज़ी शब्द हिन्दी में उसी प्रकार ही इस्तेमाल करते है । लेकिन हिन्दी शब्दों का प्रचार, प्रसार तथा प्रयोग भी कम नहीं है । उदाहरण तो देखिए –

अनुरूप संगणक	–	Anolog Computer
संकेत	–	Code
तंत्रिक केन्द्र	–	Control section

कोड स्मृति	–	Code memory
केन्द्रीय संसाधक	–	Central Processor
आँकडा	–	Data
ऑकडा संसाधन	–	Data processing
साधन	–	Device
डिजिटल विभाजना	–	Digital divide
अधार फलक	–	Disc
आंकिक संगणक	–	Digital Computer
शब्द संसाधन	–	Word Processing

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आवश्यकतानुसार नये शब्द गढने भी पड़ते है। क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी उत्तरोत्तर विकास की गति में है, और पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता बढती जा रही है । यहाँ प्रो. हाइजनबर्ग का कथन उल्लेखनीय है कि – वैज्ञानिक ज्ञान के प्रचार के साथ-साथ भाषा भी विस्तृत होती जाती है । इसमें नये-नये शब्दों का प्रवेश होता जाता है तथा पुराने शब्द अधिक व्यापक क्षेत्र में प्रयुक्त होने लगते हैं । वैज्ञानिक गोष्ठियों में परस्पर विचारों के आदान-प्रदान में, वैज्ञानिकों को अपने विचारों और संकल्पनाओं को प्रकट करने के लिए निश्चित अर्थ देनेवाले और तर्क संगत शब्दों की आवश्यकता होती है ।

कंप्यूटर टेकनोलॉजी का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है । कंप्यूटर और भाषा के बीच दृढ़ संबन्ध है । भाषा अपने कुछ प्रयोजनों के लिए कंप्यूटर का उपयोग उपकरण के रूप में करती है । कंप्यूटर का इस्तेमाल कर हम कई भाषा आधारित कार्यों को अधिक सक्षम ढंग से और बहुत ही कम समय में संपन्न कर सकते हैं, जैसे मुद्रण, टंकण, कोश-निर्माण, भाषा शिक्षण, सूचना संचयन और संपादन आदि ।

हिन्दी के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी कार्य हो रहा है । प्रस्तुत क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी से जुडे हुए पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग चल रहा है । भाषा में ऐसे पारिभाषिक शब्द स्पष्ट, दृढ और सरल होना चाहिए ।

विकास के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी एक नवीन विषय है । सूचना प्रौद्योगिकी शब्द संग्रह में अधिकांश शब्द यौगिक है जो दो या दो से अधिक सार्थक शब्द खण्डों में संधि करके बनाये गये है । देवनागरी लिपि में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है । कंप्यूटर के लिए हिन्दी पारिभाषिक शब्द अभी अधिकाधिक उपलब्ध है । कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में हिन्दी भाषा का इस्तेमाल करना आज कठिन कार्य नहीं है । कंप्यूटर या इन्टरनेट के लिए सामग्री का विकास करते समय चयन, प्रस्तुतीकरण और भाषा शैली आदि तीन बातें ध्यान देना ज़रुरी है । यहाँ पारिभाषिक शब्दावली की ज़रुरत पडता है । क्योंकि बेबसाईट का उपयोग करते समय अत्यंत सुबोध, आकर्षण तथा जटिल भाषा शेली की आवश्यकता है । नहीं है तो बेबसाईट छोडकर लोग जाने की संभावना है । इसलिए कहा जा सकता है कि सूचना प्रौद्योगिकी में भाषा का स्थान महत्वपूर्ण है । हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण विशेषज्ञों, संस्थाओं द्वारा चल रहा है । हिन्दी भाषा में लोग ई-मेल (E-mail) भेजती है, चैट (chat), ई-बैंकिंग (E-Banking), ई-वाणिज्य (E-Commercial), ई-प्रशासन कार्य (E-Administration) भी सुचारू ढंग से करते है । Password, online, on, off, website, network आदि शब्दों का प्रयोग अंग्रेज़ी में ही करते हैं ।

अंग्रेज़ी शब्द Refresh हिन्दी में इसे पुनः दर्शओ या तरोताजा करना (make cool again) कहता है । इसका भिन्न प्रयोग है । उदा :-

Refresher – पुनर्बोधक, पुनश्चर्या

Refresher training – पुनश्चर्या प्रशिक्षण

Refreshment – जलपान, विश्रांति

कंप्यूटर की पारिभाषिक शब्दावली आज सुलभ है । उदाहरण देखिए –

Access time – अभिगम्यताकाल

Alphanumric – अकांक्षरीय

Anolog Computer – अनुरूप संगणक

Binary – द्धि-आधारी

Central Processor – केन्द्रीय संसाधक

Chip – चिप्पड

Compile – संकलन

Compiler – संकलन कर्ता

Debug – डिबग

Digital Computer – अंकिक संगणक

Error – त्रुटि

Hard Copy – कठोर प्रति

Impact Printer – इम्पैक्ट प्रिंटर

Storage – भण्डारण

Magnetic Code Storage– चुम्बकीय कोड भण्डार

Main frame – मैन फ्रेम

Memory Unit – स्मृति इकाई

Primary Memory – प्राथमिक स्मृति

Secondary Storage	–	द्वितीय भण्डारण
Utility Programme	–	उपयोगिता प्रोग्राम
User Interface	–	प्रयोक्ता अंतरापृष्ठ
User group	–	प्रयोक्ता समूह
Update	–	अद्यतन
User	–	प्रोक्ता
Upgrade	–	स्तर उन्नयन
Verify	–	सत्यायन
Voice Messaging	–	ध्वनि सन्देश
Volume	–	आयतन
Wall Paper	–	पार्श्व चित्र
Wireless Communication	–	बेतार-संचार
Wizard	–	निपुण

कार्यालयों में हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का प्रयोग चला रहा है । मूल भाषा अंग्रेज़ी के समतुल्य हिन्दी शब्दों का प्रयोग बहुत आसानी से समझ में आयेगा । जिन आदि कोशकारों ने इन शब्दों का निर्माण किया था, वे अंग्रेज़ी और हिन्दी – दोनों भाषाओं के प्रकांड विद्धान रहे हैं । वे प्रशासन और अध्यापन दोनों प्रकार से अनुभवी भी रहे हैं । इसी कारण से हिन्दी के कई साहित्यकारों और आचार्यों को शब्दावली की निर्माण समितियों में सदस्य बनाकर उनकी सेवाएँ ली गई थी । उन्हीं के योगदान के फलस्वरुप व्यावहारिक और सामाजिक के अनुकूल सभी ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रों में अनगणित पारिभाषिक शब्दों का निर्माण हुआ ।

४.२ जनसंचार माध्यम

विभिन्न समाचारों, सूचनाओं और विचारों आदि को जनसाधारण तक पहुँचाने में सहायक माध्यम है जन संचार माध्यम । इसके अंतर्गत पत्र-पत्रिकाएँ, आकाशवाणी, दूरदर्शन, दूरभाषा, फिल्म, पत्रक, समाचार पत्र, पोस्टर, कंप्यूटर तथा संचार संप्रेषण के सभी साधन आदि आते हैं । आज के वैज्ञानिक युग में जनसंचार के उपर्युक्त माध्यमों का विकास हुआ है । जनसंचार का उचित उपयोग या प्रयोग आज अनिवार्य होता है । संचार (communication) व्यक्ति तथा समाज की सहज प्रवृत्ति है । इसके बिना सामाजिक जीवन में स्थिरता असंभव है।

अपनी इच्छाओं, भावों, विचारों का आदान-प्रदान आदिम युग से हो रहा है । आरंभ में हावभाव, संकेत-चिह्न आदि के द्वारा यह संचार क्रिया हुआ करती थी । भाषा का आविष्कार तथा सांस्कृतिक विकास के साथ यह क्रिया विभिन्न रूपों में तथा प्रभावी ढंग से प्रकट होती रही है । एक विशिष्ट संस्थान के व्यक्तियों में तथ्य, आदर्श, भावों, विचारों के द्विपक्षीय आदान-प्रदान की यह क्रिया समाचार-पत्र, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के आविष्कार और प्रसार के साथ अपने उद्देश्य तथा व्याप्ति के धरातल पर विस्तृत होती गई । संचार का यह विकसित-विस्तृत रूप है जन संचार । यहाँ स्पष्ट भाषा की आवश्यकता है, पारिभाषिक शब्दों की अनिवार्यता है । जन-संचार माध्यम के अंतर्गत अनेक प्रकार के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग चल रहा है ।

४.२.१ जनसंचार माध्यम का स्वरूप

जनसंचार अंग्रेज़ी में Mass Communication कहते है । वह काफी पुरानाी है । संचार जीवन की अनिवार्य प्रक्रिया है । वह दो व्यक्ति या समूह के बीच संचरित होता है।

वस्तुतः संचार एक सहज प्रवृत्ति है । संक्षेप में कहे तो जनसंचार माध्यम आज सभी के लिए मूलभूत सामाजिक और व्यावहारिक आवश्यकता बन गयी है ।

४.२.१.१ जनसंचार का अर्थ

संचार शब्द का अर्थ है[1] गति, गमन, यात्रा, वह सम् +चर् +घञ् से बने है । संचार शब्द के लिए लेटिन भाषा में कम्युनिस (communis) शब्द का प्रयोग होता है । इस शब्द का अर्थ होता है – "किसी वस्तु या विषय का सबके लिए साझा होना ।" Communis शब्द ही अंग्रेज़ी भाषा में communication बना । संस्कृत में संचार के लिए 'चर' धातु का प्रयोग होता है । 'चर' का अभिप्राय है – 'चलना', 'आगे बढ़ना', 'फैलाना' । इधर, communication शब्द का अर्थ होता है – वह प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी भाव, विचार या जानकारी को हम दूसरों तक पहुँचाते हैं । इसे अंग्रेज़ी में Mass Communication कहते हैं ।

४.२.१.२ परिभाषाएँ

विभिन्न विद्वानों ने संचार के लिए कुछ परिभाषाएँ दी गयी हैं । वे इस प्रकार हैं –

(क) डॉ. जेम्स, एस. मूर्ति का कहना है कि, "संचार का अभिप्राय अपने भाव, विचार या संदेश की उस अभिव्यक्ति, आदान-प्रदान या संप्रेषण से है, जो प्राप्तकर्ता में प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं ।"[2]

---

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका - कैलाशनाथ पाण्डेय - पृ. ३०१-३०२
2. दृश्य-श्रव्य संप्रेषण और पत्रकारिता - डॉ. जेम्स, एस. मूर्ति - पृ. ९

(ख) पत्रकार प्रेम विज संचार को रुपायित करते हुए लिखते हैं कि "संचार का अर्थ विचारों और संदेशों को जनता तक पहुँचाना हैं ।"[1]

(ग) डॉ. हर्षदेव के अनुसार, "संचार इस विश्व का ऐसा सत्य है, जो प्राणी मात्र ही नहीं, पेड-पौधों में भी विद्यमान हैं ।"[2]

(घ) थ्यू हेमैन का विचार है कि "Communication means the process of passing information and understanding from one person to another" अर्थात् "संचार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सूचनाएँ एवं समझ हस्तान्तरित करने की प्रक्रिया है ।"[3]

कैलाशनाथ पाण्डेय का विचार हैं कि "संचार एक व्यक्ति के मस्तिष्क को दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क से जोड़ने वाला पुल है । इसके भीतर कहने, सुनने तथा समझने की एक व्यवस्थित एवं अनवरत प्रक्रिया सम्मिलित है ।"[4]

४.२.२ जनसंचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग

आज के निजीकरण, बहुराष्ट्रीयकरण और बाज़ारीकरण के दौर में हिन्दी भाषा संचार संदेश की मुख्य भाषा बनने में सफल है । लेकिन हिन्दी भाषा के इतिहास से हमें यह समझेगा कि हिन्दी में संप्रेषण का सिलसिला बहुत ही पुराना है । आज यह संचार की भाषा है, संवाद की भाषा है, बाज़ार की भाषा है, मीडिया की भाषा है, संपर्क की भाषा है । यह सच है

---

1. जनसंचार - (सं) डॉ. राधेश्याम शर्मा (प्रेम विज का लेख) - पृ. १४०
2. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक - डॉ. हर्षदेव - पृ. ११
3. Reporting - Theo Haiman - Rinehart and Wiston Inc. New York - P. 81
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका - कैलाशनाथ पाण्डेय - पृ. ३०४-३०५

कि भाषा के बिना जनसंचार का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता । समय के साथ-साथ जनसंचार माध्यमों के रूप में परिवर्तन हो रहा है । इसलिए जनसंचार के सभी संसाधनों के लिए हर युग में किसी न किसी भाषा का उपयोग अनिवार्यतः होता आया है ।

हिन्दी भाषा संचार भाषा के रूप में बहुत प्राचीन से ही पर्याप्त मात्रा में उचित ढंग से कार्य कर रहा है । समाचार पत्र, हिन्दी सिनेमा द्वारा हिन्दी की प्रयोग जनसंचार के माध्यम के क्षेत्र में फैल रहा है । कुछ पारिभाषिक शब्द इस प्रकार है –

Call letter	–	मांग पत्र
Agreement	–	समझौता
Demand bill	–	मांग की हुंडी
Goods	–	माल
Amendment	–	संशोधन
Cash	–	रोकड
Category	–	श्रेणी, वर्ग
Certificate	–	प्रमाण पत्र
Commercial	–	व्यावसायिक
Committee	–	समिति
Communication	–	संप्रेषण
Cost price	–	लागत मूल्य
Date	–	दिनांक, तारीख
Dated	–	दिनांकित
Delivery	–	वितरण
Due date	–	नियत तिथि
Editor	–	संपादक

Explanation	–	स्पष्टीकरण
Fair price	–	उचित मूल्य
List	–	सूची
Most urgent	–	अत्यावश्यक
Publicity	–	प्रचार

माध्यमों के विकास के इस युग में हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली का महत्वपूर्ण स्थान है । नये-नये शब्दों का विकास, प्रयोग, नये शब्दों का निर्माण आदि कार्य भी महत्वपूर्ण है । उपर्युक्त शब्दों का प्रयोग प्रसार करना अनिवार्य है, क्योंकि माध्यमों के प्रचार कार्य में आज अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग देखा जा सकता है ।

४.२.३ हिन्दी पारिभाषिक शब्द और जनसंचार माध्यम

सामान्यतः जनसंचार माध्यम तीन शब्दों के योग से बना है –पहला शब्द है जन, दूसरा संचार और तीसरा शब्द माध्यम । जन का अर्थ है जनता । सामान्य भागीदारीयुक्त सूचना और संप्रेषण है संचार शब्द । संचार भावों या विचारों को बाँटने और प्राप्त करने की प्रक्रिया है । यह एक ऐसा प्रयास है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विचारों, भावों और मनोवृत्तियों में सहभागी होता है । माध्यम शब्द का अर्थ है उपकरण या साधन । अतएवं जनसंचार माध्यम का सामान्य अर्थ है जनता के भावों या विचारों को संप्रेषित करने वाला साधन या उपकरण । दूसरे शब्दों में यह साधन जो जनता के विचारों के आदान-प्रदान में सहायक सिद्ध होता है वह जनसंचार मााध्यम कहलाता है । जन साधारण तक संदेश पहुँचाने के लिए भाषा की प्रधानता है । वह भाषा साधारण से भिन्न होकर पारिभाषिक हो । ऐसे कुछ शब्द है –

Publicity	–	प्रचार

Signature	–	हस्ताक्षर
Summary	–	सारांश
Translator	–	अनुवादक
Code	–	संहिता
Enquiry	–	पूछताछ
Immediate	–	अविलम्ब
Mobilisation	–	संग्रहण
Transaction	–	लेन-देन

जनसंचार माध्यम के अंतर्गत अनेक बातें आते हैं । इन सभी बातों में मानव का जीवन प्रभावित करता है । प्रस्तुत क्षेत्र में पारिभाषिक शब्दावली की प्रस्तुति उल्लेखनीय है ।

हिन्दी के शब्द 'जनसंचार माध्यम' के लिए अंग्रेज़ी में बहुप्रचलित शब्द है Mass Communication । समाज के हर बातें प्रकट करने के लिए प्रयुक्त माध्यम है जनसंचार माध्यम । मानव के बीच संबन्ध रखने के लिए भाषा महत्वपूर्ण है । यहाँ पारिभाषिक शब्दावली की सार्थकता होती है। आज इलेक्ट्रानिक माध्यम से हिन्दी को बाज़ार की, संचार-संदेश की मुख्य भाषा बनाने में पारिभाषिक शब्दावली का योगदान महत्वपूर्ण है लेकिन हिन्दी भाषा के इतिहास में हिन्दी संप्रेषण का माध्यम बहुत पुराना है । हिन्दी आज अपनी दृष्टि से सभी माध्यमों के लिए उन्नत और मदद करनेवाली भाषा है । वास्तव में यह संचार की भाषा है । अर्थात् हिन्दी संवाद की भाषा है बाज़ार की भाषा है और मीडिया की भाषा है । ऐसी संपर्क भाषा के बिना जनसंचार का क्षेत्र धीमी हो जायेगा । उन क्षेत्रों में संचार के लिए पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना आवश्यक है । क्योंकि माध्यमों के क्षेत्र में सरल, दृढ भाषा की अनिवार्यता है । माध्यम

के क्षेत्र में उपयोग करनेवाली हिन्दी पारिभाषिक शब्द सुलभ है लेकिन प्रयोग करनेवाले लोग आसानी से अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग करते हैं । उदा :-

News	–	समाचार
Report	–	प्रतिवेदन
Market Value	–	बाज़ार मूल्य
Bill	–	बिल, विधेयक
Block	–	खण्ड

वास्तव में हिन्दी भाषा बहुत पुराने में भी जन संचार माध्यमों के क्षेत्र में अपना नाम बना लिया था । सूचना तकनीकी की इस दौर में हिन्दी को सशक्त संचार भाषा के रुप में नया रुप मिला है । इलेक्ट्रोनिक संचार माध्यमों के विकास भाषा के बिना नहीं की जा सकती । इस दृष्टि से भाषा का विकास भी संचार माध्यमों के विकास के साथ होता चलता है, तब नये-नये शब्दों का उत्भव भी होगा । जनसंचार माध्यमों के अंतर्गत आनेवाली समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन, इन्टरनेट आदि सभी संचार माध्यमों ने हिन्दी को जन संचार भाषा का रुप दिया है ।

४.२.४ जनसंचार माध्यम का क्षेत्र

जनसंचार के अंतर्गत अनेक माध्यमों का हेलमेल है । जनसंचार के इन समस्त माध्यमों का मुख्यतः तीन विभागों में बाँटा जा सकता है । वह इस प्रकार है ।

(क) शब्द संचार माध्यम (Print Media)

(ख) श्रव्य संचार माध्यम (Audio Media)

(ग) दृश्य संचार माध्यम (Video Media)

इन तीनों के अन्तर्गत भिन्न भिन्न माध्यमों का चयन है ।

(क) शब्द संचार माध्यम

इसे मुद्रण माध्यम (Print Media) भी कहलाता है । इसके अन्तर्गत समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, जर्नल, पोस्टर और पुस्तकें आदि आते हैं ।

(ख) श्रव्य संचार माध्यम

अंग्रेज़ी में इसे Audio Media कहता है । इसके अंतर्गत रेडियो, ओटियो, टेलिफोन, कैसेट, मोबाइल फोन और टेपरिकार्डर आदि आते हैं ।

(ग) दृश्य संचार माध्यम

इसे अंग्रेज़ी में Video Media कहता है । इसके अंतर्गत दूरदर्शन, वीडियो, फिल्म, इन्टरनेट तथा कंप्यूटर आदि आते हैं। आज दृश्य माध्यमों के पीछे चलने वाले लोग अधिक है। वर्तमान युग ही दृश्य माध्यमों से निर्भर है । इन सबकी चाल संचयन के लिए भाषा की ज़रूरत है । सरल, सुदृढ, स्पष्ट भाषा के लिए पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता है। यहाँ जनसंचार माध्यमों में पारिभाषिक शब्दावली का महत्व बढ़ रहा है ।

४.२.५ जनसंचार माध्यम और हिन्दी

भारत में जनसंचार (Mass Communication) बहुत प्राचीन काल से है । श्री पी.एन. मल्हन[1] ने भारत की संचार व्यवस्था को महर्षि नारद तथा संजय जैसे चरितों से जोड़कर

---

1. Communication Media - Yesterday, Today and Tomorrow - P.N. Malhan - P. 15

मौर्यवंश तथा मध्यकालीन भारत की संचार व्यवस्था का विस्तार से वर्णन किया है । संप्रेषण (Communication) की आवश्यकता मनुष्य को उसी भाँति है, जिस भाँति भोजन और पानी। संप्रेषण एक अत्यन्त व्यापक अवधारणा है, जिसमें मनुष्य द्वारा अभिव्यक्ति के सभी प्रकार के माध्यम - शब्द, चित्र, संगीत, अभिनय, मुद्रण आदि समाहित किए जा सकते हैं ।[1] सच तो यह है कि संचार भी उतना पुराना है, जितना पुराना मानव । संचार जीवन की धूप, हवा, पानी जैसी अनिवार्यता है । चाहे केवल दो व्यक्तियों के बीच हो या व्यक्ति समूहों के बीच – संचार सभी की आवश्यकता है। लोग सदा संचाररत रहते हैं, संचार के लिए भाषा प्रधान कडी है । भाषा के उपयोग करते समय भाषा सरल, दृढ और सीमित अर्थ में हो । पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग यहाँ उचित होता है ।

४.२.६ जनसंचार एवं पारिभाषिक शब्द

हिन्दी संचार भाषा के रुप में बहुत पहले से ही प्रयोग किया जा रहा था । सूचना तकनीक से ही हिन्दी को सशक्त संचार भाषा के रूप में नया उभार और रूप मिला है । वस्तुतः इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों के विकास की कल्पना भाषा के बिना नहीं की जा सकती । इस दृष्टि से भाषा का विकास भी संचार माध्यमों के विकास के साथ होता चलता है, जिससे नए-नए अर्थ, नई-नई शैलियाँ भाषा के कोष में जुडती है । रेडियो, दूरदर्शन, कंप्यूटर, इन्टरनेट, दूरसंचार, माध्यमों - फैक्स, टेलीफोन, विज्ञापन तथा फिलमों आदि संचार माध्यमों ने हिन्दी को जनसंचार भाषा का नया रुप दिया है । उपर्युक्त शब्दों के लिए बराबर हिन्दी शब्द आज सुलभ

---

1. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम - डॉ. संजीव भानावत - पृ. १५२

है । उदाः-

रेडियो	–	आकाशवाणी
टेलिविषन	–	दूरदर्शन
कंप्यूटर	–	संगणक
इन्टरनेट	–	अन्तर्जाल
टेलिकम्यूनिकेशन	–	दूरसंचार
टेलिफोन	–	दूरभाष
फिल्म	–	सिनेमा

आज जनसंचार भाषा के रूप में हिन्दी घर-घर पहुँची है । एक ओर विज्ञापनों की भाषा के रूप में हिन्दी शब्द का स्वरूप और क्षेत्र अत्यन्त व्यापक हुआ है, हिन्दी की एक निजी शब्दावली और निजी वाक्य संरचना विकसित हुई तो दूसरी ओर देश में डॉट कॉम क्रांति के शुरु होते ही जनसंचार भाषा के रूप में हिन्दी को नया आयाम मिला । इन्टरनेट की भाषा बनते ही कंपनियों की आय बढ़ गई । हिन्दी भी जनसंचार भाषा के रूप में इनकी ज़रूरत बन गयी। रेडिया, दूरदर्शन और दूरसंचार ने भी हिन्दी को प्रभावशाली जनसंचार भाषा का रूप दिया है । हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली का उपयोग इस क्षेत्र में संचालन की सुविधा के लिए सहायक है । ऐसे कुछ शब्द है –

परम्परागत जन संचार माध्यम	–	Traditional Mass Media
विद्युत संचालित माध्यम	–	Electronic Media
संकलन	–	Documentation
संप्रेषक	–	Communicator
प्रभाव	–	Effect

अवसर	–	Occasion
गंतव्य	–	Destination
श्रोता	–	Audience
भाषण	–	speech
चयनित सूचना	–	Selection Information
वक्ता	–	Speaker
प्रतिपुष्टि	–	Feed back
संदेश	–	Message
बुनियादी	–	Basic
हितग्राही	–	Receiver
प्रतिरुप	–	Model

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का महत्वपूर्ण स्थान ही है । डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते हैं कि विभिन्न विषयों की अभिव्यक्ति के लिए पारिभाषिक शब्द बडे ही महत्वपूर्ण होते है । जनसंचार के सभी माध्यमों ने विश्व में फैली समस्त मानव जाति जीवन को प्रभावित किया है । जनसंचार के माध्यमों द्वारा जनमत का निर्माण भी सहज संभव होता है । आधुनिक युग में तथा जन-संचार हेतु समाचार-अभिकरणों (News Agencies) का महत्व बडा है । इसके साथ पारिभाषिक शब्दों का महत्व बढ़ रहा है । इससे जुड़ी हुई अनेक शब्द हमें सुलभ है । उदा :-

Precis	–	संक्षेपण
Expersion	–	विस्तारण
Display video unit	–	दृश्यपटल
Abstract	–	सार / सारांश

Channel	–	माध्यम / सरणि
Direction	–	निदेश / निर्देशन
Edition	–	संस्करण
Face Value	–	अंकित मूल्य
Marketing	–	विपणन
www	–	विश्वव्यापी मकडजाल
Publication	–	प्रकाशन
Report	–	प्रतिवेदन

जनसंचार के माध्यमों द्वारा उद्देश्य की प्राप्ति में शब्द की अपनी एक अहम् भूमिका होती है । जनसंचार के माध्यमों का संप्रेषण जनसामान्य के लिए होता है । संचार माध्यमों की भाषा में कभी-कभी ऐसे शब्दों का प्रयोग भी होता है जिनसे भाषा की गतिशीलता के साथ साहित्यिक संदर्भ की शब्दावली का प्रयोग होता है । जनसंचार के माध्यम के रूप में हिन्दी का प्रयोग कोई नई बात नहीं है परन्तु स्वतंत्रता के बाद हिन्दी भाषा का प्रयोग राजभाषा तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी आदि के रूप में निरन्तर विकासमान है ।

हिन्दी के पास विभिन्न क्षेत्रों की, ज्ञान-विज्ञान की शब्दावली का जो तैयार भण्डार है, वह कई विसंगतियाँ लिए हुए है । विभिन्न शब्दकोश पारिभाषिक कोषों के माध्यम से तैयार हिन्दी शब्दावली ऐसी नहीं है कि वह संचार माध्यमों के द्वारा प्रस्तुत होनेवाली प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप ग्रहण सके । जनसंचार की भाषा के रूप में हिन्दी अपनी निर्माण की प्रक्रिया में है । जनसंचार के माध्यमों के लिए हिन्दी शब्दावली को विषय के अनुरूप चुनना पड़ता है । अत: अनेक संदर्भों में शब्दावली का स्वरुप भी देखने को मिल जाता है ।

४.३ सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यमों के क्षेत्रों में प्रयुक्त होनेवाले हिन्दी पारिभाषिक शब्द : एक विश्लेषण

विश्लेषण की सुविधा की दृष्टि से सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यमों के क्षेत्र में जिन शब्दों का प्रयोग हो रहा है उनका स्रोत की दृष्टि से वर्गीकरण करना उचित लगता है । क्यांकि हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के विकास में संस्कृत, अरबी और फारसी की विशेष भूमिका रही है । अंग्रेज़ी से भी ज़्यादातर शब्दों का ग्रहण किया गया है ।

इन दोनों क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण पारिभाषिक शब्दावली संबन्धी सरकार की नीति जो है इसके आधार पर हुआ है । संस्कृत के तत्सम शब्द के अलावा अंग्रेज़ी शब्दों का लिप्यंकन या लिप्यंतरण करके मुख्यत: सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपयोग हो रहा है । जनसंचार के क्षेत्र में काफी मात्रा में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हो रहा है। जनसंचार ज़ान की एक अद्यतन शाखा है, जो पारिभाषिक शब्दों के बिना आगे नहीं चलता । जनसंचार में प्रकाशन, प्रसारण और संप्रेषण का कार्य होता है । दोनों क्षेत्रों के पारिभाषिक शब्दों का वर्गीकरण स्रोत के आधार पर निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है ।

१. संस्कृत से आये शब्द
२. हिन्दी के अपने शब्द
३. अंग्रेज़ी के शब्द
४. अन्य प्रकार के शब्द ।

४.३.१ संस्कृत से आये शब्द

सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में एक बडी सीमा तक एकरूपता होती है । इसका कारण या तो भारतीय भाषाओं का स्रोत संस्कृत है या वे संस्कृत से प्रभावित है । हिन्दी

में संस्कृत शब्दों का तत्सम रूप पारिभाषिक शब्दों के रूप में प्रयुक्त होते हैं । उदाहरण देखिए –

मंच निर्देशक	–	Floor Manager
संस्करण	–	Edition
संपादक	–	Editor
भेंटवार्ता	–	Interview
संवाददाता	–	Correspondent
संपादकीय	–	Editorial
पत्रकार सम्मेलन	–	Press Conference
पत्रकार	–	Journalist
चल पत्रकार	–	Mobile Journalist
बहुमात्र उत्पादन	–	Mass Production
जन-वितरण	–	Mass Distribution
मुद्रित शब्द	–	Printed word

ये शब्द जनसंचार से जुडे हुए परंपरागत शब्द है । उपर्युक्त शब्द, प्रचार एवं अर्थ बोध की दृष्टि से उचित है । जो संस्कृत के शब्द होने के बावजूद हिन्दी सहित प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में प्रचलित है । आगे कुछ उदाहरण भी देखिए –

संक्षिप्त	–	Abbreviated
निरपेक्ष	–	Absolute
वास्तविक	–	Actual
प्रशासन	–	Administration
विनिमय	–	Regulation

सहायक	–	Assistant
नियुक्त	–	Appointment
मूल्य	–	Value
नवधनी	–	Upstart
प्रक्रिया	–	Process
प्रगति / उन्नति	–	Progress
सार	–	Essence
अंतराल	–	Interview
निरीक्षण	–	Observation
संरचना	–	Structure
पृष्ठ	–	Page
प्रक्रिया सामग्री	–	Software
यंत्र सामग्री	–	Hardware
परिचालन प्रणाली	–	Operating system
शब्द संसाधन	–	Word Processing
प्रविधि	–	Technique
समर्थन	–	Uphold

डॉ. रघुवीर ने संस्कृत मूल धातु से कई शब्दों का निर्माण किया । उन्होंने पारिभाषिक शब्द के निर्माण और चयन में संस्कृत को मूलाधार स्रोतीय भाषा माना और संस्कृत शब्दों की उपयोगिता हिन्दी और हिन्दीतर भारतीय भाषाओं के लिए समान रुप से स्वीकृत की। शब्दावली आयोग ने भी यही नीति अपनाई । उदा :-

संकलन	–	Compilation
प्रेषण	–	Despatch

अप्रयोग्य	–	Not applicable

४.३.२ हिन्दी के अपने शब्द

इस वर्ग में देशी शब्दों के अलावा अंग्रेज़ी के अनुरुप निर्मित हिन्दी शब्द भी आते हैं । यानी अंग्रेज़ी में जो पारिभाषिक शब्द प्रचलित है, उन्हीं का हिन्दी रुपान्तरण हिन्दी में आ गया है । हिन्दी में पारिभाषिक या कामकाजी शब्दावली की संरचना का आधार प्रधानतया अंग्रेज़ी ही रही है । क्योंकि भारतीय संविधान के प्रावधान के अनुसार अंग्रेज़ी ने सह-राजभाषा के रुप में मान्यता प्राप्त कर, हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों की अर्थ व्यंजनागत संरचना में गणनीय योगदान दिया । अंग्रेज़ी की अर्थसंगत विविधता हिन्दी में भी आई । लेकिन हिन्दी शब्दों के निर्माण में संस्कृत का सहारा लिया गया है ।

देशी शब्द :–

नुक्कड़ (नाटक)	–	Street (Play)
समाचार	–	News
समाचार पत्र	–	Newspaper

अंग्रेज़ी के अनुरुप निर्मित शब्द :–

विज्ञापन	–	Advertisement
उद्घोषणा	–	Announcement
विनिवर्तन	–	Withdrawal
निःशुल्क	–	Free
विनिमय	–	Exchange

प्रलेखीकरण	–	Documentation
समादेश	–	Comment
प्राधिकारी	–	Authority
अधिनियम	–	Act
गतिविधि	–	Activity
कार्यवाई	–	Action
अनुकूलनीय	–	Adaptable
श्रव्य	–	Audible
मण्डल	–	Board
संक्षिप्त	–	Brief
निर्माता	–	Producer
समाचार	–	News
संपादक मंडल	–	Editorial Board
विशेष संवाददाता	–	Special Correspondent
धारावाहिक	–	Serial
प्रायोजित कार्यक्रम	–	Sponsored programme
वर्गीकृत विज्ञापन	–	Classified advertisement
स्तम्भ	–	Column
समन्वयक	–	Co-ordinator
संयोजक	–	Convenor
समाचार समिति	–	News Agency

निर्देशन	–	Direction
सदस्य	–	Member
उपक्रम	–	Undertaking
ई-प्रशासन कार्य	–	E-Administration
ई-प्रशासन	–	E-Administration
ई-वाणिज्य	–	E-Commercial

हिन्दी के अपने शब्दों का प्रयोग पारिभाषिक शब्दों के रूप में हिन्दी में ही प्रयुक्त होते हैं। अत: सरकार की यह नीति रही कि जिन शब्दों का यदि कोई पर्यायवाची शब्द संस्कृत मेल से न मिले और अन्य भारतीय भाषाओं में वे उसी अर्थ में या प्रचलित रूप में उपलब्ध हो तो ऐसे शब्दों को किसी भी कारण से हिन्दी में अपनाया जाए।

४.३.३ अंग्रेज़ी के शब्द

जब हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों का अभाव होता है अथवा हिन्दी शब्द की लोकप्रियता कम है, शब्दों की कमी होते है तब हम अंग्रेज़ी शब्दों को लिप्यंकन या लिप्यन्तरण (Transliteration) करके उपयोग करते हैं । उदा :-

न्यूज़ ब्यूरो	–	News Bureau
ए बी सी	–	ABC
ज़ूम	–	Zoom
आनिमेषन	–	Animation
मॉडेम	–	Modem
रेडियो	–	Radio

ट्राष	–	Trash
अन्डू	–	Undo
युनीक्स	–	Unix
वेब ब्राउज़र	–	Web Browser
याहू	–	Yahoo
टेलिफोण	–	Telephone
मोबइल फोन	–	Mobile Phone
टेलिविज़न	–	Television
फैक्स	–	Fax
ग्राफिक्स	–	Graphics
डब्बिंग	–	Dubbing
शूटिंग	–	Shooting
रिहर्सल	–	Rehersal
कट	–	Cut
कमेंटरी	–	Commentary
मल्टीमीडिया	–	Multimedia
टेक्स्ट	–	Text
वीडियो	–	Video
ओडियो	–	Audio
न्यूज़ सेंस	–	News Sense
लॉग बुक	–	Log book

एनाउसर	–	Annoucer
डायरेक्टर	–	Director
एडिटोरियल पेज	–	Editorial Page
एडिटिंग	–	Editing
स्टाफर	–	Staffer
स्ट्रिंजर	–	Stringer
इंटरनेट	–	Internet
कंप्यूटर	–	Computer
अपलोड	–	Upload
बुलेटिन	–	Bulletin
डेटाबेस	–	Database
लाइन	–	Line
ऐडोब	–	Adobe
एरीयल	–	Aerial
ई-मेल	–	E-mail

सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यमों के क्षेत्र में संस्कृत के अनेक शब्दों को पारिभाषिक शब्द के रूप में स्वीकार किया गया है, किन्तु उन शब्दों का प्रयोग बहुत कम होता है । उन शब्दों के स्थान पर अग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग चलता है । क्योंकि उपयोग की दृष्टि से अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग बहुत लोकप्रिय बन गया है । हिन्दी शब्दों का प्रचार एवं प्रसार इन क्षेत्रों में धीरे धीरे बढने की संभावना है । क्योंकि हिन्दी राजभाषा है, इसी तरह हिन्दी को भी विश्वमान्य

बनाने के उद्देश्य से शब्दावली के निर्माण में अन्य देशों की भाषाओं से भी प्रचलित शब्दों को स्वीकार करने की नीति भारत सरकार के द्वारा अपनाई गई है ।

४.३.४ अन्य प्रकार के शब्द

फारसी, अरबी, उर्दु, मराठी, राजस्थानी, हिन्दी और कन्नडआदि प्रमुख भाषाई शब्द इस वर्ग में है । जिनकी शब्दावली का प्रभाव हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली में है । सरकारी आयोग द्वारा राजभाषा हिन्दी को समृद्ध करने के प्रयास में अन्य भाषाओं से भी कई शब्दों का स्वीकार किया है । उदा :-

औसत (अरबी)	–	Average
अकादमी (अरबी)	–	Academy
शाखा (फारसी)	–	Branch
अकादमिक (अरबी)	–	Academic
वर्तनी (राजस्थानी हिन्दी)	–	Spelling
जगह (उर्दु)	–	Place
बकाया (अरबी)	–	Arrears
रद्द करना (अरबी)	–	Cancel
पेशगी (उर्दु)	–	Advance
सिफारिश (उर्दु)	–	Recommendation
आमदनी (उर्दु)	–	Earnings
निवल (कन्नड)	–	Net

सौध (कन्नड)	–	Annex
पावती (मराठी)	–	Acknowledgment
आवक (मराठी)	–	Inward
जावक (मराठी)	–	Outward

उपर्युक्त शब्दों का प्रचार हिन्दी में है । सरकारी आयोग द्वारा राजभाषा हिन्दी को समृद्ध करने के प्रयास में अन्य भाषाओं से भी कई शब्दों को स्वीकारा गया है ।

संक्षेप में प्रस्तुत चार स्रोतों से हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण जो हुआ है वह बिलकुल वैज्ञानिक एवं सही है । लोकप्रियता की दृष्टि पर ध्यान रखते हुए प्रस्तुत शब्दों का विश्लेषण करने पर संस्कृत शब्दों के प्रचार प्रसार में उतनी तीव्र गति नहीं मिली है जितनी अपेक्षित है । लोकप्रिय अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग व्यावहारिक माना जा सकता है । सूचना प्रौद्योगिकी एवं जनसंचार माध्यमों के क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का प्रयोग सरकारी की नीति के अनुसार अंग्रेज़ी के माध्यम से होता है। अतः इन दोनों क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों की समस्या उतनी जटिल नहीं।

उपसंहार

पारिभाषिक शब्द से तात्पर्य ज्ञान विज्ञान के ऐसे शब्दों से हैं जो विषय विशेष की सीमा में परिभाषित किए जा सकते हैं । हर विकसित भाषा में ज्ञान-विज्ञान की प्रत्येक शाखा में अपनी-अपनी पारिभाषिक शब्दावली होती है ।

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली की परंपरा काफी पुरानी है । लेकिन व्यवस्थित रुप से पारिभाषिक शब्दों का निर्माण एवं व्यापक उपयोग स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ही शुरु हुआ । स्वतंत्रता पूर्व भारत में अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग ज्ञान-विज्ञान एवं प्रशासन के क्षेत्र में हो रहा था । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस दिशा में विशेष कदम उठाए गए । फलस्वरुप आज हिन्दी में परिमार्जित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हो सका । इस दिशा में आज भी अध्ययन-अनुसन्धान ज़ारी है ।

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण एवं विकास में अनेक संस्थाओं एवं व्यक्तियों का योगदान हुआ है । पारिभाषिक शब्दावली निर्माण आयोग, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वैज्ञानिक शब्दावली बोर्ड, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग जैसी संस्थाओं और डॉ. रघुवीर, डॉ. भोलानाथ तिवारी, श्री हरिबाबु कंसल जैसे विशेषज्ञों के नाम इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं । यह तो सच है कि पारिभाषिकशब्दावली का निर्माण कार्य आज भी सुचारु ढंग से चल रहा है । सूचना प्रौद्योगिकी और जनसंचार माध्यम जैसे क्षेत्रों में दिन-व-दिन नई परिकल्पनाओं का रुपायन हो रहा है । इसलिए नए-नए पारिभाषिक शब्दों का निर्माण भी आवश्यक हो जाता है ।

पारिभाषिक शब्दावली का मुख्य संबन्ध जन जीवन से है । हर व्यक्ति को किसी न किसी रूप में रोज़ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है । भाषाई उन्नति के लिए भी पारिभाषिक शब्दावली का विकास आवश्यक है । इन शब्दों के प्रचार-प्रसार से ज़ान-विज़ान का प्रचार आसान हो जाएगा और आम जनता भी उससे लाभान्वित हो जाएगी ।

अंत में मेरे इस शोध अध्ययन के पश्चात् जो विचार बिन्दुएँ उभर कर आयी हैं, वे इस प्रकार हैं –

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की विशेष नीति पारिभाषिक शब्दावली आयोग ने अपनाई है और उस नीति को आधार बनाकर अब तक विकसित पारिभाषिक शब्दावली स्तरीय मानी जा सकती है । अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के स्थान पर अंग्रेज़ी पदावली को अपनाने की रीति ज़ान-विज़ान के विभिन्न शाखाओं में देखी जा सकती है । संस्कृत के शब्दों के साथ साथ हिन्दी के अपने शब्द और उर्दु, फारसी जैसी अन्य भाषाओं के शब्दों को भी पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में सहायक सिद्ध हुआ है ।

हिन्दी पारिभाषिक शब्दों के साथ-साथ अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग भी आजकल चल रहा है । कुछ अंग्रेज़ी शब्द लोकप्रियता की दृष्टि से हिन्दी शब्दों से काफी आगे हैं, अतः एकदम अंग्रेज़ी शब्दों को छोड़ना आसान कार्य नहीं है ।

सूचना प्रौद्योगिकी और जन संचार माध्यम के क्षेत्रों में ज़्यादातर अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का प्रयोग चल रहा है । ये दोनों क्षेत्र किसी देश विशेष तक सीमित भी नहीं है । अतः अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग लिप्यंतरण या लिप्यंकन करके हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली में शामिल की गई है । इन दोनों क्षेत्रों में अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्दों के बराबर हिन्दी पारिभाषिक शब्दों का

निर्माण तो अवश्य हुआ है, लेकिन लोकप्रियता की दृष्टि से और अंतर्राष्ट्रीय शब्द होने के कारण उन शब्दों के स्थान पर अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग अधिकतर चल रहा है । हिन्दी हमारी राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा है । देश की अस्मिता को बरकरार रखने के लिए हिन्दी पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग सार्वत्रिक बनाने का प्रयास चल रहा है । व्यावहारिक दृष्टि से कहीं कहीं छूट देनी पडती है और यह छूट हिन्दी की उपेक्षा के लिए नहीं बल्कि हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास के लिए ही अपनाई जाती है ।

संक्षेप में हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास अबतक जो हुआ है वह स्तरीय है और उसके निर्माण के लिए जो नीति अपनाई गई वह तो सही मानी जा सकती है । आज सूचना प्रौद्योगिकी के बढते विकास के कारण फिर से अंग्रेज़ी का वर्चस्व बढ रहा है । अंग्रेज़ी में काम करने के सरल साधन, कंप्यूटर जैसे मशीनों के प्रयोग से हिन्दी जानने वाले कर्मचारी भी अंग्रेज़ी में काम करते हैं । क्योंकि कंप्यूटर में अंग्रेज़ी कार्य करना अधिक सरल एवं सुगम है । इसका आविष्कार अंग्रेज़ी प्रदेशों में हुआ है । फिर भी भाषा वैज्ञानिकों की सहायता से आज एक संगणकीय भाषा के रूप में हिन्दी का विकास हुआ है ।

आज अंग्रेज़ी के बराबर कंप्यूटर संबन्धी सारी भाषापरक सुविधाएँ हिन्दी में भी उपलब्ध है । लेकिन उसके व्यापक प्रचार की आवश्यकता है । उसके साथ ही साथ आम जनता तक हिन्दी के माध्यम से कंप्यूटर में कार्य करने केलिए उचित प्रशिक्षण देना भी आवश्यक है । सरकारी कामकाज में अंग्रेज़ी को ही प्रधानता मिल रही है । यह अंग्रेज़ी मानसिकता के कारण है, अंग्रेज़ी मानसिकता को बदलना की ज़रूरत भी है । संगणकीय भाषा के रूप में हिन्दी का विकास जो हुआ है उसे व्यावहारिक धरातल पर लाना भी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. डॉ. अब्दुल कलाम : भारत 2020 नवनिर्माण की रूपरेखा
राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट
दिल्ली - ६
संस्करण : २००४

2. डॉ. अनुज प्रताप सिंह : अनुवाद, सिद्धांत एवं व्यवहार
ग्रंथलोक (प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रता)
शाहंदर, दिल्ली - ३२
संस्करण : २००८

3. अशोकमालिक : सूचना प्रौद्योगिकी एवं पत्रकारिता

4. डॉ. प. प. आंडाल : प्रशासनिक हिन्दी प्रयोग और संभावनाएँ
वाणी प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली
संस्करण : २००६

5. डॉ. आरिफ नज़ीर (रीडर) : हिन्दी में अनुवाद की भूमिका और द्विभाषी
कंप्यूटीकरण
अनंग प्रकाशन
नई दिल्ली – ११० ०५३
संस्करण : २००५

6. उमेश सोनी : कंप्यूटर शिक्षा
गोविन्द प्रकाशन
जयपुर

7. डी. डी. ओझा : दूरसंचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी
सत्य प्रकाशन
नई दिल्ली – ११० ००६
संस्करण : २००१

8. कमल कुमार बोस : प्रयोजन मूलक हिन्दी
प्रकाशक – बी.के. तनेजा
क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी
नई दिल्ली – ११० ०१५
संस्करण : २०००

9. डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी : अनुवाद विज्ञान की भूमिका
राजकमल प्रकाशन
नई दिल्ली
संस्करण : २००८

10. डॉ. कैलाश नाथ पाण्डेय : प्रयोजन मूलक हिन्दी की नई भूमिका
लोकभारती प्रकाशन
इलाहाबाद - २
संस्करण : २००९

11. डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया : प्रयोजन मूलक कामकाजी हिन्दी
तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली - २
संस्करण : १९९६

12. गणपति भोट्ल राम नारायण: कामकाजी हिन्दी शब्द संरचना (अर्थ-व्यंजना, अनुवाद, राष्ट्रीय ग्राह्यता एवं व्यावहारिक प्रयोग की दृष्टि से)
जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद - २११ ००३
संस्करण : २००८

13. डॉ. गार्गी गुप्त : पारिभाषिक शब्दावली की विकास यात्रा
प्रकाशक – भारतीय अनुवाद परिषद्
नई दिल्ली - ११० ००१
संस्करण : १९९२

14. गोपाल शर्मा : सामाजिक विज्ञानों की पारिभाषिक शब्दावली का समीक्षात्मक अध्ययन
प्रकाशक – एस. चन्द एण्ड कंपनी
संस्करण : १९६८

15. गोपीनाथ श्रीवास्तव : सामयिक प्रशासनिक कार्यविधि
सामायिक प्रकाशन
नई दिल्ली – ११० ००२
संस्करण : १९९२

16. वी. पी. गोयल : इन्टरनेट (जानें और सीखें)
मंगलदी पब्लिकेशन्स
जयपुर
संस्करण : २००४

17. जगदीश चतुर्वेदी : सूचना समाज
अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
नई दिल्ली – ११० ००२
संस्करण : २०००

18. डॉ. जितेंद्र वत्स : हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम
निर्मल पब्लिकेशन
शाहदरा, दिल्ली
संस्करण : २००८

19. डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश': अनुवाद और अनुप्रयोग
आदिरा प्रकाशन
दहरादून, उत्तरांजल
संस्करण : २००६

20. देवेन्द्रनाथ शर्मा : राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्याएँ और समाधान

21. डॉ. दंगल झालटे : प्रयोजन मूलक हिन्दी सिद्धांत और प्रयोग
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली – ११० ००२
संस्करण : १९९६

22. डॉ. नसीम ए. आज़ाद : प्रयोजन मूलक हिन्दी
संजय प्रकाशन, दरियागंज
नई दिल्ली – ११० ००२

23. डॉ. सु. नागलक्ष्मी : प्रयोजन मूलक हिन्दी प्रासंगिकता एवं परिदृश्य
प्रकाशक : कुजबिहारी पचौरी
जवाहर पुस्तकालय
मथुरा – २८१ ००१
संस्करण : २००८

24. डॉ. नारायण दत्त पालीवाल: विधि कार्य निर्देशिका
प्रवीण प्रकाशन
नई दिल्ली

25. नीलम कपूर : प्रयोजन मूलक हिन्दी
श्री नटराज प्रकाशन
दिल्ली – ११० ०५३
संस्करण : २००७

26. पृथ्वीराज पाण्डेय : जनसंचार : दृश्य परिदृश्य
(पत्रकारिता : विषयक जनसंचार की प्रतिनिधि
कृति)
उमेश प्रकाशन, इलाहाबाद
संस्करण : १९९५

27. डॉ. प्रेमचंद पातंजलि : व्यावसायिक हिन्दी
वाणी प्रकाशन
नई दिल्ली – ११० ००२
संस्करण : १९९७

28. डॉ. बलराज सिंह सिरोही : संघीय राजभाषा के सन्दर्भ में पारिभाषिक शब्दावली
के निर्माण की समस्याएँ
वाणी प्रकाशन, दरियागंज
नई दिल्ली – ११० ००२
संस्करण : १९८७

29. डॉ. बलवीर कैन्दर : संचार से जनसंचार और जनसंपर्क तक
के. के. पब्लिकर्स
दरियागंज, नई दिल्ली
संस्करण : २००६

30. डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी : प्रयोजन मूलक हिन्दी
संजय बुक सेन्टर
के, ३८/६ गेलघर, वाराणसी
संस्करण : १९९९

31. प्रोफेसर भगवान देव पाण्डेय: कंप्यूटर और मीडिया
डॉ. योगेश कुमार पाण्डेय
सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली – ११० ०५४
संस्करण : २००७

32. डॉ. भोलानाथ तिवारी : पारिभाषिक शब्दावली : कुछ समस्याएँ
प्रकाशक शब्दकार
तुर्कमान गेट, दिल्ली - ११० ००६
संस्करण : १९७८

33. डॉ. मलिक मोहम्मद : राजभाषा हिन्दी - विकास के विविध आयाम
प्रवीण प्रकाशन
महरौली, नई दिल्ली
संस्करण : १९८६

34. डॉ. महेन्द्र सिंह राणा : प्रयोजन मूलक हिन्दी के आधुनिक आयाम
(Modern Dimension of Functional Hindi)
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान मानव संसाधन विकास
मंत्रालय, भारत सरकार
हर्ष प्रकाशन
संस्करण : २००३

35. डॉ. माधव सोनटक्के : प्रयोजन मूलक हिन्दी
(भाषिक संरचना व्याकरण एवं अनुवाद)
लोकभारती प्रकाशन
महात्मागाँधी मार्ग, इलाहाबाद
संस्करण : २००३

36. डॉ. मायासिंह : प्रयोजन मूलक हिन्दी के विविध आयाम
डॉ. सिद्धेश्वर काश्यप
जयभारती प्रकाशन,
मायाप्रेस रोड, इलाहाबाद
संस्करण : २०१०

37. डॉ. मुकेश अग्रवाल (रीडर): प्रयोजन मूलक हिन्दी
के. एल. पचौरी प्रकाशन
गज़ियाबाद – २०१ १०२
संस्करण : २००५

38. डॉ. रमेश 'तरुण' : प्रयोजन मूलक हिन्दी
(कामकाजी हिन्दी)
नमन प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली – ११० ००२
संस्करण : २००५

39. रमेश चन्द्र : राजभाषा हिन्दी और तकनीकी अनुवाद
कल्याण शिक्षा परिषद
दरियागंज, नई दिल्ली – ११० ००२
संस्करण : २००३

40. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव : व्यावहारिक हिन्दी
डॉ. भोलानाथ तिवारी
वाणी प्रकाशन,
दरियागंज, नई दिल्ली
संस्करण : १९९२

41. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव : हिन्दी भाषा - संरचना और प्रयोग
डॉ. भोलानाथ तिवारी
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस
नई दिल्ली - ११० ००२
संस्करण : १९८३

42. रवीन्द्र शर्मा : इंटरनेट और वेब पेज डिज़ाइनिंग
(Internet and Web page Designing)
राज पब्लिशिंग हाऊस जयपुर

43. राम बंसल विज्ञाचार्य : कंप्यूटर परिचालन तत्व
(Elements of Computer Operation)
सत्साहित्य प्रकाशन
चावडी बाज़ार, दिल्ली
संस्करण : २००३

44. डॉ. विनोद कुमार प्रसाद : भाषा और प्रौद्योगिकी
वाणी प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली
संस्करण : १९९९

45. डॉ. विनोद गोदरे : प्रयोजन मूलक हिन्दी
वाणी प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली - २
संस्करण : २००४

46. डॉ. शहिद कमर : प्रयोजन मूलक हिन्दी दशा और दिशा
अनंग प्रकाशन
उत्तरी घोण्डा, दिल्ली - ५३
संस्करण : २००५

47. सन्तोष खन्ना : अनुवाद के नये परिप्रेक्ष्य
विधि भारती परिषद
शालीमार बाग, नई दिल्ली - ८८
संस्करण : २००८

48. डॉ. सुनील जोगी : प्रयोजन मूलक एवं व्याकरणिक हिन्दी
आधुनिक प्रकाशन, मौजपुर, दिल्ली - ११० ०५३
संस्करण : २००१

49. सुमित मोहन : मीडिया लेखन
वाणी प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली - ११० ००२
संस्करण : २००५

50. डॉ. सुरेश अग्रवाल : जनसंचार माध्यम
नमन प्रकाशन
अन्सारी रोड, नई दिल्ली - २
संस्करण : २००५

51. डॉ. सुरेश कुमार : अनुवाद सिद्धांत की रुपरेखा
वाणी प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली - २
संस्करण : १९९५

52. सुरेशकांत (प्रबन्धक : राजभाषा) : बैंकों में हिन्दी का प्रयोग
भारतीय रिज़र्व बैंक
कानपुर

53. प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंह : प्रयोजनपरक हिन्दी
सुलभ प्रकाशन
अशोक मार्ग, लखनऊ
संस्करण : १९९४

54. प्रो. सैयद रहमत्तुल्ला : भाषा के विविध रुप और अनुवाद
विद्यानिधि द्वारा प्रकाशित
दरियागंज, नई दिल्ली - २
संस्करण : २००५

55. डॉ. हरिमोहन : राजभाषा हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की दिशाएँ
तक्षशिला प्रकाशन
दरियागंज, नई दिल्ली - २
संस्करण : १९८८

56. सूचना प्रौद्योगिकी शब्द-संग्रह – कंप्यूटरीकृत डाटाबेस
प्रकाशक : वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

57. नाट्यशास्त्र – फिल्म एवं टेलिविज़न शब्दावली
प्रकाशक : वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

पत्र-पत्रिकाएँ

1. कयर स्वर्णिम रेशा : 2009 - 2010
राजभाषा गृह पत्रिका
कयर बोर्ड, भारत सरकार

2. भाषा (द्वैमासिक) : मई - जून 2002
संपादकीय कार्यालय
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

3. भाषा : मार्च - जून 1983

4.	मंगला	:	जुलाई - सितंबर 2009 तिमाही हिन्दी गृह पत्रिका कार्पोरेशन बैंक
5.	नव निकष	:	मई 2011
6.	नव निकष	:	जुलाई 2010 १०१, गाँधी ग्राम जी टी रोड कानपूर
7.	राजभाषा भारती	:	जुलाई - सितंबर 2009 राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

शब्दकोश

1.	आचार्य रामचन्द्र वर्मा	:	प्रामाणिक हिन्दी कोश लोकभारती प्रकाशन तृतीय संशोधित संस्करण - १९९६
2.	डॉ. नगेन्द्र	:	मानविकी पारिभाषिक कोश राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण - १९६८
3.	आ. बदरीप्रसाद साकरिया: प्रो. भूपतिराम साकरिया		राजस्थानी हिन्दी शब्द कोश (तृतीय खंड)
4.	डॉ. राजेश्वर गंगवार	:	कंप्यूटर कोश (कंप्यूटर शब्दावली की सरल हिन्दी में व्याख्या) किताबघर प्रकाशन प्रथम संस्करण - २००६

5. वामन शिवराम आप्टे : संस्कृत हिन्दी कोश
मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स
संस्करण - १९६६-१९६९

6. डॉ. हरदेवबाहरी : बृहत शिक्षार्थी (अंग्रेज़ी-हिन्दी शब्दकोश)
राजपाल प्रकाशन
संस्करण - २००८

7. डॉ. हरदेवबाहरी : शिक्षार्थी (हिन्दी -अंग्रेज़ी शब्दकोश)
राजपाल एण्ड सन्ज़
सोलहवाँ संस्करण - १९९७

8. डॉ. हरदेवबाहरी : Dictionary of Official Language
(English-Hindi)
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

Website :

www.rajbhasha.com

www.Indian Languages.com

www.dictionary.com

www.cstt.nic.in

www.google search